सर्व-देव प्रतिष्ठा

विष्णु याग समन्विता

धरणीधर शास्त्री

श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर Ph.:2425505

विष्णुयाग समन्विता

(भाषा विधान संहिता)

स्व. पं. धरणीधर शास्त्री काव्यतीर्थ

अजमेर (राज.)

प्रकाशक

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर © 2425505

मूल्य : - 100/-

अनन्त श्री विभूषित जगदगुरू श्री निम्बर्काचार्य 'श्रीजी'
श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य महाराज

अध्यक्ष अ.भा. श्री निम्बार्काचार्य पीठ
सलेमाबाद (किशनगढ़) राजस्थान की
शुभाशीर्वादात्मक सम्मति

विद्वद्वर पंडित श्री धरणीधरजी शास्त्री काव्यतीर्थ
अवकाश प्राप्त ह. मे. हाई स्कूल, अजमेर
द्वारा निर्मित 'सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा' तथा सरल नव्यज्योतिष्यसार' दोनों पुस्तकें देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इन ग्रन्थों को देखने से पण्डितजी की कर्मकाण्ड और ज्योतिष में भी गवेषणा पूर्वक विद्वता परिलक्षित होती है। कर्मकाण्ड में नई-नई खोज वाली इनकी बनाई हुई सरल विवाह पद्धति, सरल अन्त्येष्टि कर्म पद्धति, सरल प्रेत मंजरी, नित्य कर्मपाठ संग्रह आदि से गाँवों में ही नहीं अपितु नगरों के पण्डितों को भी बहुत लाभ होता रहा है।

आप संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के अच्छे कवि भी हैं। लघु पाराशरी और मध्य पाराशरी पर भी आपका हिन्दी पद्यानुवाद अभूतपूर्व हुआ है। सत्यनारायण की कथा को भी हिन्दी दोहा चौपाइयों में लिखकर रामायणवत् प्रचारकर्ता के रूप में ये एक कवि भी हैं।

वास्तव में पण्डितजी केवल नाम-मात्र के ही शास्त्री नहीं, अपितु अनेक शास्त्रों का मन्थन करके पन्द्रह सोलह ग्रन्थों का सरल निर्माण करके असंख्य छात्रों पर उपकार करने में सफल हुए हैं।

हम पण्डितजी के इस लोकहित कार्य की उत्तरोत्तर उन्नति की आकांक्षा कररते हुए भगवान् श्री सर्वेश्वर से इनकी मंगल कामना करते हैं।

श्री चरणों की आज्ञानुसार
ले. गं. गोविन्ददास 'सन्त'
प्रचार मंत्री
प्रचार-विभाग श्री निम्बार्काचार्य पीठ
सलेमाबाद (राज.)

श्रावणी
२०२८ वि.

।।श्री।।

प्रथमावृत्ति की भूमिका

कर्म काण्ड का विषय बड़ा ही महान है इसके पूर्ण ज्ञाता विद्वान अपनी विद्या दूसरों को सिखाने में आनाकानी करते हैं। तब वे ब्राह्मण बालक निराश हो जाते हैं। उन लोगों के उपकारार्थ मैनें इस विषय को भी हाथ में लिया। सबसे पहले, सरल विवाह पद्धति बनाई। तदन्तर यज्ञोपवती पद्धति, सरल ग्रहशान्ति, सरल वाशिष्ठी हवन पद्धति, अन्तेष्टि पद्धति, एकादशाह द्वादशाह पद्धति, सरल नारायणबलि भी बनाई। जिनसे छात्रों और गांवों के पण्डितों को बड़ा लाभ हुआ और इनकी कई-कई आवृत्तियां छप भी गई।

गृह प्रतिष्ठा तो हमने वाषिष्ठी हवन पद्धति तथा सरल गृहशान्ति में भी छपवा रखी है। अब सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा भी सांगोपांग आप विद्वान लोगों के कर कमलों में अर्पित की जा रही है।

अब रही मण्डलों की बात तो साधारण मण्डल तो सभी तामड़ायती पण्डित बना लेते हैं। परन्तु उनमें यथोचित स्थानों में रंग भर कर बनाने से उसमें सुन्दरता आ जाती है। अतः इस पद्धति में वह कमी भी पूरी कर दी गई है।

इस पुस्तक में आरम्भ में रंगीन मण्डलों का निर्माण बतलाकर यज्ञ मण्डपं तथा कुण्ड बनाना भी सविस्तार बता दिया है। पीछे जलयात्रा पूर्वक मण्डल पूजा के साथ साथ देव प्रतिष्ठा के सारे अंगों का विवेचन भली भांति कर दिया गया ।

यद्धपि कर्म काण्ड के भूतपूर्व प्रकाण्ड विद्वान पं. चतुर्थीलालजी

ने तथा कर्म काण्ड के मर्मज्ञ आचार्यवर्य श्री दौलतरामजी ने भी बृहदाकार में प्रतिष्ठा पद्धतियें छपवा रखी है पर कम संस्कृत जानने वाले विद्यार्थी उनसे विशेष लाभ नहीं उठा सकते। इसलिये मैंने हिन्दी विधान सहित इस सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा को बनाया है। आशा है मेरी बनाई अन्य दो सरलतम कर्मकाण्डीय पुस्तकों के जैसा इसका भी प्रचार अवश्य हो जायेगा। क्योंकि इनकी रचना समयोपयोगी तथा सरल प्रकारेण हुई।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन–जिन प्रसिद्ध विद्वानों ने मुझे मौखिक परामर्श देकर और पुस्तकें देखने को देकर सहायता दी है उनकी कृपा का मैं पूर्ण आभारी हूं। अन्त में परम पिता से प्रार्थना करता हूं कि मुझ पर किसी प्रकार ब्राह्मण वर्ग की कृपा बनी रहे। जिससे आगे भी पुस्तक निर्माण द्वारा छात्रों का कुछ उपकार कर सकूं।

भगवान् का भी यही वाक्य है कि 'विप्रप्रसादाद् धरणीधरोहम्' अतः मैं धरणीधर नामा ब्राह्मण भी भगवद्वाक्य को अपने पर लेकर इस सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा की रचना करने को उद्यत हुआ हूं। भगवती जगदम्बा मुझे सद्बुद्धि प्रदान करती रहे। पुनन्तु मां ब्राह्मण पादरणेवः।

गंज मौहल्ला,
लक्ष्मीकान्त मन्दिर गली
शिवरात्री २०३०

विद्वानों का कृपापात्र
धरणीधर शर्मा आसोपा

सरल सर्वदेवप्रतिष्ठा की विषय-सूची

मंडल कुण्ड निर्माणम्

द्वादश गणेशमण्डलं द्विधा

रक्त १	पीत २	हरित ३
पीत ४	रक्त ५	पीत ६
हरित ७	पीत ८	हरित ९
कृष्ण १०	रक्त ११	पीत १२

अन्यत्र

पीत १२	रक्त ५	पीत ४
रक्त ११	पीत ६	हरित ३
कृष्ण १०	हरित ७	पीत २
हरित ९	पीत ८	रक्त १

गायत्री होमे

षोडशमातृका द्विधा मंडल अजमेर प्रान्त प्रसिद्ध

पूर्व

उत्तर					दक्षिण
	१६	१२	८	४	
	१५	११	७	३	दक्षिण गौरी गणेश
उत्तर	१४	१०	६	२	
	१३	९	५	१	

पश्चिम

१६	१२	८	४
१५	११	७	३
१४	१०	६	२
१३	९	५	१

अखण्डज्योति मथुरा

६ ४ योगिनीमण्डलम् (समचौरस)

१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७
२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८
३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९
४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	६०
५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	६१
६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	६२
७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६३
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४

४९ क्षेत्रपालचक्रम [समचौरस]

कृष्ण	रक्त २४	हरा २३	श्वेत २२	हरा २१	रक्त २०	कृष्ण
रक्त २	पीला २५	रक्त ४०	हरा ३९	रक्त ३८	पीला ३७	रक्त १८
हरा ३	रक्त २६	पीला ४१	रक्त ४८	पीला ४७	रक्त ३६	हरा १७
श्वेत ४	हरा २७	रक्त ४२	श्वेत ४९	रक्त ४६	हरा ३५	श्वेत १६
हरा ५	रक्त २८	पीला ४३	रक्त ४४	पीला ४५	रक्त ३४	हरा १५
रक्त ६	पीला २९	रक्त ३०	हरा ३१	रक्त ३२	पीला ३३	रक्त १४
कृष्ण	रक्त ८	हरा ९	श्वेत १०	हरा ११	रक्त १२	कृष्ण

८१ अथ कोष्ठात्मक गृहावास्तु मण्डलम्

(देवप्रतिष्ठा में नहीं)

चतुःषष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम्

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर फोन: 0145-2425505

॥ सर्वतोभद्रमण्डलं सरजस्कमिदम् ॥

॥ अथ चतुर्लिंतो भद्रे ३२ देवता स्थापनम्॥

नवग्रह मण्डल चित्र

॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम ॥

(दुर्गा पूजा प्रतिष्ठा समये)
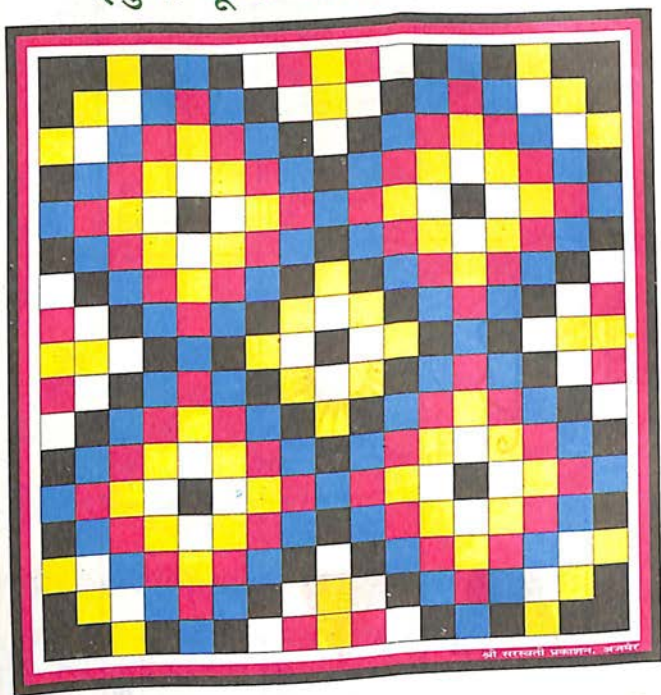
श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर फोन: 0145-2425505

॥ अथ गणपती भद्रमण्डलम् ॥

एकलिंगतोभद्रचक्रम्
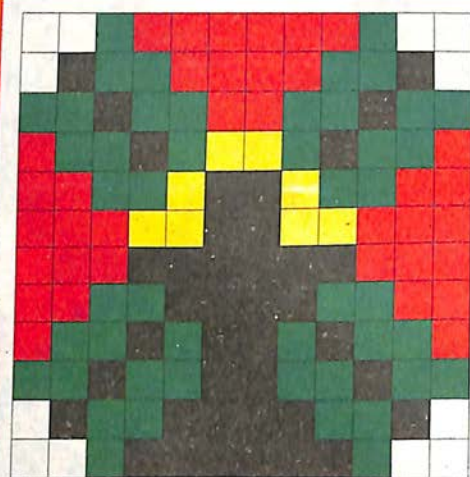
कुण्ड बनाने का विधान

यदि 5 कुण्ड बनावें तो आहूति संख्या शीघ्र ही जावे। एतदर्थ कुण्ड बनाना लिखते हैं।

कुण्ड	आकार	योनि	होतृमुख	ब्रह्मा
1 पूर्व में	चतुरस्त्र	दक्षिण	उत्तर	पूर्व
2 दक्षिणे	अर्द्धचन्द्र	दक्षिण	उत्तर	पूर्व
3 पश्चिमे	गोल	पश्चिम	पूर्व	दक्षिण
4 उत्तरे	पद्म	पश्चिम	पूर्व	दक्षिण
मध्ये	चोकोर	पश्चिम	पूर्व	दक्षिण

मध्य कुण्ड एवं उनका ब्रह्मा ही प्रधान होते है।

कुण्ड स्वरूपम्
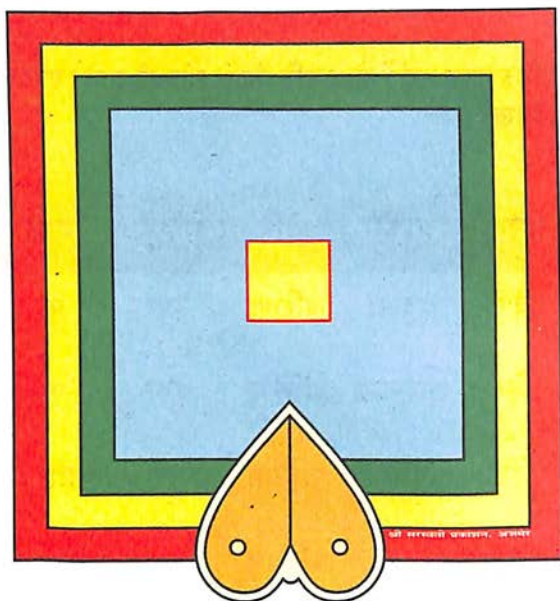
कुण्ड का चित्र ऊपर अंकित है यानी 12 अंगुल ऊंची, 12 अंगुल लम्बी, 8 अंगुल चौड़ीलाल वर्ण। ऊपर की साढ़े 4 अंगुल चौड़ी, 4 अंगुल चौड़ी श्वेत वर्ण उसके तीन अंगुल ऊंची 3 अंगुल चौड़ी लाल वर्ण तथा फिर नीचे को 2 अंगुल ऊंची 2 अंगुल चौड़ी श्याम वर्ण और मध्य में नाभि का चिन्ह बनाऐं।

कुण्डसिद्धि-हस्तादिमानम्

ह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१६
अं.	२४	३४	४१	४८	५३	५८	६३	६७	७२	७५	९६
य.	०	०	५	०	५	६	४	७	०	७	०
यू.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

त्रिकोणकुण्डस्वरूपम्

वृत्तकुण्डस्वरूपम्

समभुज-षडस्त्र-कुण्डस्वरूपम्
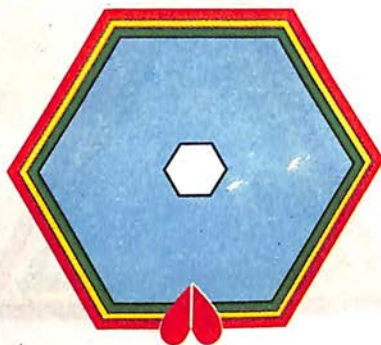
अथ

सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा

मंगलाचरणाम्

गणराजं, गिरां देवीं, विष्टस्श्रवसं विभुम्॥
महेशं हरिदश्वं च प्रणम्य श्रद्धया पुनः॥१॥
दाधीच वंश जातेन धरणीधर शर्मणा॥
सर्वदेवप्रतिष्ठेयं सरला लिख्यते मया॥२॥

मंडपार्थ भूशुद्धि

पहले किसी विद्वान् ज्योतिषी से देव प्रतिष्ठा के मुहूर्त दिखलावे। सर्वप्रथम यज्ञ स्थल के लिये भूमि पूजनादि करके उस स्थान पर यज्ञ मण्डप बनवा लेना चाहिये। एतदर्थ सपत्नीक यजमान अपने गुरु या कर्मकाण्ड विशारद आचार्य को लेकर उस स्थान में पहुंचे, जो भूमि शुद्ध हो। पहले 'सुमुखश्चैक दन्तश्च' इत्यादि गणेशस्मरण के अनन्तर संकल्प करावे। उसमें-

मम इह जन्मनि जन्मातरे वा कृतसमस्त पापक्षयार्थ अमुकदेव प्रासाद प्रतिष्ठा यज्ञोपयोगिनां करिष्यमाणमण्डपादीनां निर्विघ्नतया सिद्धये गणपतिपूजनम् आचार्य वरणं च करिष्ये।

फिर गणपति पूजा विधि पूर्वक करे। थाली में मातृका तथा नवग्रह पूजा भी करा दे। फिर आचार्य के चरण धोकर पाद-पूजन करके, मस्तक पर तिलक अक्षतादि से पूजा करे-

अस्मिन् क्रियमाणदेव-प्रतिष्ठाकर्मणि अमुकशर्माणं आचार्यत्वेन त्वामहं वृणोमि।

आचार्य 'वृतोऽस्मि' इति प्रतिवचन कहे।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
तया च श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

आचार्य के मोली बाँधे, पंचोपचार से पूजा करे-

फिर-

यजमान गुरु आचार्य की वन्दना करें। यथा-

आचार्यो हि यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत।।

अब आचार्य मण्डप निर्माण के लिए भूमि आवाहन, पूजन, शोधन कार्य करे। तथा भूमि को स्पर्श करके बोले-

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथवींद्द ᳪहपृथ्वीं मा हिᳪ सीः। ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी मधुदुघे सुपेशसा।।१।। द्यावापृथवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा।।२।। ॐ मही द्यौः पृथिवीं च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् पिपृतान्नो भूरीमभि।।३।। आगच्छ सर्व-कल्याणि वसुधे लोकधारिणी। उद्धतासि वराहेण सशैलवनकानना।।४।। रत्नाकरे विष्णुना

त्वं धृता बाराहरूपिणा। आगच्छ वरदे धात्रि यज्ञेऽस्मिन् शुभ-दायिनी ।।५।।

इससे आवाहन करके आगे के मंत्र में प्रतिष्ठापना करे-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ४ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामों ३ म्प्रतिष्ठ ।।

भूमिर्भूमिमिव प्रागान्माता मातरमष्यगात्।
भूयाम पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स नश्यतु ।।१।।

इससे भूमि को प्रणाम करे-

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथर्वी कूर्मानंतदेवताभ्यो नमः

इस मंत्र से षोडशोपचार से पूजाकर हाथ जोड़ प्रार्थना करें-

शेषमूर्ध्नि स्थितां रम्यां नानासुख प्रदायिनीम्।
विश्वधात्रीं महाभागाँ विश्वस्थ जननी पराम् ।।
यज्ञभागं प्रतीक्षस्व सुखार्थ प्रणमाम्यहम्।
तवोपरि करिष्यामि मण्डपं सुमनोहरम् ।।
क्षंतव्यं च त्वया देबि सानुकूला मखे भव।
निर्विघ्नं मम कर्मेदं यथास्यात् त्वं तथा कुरू ।।

इससे भूमि की प्रार्थना करके यथाविधि ताम्रपात्र में पंच गव्य बनाकर उसको दस बार ॐ मन्त्र से मन्त्रित करके हरित कुशाओं से भूमि का प्रोक्षण करें तब ये मन्त्र बोलें।

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत४ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णुवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो.

मयूखै स्वाहा ।।१।। ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्समूढमस्य पा० सुरे स्वाहा ।।२।। ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मंतः सदमित्वा हवामहे ।।३।। ॐ शन्नो मित्रःशं वरुणः शन्नो भवत्त्वर्यमा। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः ।।४।। ॐ शन्न इन्द्राग्नीं भवतामवोभिः शन्न इन्द्रा वरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रा पूषणा वाजसातो शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः।

ॐ नृसिंह अग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा।

ॐ देवस्यत्वा सवितः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याँ पूष्णोहस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ये नाभिषिंचामि ।।

पश्चात् श्वेत सरसों सर्वत्र फेंकते समय बोले-

भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र त्रिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु विष्णुयागं करोम्यहम् ।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

पीछे पचगव्य के छीटे देवें। फिर ताम्रपात्र में गंध दूर्वा फल पुष्प युक्त जल से उत्तर की तरफ मुँह करके घुटने टेककर अर्घ देके बोलें-

वसुधे पूजितासि त्वं विष्णुना शंकरेण च।
पार्वत्त्या चैवं गायत्र्या स्कन्द वैश्रवणादिभि ।।

मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्व शुभलक्षणम्।
गृहाणार्ध्य मया दत्तं प्रसन्ना भव सर्वदा।।

फिर प्रार्थना करें-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छा नमः शर्म सप्रथा।

पहले वास्तुपूजा भी नाम मन्त्र से कर ले। पीछे भूशुद्धि किये बाद कारीगरों से मण्डप बनवावे।

मंडप निर्माण

प्रतिष्ठादि बड़े कार्यो का मण्डप बना लेना भी कठिन कार्य है। सबसे प्रथम यही लिख रहे हैं।

मण्डप यों तो बड़े या छोटे भी हो सकते है पर १६ सोलह हाथ का समचौरस चबूतरे जैसा बनाना अच्छा होता है। ऊपर छाया हुआ ही परन्तु मध्य में चौकोर गुम्बज जैसा बनावें। चबूतरे की ऊँचाई एक हाथ की चाहिये। द्वार चारों दिशाओं में बनावें परन्तु प्रवेश द्वार पश्चिम का होता है।

मण्डप के चारों तरफ जमीन पर जौ बोने के लिए पत्थर के टुकड़ों से घेरा भी बनाना चाहिये।

मण्डप के चारों ओर बारह(१२) स्तम्भ और मध्य भाग में चार स्तम्भ बनाये जावें।

वे इस प्रकार नाम के हों कि अग्निकोण से वायव्य कोण तक के चारों स्तम्भ एक सीध में दिखते रहे।

इसी प्रकार मध्य के चारों स्तम्भ चारों के भी सीध में दिखते रहें। अब १६ खम्भे गाड़ने की विधि कहते हैं-

मण्डप को दक्षिण उत्तर, पश्चिम पूर्व के तीन भाग करके सूत्र देवे। जहाँ-जहाँ सूत्र की समाप्ति और जहाँ-जहाँ संधि हो वहाँ-वहाँ पर अग्निकोण से गाड़े। पहले बारह खम्भे बाहर के गाड़े पाँच-पाँच हाथ के और चूड़ के सहित दो-दो खम्भे प्रति दिशा में हों, चारों कानों में ४ इस प्रकार १२ खम्भे हुए। पाँचवाँ हिस्सा एक हाथ हुआ उसे जमीन में गाड़ना। पीछे ४ खम्भे चूड़ के सहित आठ-आठ हाथों के आठ अंगुल चौड़ा, बीच की वेदी के अग्निकोण से उसका पाँचवा हिस्सा एक हाथ १४ अंगुल सात यव १॥ यूका प्रदक्षिण क्रम से जमीन में गाड़ने चाहिए। पर फीते से नापकर तीन हिस्से करने में सुविधा रहती है।

अव १६ खम्भों पर १६ बल्लियाँ देना। उन्हें छिद्र वाली चूड़ में पहिनावें। पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दो-दो लकड़ी याने आठ लकड़ी और दो कोण में चार लकड़ी ये सब २८ लकड़िया हुई और मध्य में शिखर लट्टू काष्ठ का बनाना।

उसमें चारों कोनों पर ४ लकड़ी लट्टू में से खम्भ तक देना। ऐसे मिलाकर ३२ लकड़ियाँ हुई और स्तम्भ से लेकर ४८ हुई।

मध्य भाग में शिखर बनाकर कोमल बाँस व चटाई या फूस आदि से चारों द्वारों को छोड़कर छा देवे तथा चारों तरफ टाटी से ढक दो। वायु रक्षार्थ चार द्वार की टोटी पृथक से लगावे और १६ खम्भों में अच्छे-अच्छे वस्त्र लपेट देवें। जैसा आगे लिखेंगे।

तोरणादि

पूर्वादि दिशाओं के तोरण द्वार कहते हैं

पूर्व में बड़ या पीपल का। दक्षिण में गूलर का। पश्चिम में पीपल या पाकर का उत्तर में पाकर या बड़ का। सब तरह की लकड़ी न मिले तो एक वृक्ष के चारों द्वार बनावें।

शिवयाग में त्रिशूल चारों दिशाओं में। कालीयाग में त्रिशूल विष्णुयाग में शंख चक्र गदा पद्म पूर्वादि क्रम में लगावें।

मण्डप के चारों ओर ध्वजा पताका भी लगावें। यथा त्रिकोणाकार २ हाथ चौड़ी ५ हाथ लम्बी ध्वजा दिशाओं के वाहन व रंग से युक्त हो। उसे दस हाथ के बांस के सिर पर लगावे। पीला रंग पूर्व में। लाल रंग अग्निकोण में। काला रंग दक्षिण में। नीला रंग नैकृत्य में। सफेद रंग ईशान में। धूम्र वा हरा रंग वायव्य में। सफेद व हरा रंग उत्तर में। सफेद रंग ईशान में। सफेद वा लाल रंग ईशान पूर्व के मध्य में। पीत वा काली ध्वजा निर्ऋति वरुण के मध्य में लगावें।

अब जो दिशाओं के स्वामी हैं उनके वाहन बताते हैं-

पूर्व की पीली ध्वजा में हस्ती। अग्नि की रक्त ध्वजा में मेंढ़ा। दक्षिण की कृष्ण ध्वजा में महिष। नैकृति की नील ध्वजा में सिंह। पश्चिम की सफेद ध्वजा में मछली। वायव्य में धुवां रंग वा हरे रंग की ध्वजा में हिरण। उत्तर के सफेद वा हरे रंग की ध्वजा में घोड़ा। ईशान की सफेद ध्वजा में बैल। पूर्व ईशान के मध्य में सफेद वा लाल ध्वजा में हंस। पश्चिम निकृति के मध्य में पीत वा काली ध्वजा गरुडाकार करें।

पताका का रंग

लोकेश का वर्ण याने ध्वजा का रंग ऊपर लिखा है वैसा ही रंग पताका का भी करे।

पताका १ हाथ चौड़ी ७ हाथ लम्बी । (दशदिक्पालों के शस्त्र) पूर्व की पताका में वज्र। अग्निकोण की पताका में शक्ति। दक्षिण पताका में दण्ड। नेकृत्य पताका में खड्ग। पश्चिम पताका में पाश। वायव्य पताका में अकुश। उत्तर पताका में गदा। ईशान पताका में त्रिशुल। पूर्वेशान के मध्य पताका में कमण्डलु। पश्चिम निकृति के मध्य पताका में चक्र बनाना

चाहिये।

ये दस हाथ के बाँस के सिर पर दिशा विदिशा में लगाकर पांचवा हिस्सा भूमि में गाड़े। और मण्डप के मध्य में ईशान में पंचरंगा महाध्वज (१०) दस हाथ लम्बा ३ हाथ चौड़ा, या ३ हाथ लम्बा ५ हाथ चौड़ा हो जो महाध्वज हो उसमें बैल बनावें। पर ईशान में ही महाध्वज श्रेष्ठ रहता है उसके कोण पर घण्टी व घुंघरु लगाना तथा चंवर बांधना चाहिये।

१० हाथ वा १६ हाथ वा २१ हाथ वा २३ हाथ का ध्वज का बांस रहना चाहिये। इनमें से जितना कर सके करना चाहिये। प्रमाण की बात ऊपर लिख दी है।

अब मण्डप के मध्य भाग में कुण्ड बनाना चाहिये।

पांच व्यक्ति बैठे तो ५ कुण्ड भी बनाये जा सकते हैं, इनका विधान फिर कभी लिखेंगे। (पांच कुण्ड का नक्शा भी अबकी बार दे दिया है।)

मण्डप में पूर्व और दक्षिण के बीच में कोणे पर गणपति षोडष मातृका तथा मातृका के ऊपर एक शिला पर सप्त मातृका (वसोर्धारा) बनावें।

उसके पास में ही पूर्व की ओर योगिनी मण्डप भी बना देवें। यद्यपि योगिनी तथा ५२ भैरवों का मण्डल उत्तर दक्षिण के बीच कोण में होता है। परन्तु योगिनी यहाँ भी हो सकती है जो भैरव मण्डल के सीध में बनती है। पूर्व और उत्तर के मध्य कोण में नवग्रह मण्डल एवं उनके नीचे रुद्रकलश स्थान एवं दीपक का स्थान होगा।

नवग्रह के पास पूर्व की ओर प्रधान विष्णु भगवान आदि जिस मूर्ति की स्थापना होगी उनका स्थान होगा। यह स्थान सब मण्डलों से चौगुणा (क्योंकि उस पर सर्वतोभद्र या लिगतोभद्र भी मंडेगा) होगा, उस पर सुन्दर सजावट होगी वस्त्र और गोटे या केले के खम्भ से वह रेवाड़ी जैसे बनाया और सजाया जावे। उस पर बड़ा कलश भी होगा। वही पास में नवीन

मूर्तियाँ भी होगी।

उत्तर पश्चिम के बीच कोण पर ४९ या ५२ कोठों वाला क्षैत्रपाल मण्डल होगा।

पश्चिम दक्षिण के बीच कोण पर वास्तु मण्डल ६४ कोष्ठात्मक होगा। पश्चिम की ओर वारुण मण्डल भी होगा। फिर इन दोनों के बीच पेड़ीदार मण्डप प्रवेश मार्ग होगा।

नीचे तक दोनों तरफ दो बांस भी लगावें। जो दरवाजा बन जावे। उस पर तोरण भी लगाया जायेगा। इसी प्रकार पूर्व उत्तर व दक्षिण के द्वार भी होंगे।

सभी स्तम्भों पर वस्त्रों का स्पष्टीकरण

१ मण्डप के मध्य में स्थित ईशान कोण के स्तम्भ में लाल वस्त्र

२ अग्निकोण के स्तम्भ में काला वस्त्र,

३ नेकृत्यकोण के स्तम्भ में पीला वस्त्र,

४ वायव्यकोण के स्तम्भ में पीला वस्त्र,

मंडप के बाहरी स्तम्भों के रंग

१ ईशान के स्तम्भ में लाल,

२ ईशान और पूर्व के स्तम्भ के मध्य में श्वेत,

३ पूर्व और अग्निकोण के मध्य में काला,

४ अग्निकोण में काला,

५ अग्निकोण दक्षिण के मध्य में श्वेत,

६ दक्षिण नैकृत्य कोण के मध्य में धूम्र,

७ नैकृत्य कोण में पीला,

८ नैकृत्य पश्चिम के मध्य में श्वेत,

९ पश्चिम वायव्य कोण के मध्य में श्वेतं,

१० वायव्य कोण में पीला,

११ उत्तर और वायव्य कोण के मध्य में पीला,

१२ उत्तर और ईशान कोण के मध्य में लाल वस्त्र लपेटें।

दरवाजों (तोरण वाले द्वारों) के ऊपर

पूर्व में शंख (लाल), दक्षिण में चक्र (कृष्ण)

पश्चिम में गदा (श्वेत), उत्तर में पद्म (पीत)

"इतिमण्डप विधानम्"

हेमाद्रि स्नानादि

थाली में स्वास्तिक मांडकर दशविध स्नान की सामग्री ले लें। यथा-

शंख, गरुड, घंटा, तुलसी, वपनप्रबन्ध जल प्रबन्ध गूलर की दातुन यज्ञभस्म, गोमय, मृत्तिका चौराहे की पंचगव्य, गोरज यव, फल, सर्वोषधी, कुशा, सुवर्ण, यज्ञोपवीत, कांसा की बाटकी छायादान के लिये।

सबसे प्रथम कार्य आचार्य और ब्राह्मण सपत्नीक यजमान को तडाग पर या अन्यत्र कही भी दशविध स्नान करावें और हेमाद्री संकल्प स्नानाँग तर्पण करावे यथा-

अथ दशविध स्नानादि

भस्मस्नानम्। ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽ उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः। यथाग्निर्दहते भस्म् तृणकाष्ठादि संचयम्। तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्मशुचे शुचिम् ॥२॥ अथमृत्तिकास्नानम्। ॐ इहं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यमाँ॒ सुरे स्वाहा। उद्धृतासि वराहैण

कृष्णेन शतबाहुना मृत्तिके हरमे पापं यन्मयादुष्कृतं कृतम् ।। मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिनन्दिता। मृत्तिके देहि में पुष्टिं त्वयि सर्व प्रतिष्ठितम् ।।३।। अथ गोमयस्नानम्।ॐ माऽनस्तोऽक्षेतनये मानऽआयुषि मानोगोषु मानो ऽअश्वेषुरीरिषः मानोव्वीरान् रुद्र भामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।। गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला। स्नानार्थ संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय।। अग्रमग्रं चरन्तीनाम् ओषधीनां वने वने। तासांवृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ।। यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय।।४।। अथ पंचगव्यस्नानम्।-ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः,सहस्त्रपात्। सभूमि० सर्व्वतः स्प्ः त्वात्यतिष्ठ दशांगुलम्।। गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि समन्वितम्। सर्वपाप विशुद्ध्यर्थं पंचगव्यं पुनातुमाम्।।५।। अथ गोरजः स्नानम् ।-ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद-सदन् मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयंत्स्वः।। गवां खुरेण विर्धुतं यद्रेणु गगने गतम्। शिरसा तेन संलेपे महापातक-नाश-नम।।६।। अथधान्यस्नानम्-ॐधान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्ग्घामनुप्रसिति-मायुषे धान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्व-च्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वामहीनाम्पयोसि।। धान्यौषधी-मनुष्याणां जीवनं

परमंस्मृतम्। तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यापोहतु।।७।। अथफलस्नानम्- ॐ या फलिनीर्य्या-ऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः| बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वंऽ हसः।। वनस्पतिरसादिव्यः फलपुष्पवृतः सदा। तेन स्नानेन मे देव फललब्धमननंतकम्।।८।। अथ सर्वोषधी स्नांनन्-ॐओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तंऽ राजन् पारयामसि।। ओषधयं सर्व वृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः दूर्वासर्षप संयुक्ता सर्वोषधम पुनंतुमाम्।।९।। अथ कुशोदकस्नानम्-ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।। कुश-मूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रें शंकरो देवस्तेन नश्यतु पातकम्।।१०।। अथ हिरण्यस्नानम् -ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन। हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनंतपुण्यफलदमतः शान्तिम् प्रयच्छ में ।।११।।

।। इतिदशंविधस्नानांनि ।।

अथ हेमाद्रिकृत स्नानसंकल्प

आचम्य प्राणानायम्य-वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि-समप्रभः। निर्विध्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गज़ाननम्।। स्थानं क्षैत्रं नमस्कृत्य दिननार्थं निशाकरम्। मंगलं च बुधं चैव गुरुं शुक्रं शनैश्चरम्।राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।। शुक्रादि-देवताः सर्वानृषीश्चैव तपोधनान्। गर्गमुनिं नमस्कृत्य नारदं पर्वतं तथा।। वसिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रं गोभिल। अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम्।। भरद्वाजं च माण्डव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम्। अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेद-शास्त्र-विचक्षणाः। तान् सर्वान् प्रणिपत्याहं शुभं कर्म समारभे। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।। अग्रतः श्री-नृसिहश्च पृष्ठतो देवकीसुतः। रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ। ॐस्वस्ति श्री मुकुन्द-सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य-मायाशक्ति -विजृम्भिता विद्यायोगात् कालकर्म स्वभावाविर्भूत- महत्तत्वोदिताहकारोद्भूत -विदयान्दि पञ्चमहाभूतेन्द्रिय-देवतानिर्मितेऽडण्टकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलयातन् मध्यवर्तिभगवतः श्री नारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकललोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्दारणाय प्रजापति प्रार्थितस्य:

समस्त-जगदुत्पत्तिस्थिति प्रलयकारणस्य जगद्रक्षाशिक्षा -विचक्षणस्य प्राणतपरिजातस्य श्री अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवती महापुषरुस्य अचिन्त्यता परिमित शक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौध मध्ये परिभ्रमाणानानामनेक कोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽ व्यक्तमहदहङ्कार- पृथिव्यप्तेजो- वाय्वाकाशावरणैरावृते अस्मिन् महतिब्रह्माण्डखण्डै आधार शक्ति श्रीमदा दिवाराह दष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त-वासुकि तक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्ट-महानागैर्धियमाणे एवरात पुण्डरीक वामन कुमुदाञ्जन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतिकाष्ट-दिग्गजप्रतिष्ठितानाम् तल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताललोकानामुपरि भागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभाग चक्रवाल शैलमहावलय नागमध्यर्तिनो महाकल महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणानां मणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्ति शुन्डोत्तम्भिते अमरावत्य शोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्त्यलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते तथैव इन्द्राग्नियमनिर्ऋति वरुण वायु कुवेरेशानाष्टदिक्पाल प्रतिष्ठिते वसुध्रुवाधर सोमपा

प्रभञ्जनानलप्रभासाख्याष्ट-वसुभिर्विराजिते हर त्र्यम्बक रुद्र मृगव्यधापराजित कपाली भैरव शंभुकपर्दि वृषार्कपि बदुरुपाख्यैकादश रुद्रैः संशोभिते रुद्रोपेन्द्र सवितृ (सविता) धातृ-त्वष्ट्रर्यमेन्द्रेशान-भगमित्रपूषाख्य द्वादशादित्य प्रकाशिते यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यानसमाध्यष्टांग निरत वसिष्ठ बालखिल्य विश्वामित्र दक्ष कात्यायन कौण्डिन्य गौतमांगिरस पराशर्य व्यास वाल्मीकि शुक शौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारदादि मुख्य मुनिभिः पवित्रिते लोकालोकाजल वलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधि-क्षीरोदक-युक्तसप्तार्णव परिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलि कुश क्रौंच शाक पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते इन्द्रकास्य ताम्रगभस्ति नागसौम्य गन्धर्व चारण भारतेति नवखण्ड-मण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटियोजन विस्तीर्ण-भूमण्डले अयोध्या मथुरा मायाकाशी काञ्च्यवन्तिका द्वारावतीति सप्त मुक्तिदापुरी-प्रतिष्ठिते महामुक्ति-प्रदस्थले शालग्राम शम्भल नन्दिग्रामेतित्रयविराजिते चम्पकारण्य बदरिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य जम्बुकारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य नहुषारण्य काम्यकारण्य

द्वैतारण्य नैमिषारण्यादीनां मध्ये नैमिषारण्ये सुमेरु निषध कूट शुभ्रकूट हेमकूट रजतकूट चित्रकूट त्रिकूट किष्किन्धा श्वेताद्रिकूट-हिमविन्धयाऽचलाना हरिवर्ष किम्पुरुषवर्पयोश्च दक्षिणे नवसहस्त्र-योजन-विस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचल मह्याचल विन्धयाचलानां उत्तरेण स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिक आवन्तक रमणक महारमणम पांचजन्य सिंहल लंकेति नवखन्ड-मन्डिते सिंहल लंकाऽ शोकतत्यऽलकावती सिद्धवती गान्धर्ववत्यादि पुण्यपुरीणामधोभागे नवखंडोप द्वीपमंडिते दक्षिणावस्थित रेणुकाद्वय सूकर काशी काञ्ची कालिर्वकाल बटेश्वर कालञ्जर महाकालेति नवोखर युते द्वादश ज्योतिलिङ्ग-गंगा (भागीरथी) गोदा (गौमती) क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी पयोष्णी चन्द्रभागा कावेरी मंदाकिनी प्रवरा कृष्णा वेण्या भोमरथी तुङ्गभद्रा मलापहा कृतमाला ताम्रपणी विशालाक्षी वञ्जुला चर्मण्वती वेत्रवती भोगवती विशोकाकौशिकी. गण्डकी वसिष्ठी प्रमदा विश्वामित्री फाल्गुनी चित्रकाश्यपी सरयू सर्वपापहारिणी करतोया प्रणीता वज्रा वक्रगामिनी सुवर्णरेखा शोणा भवनाशिनी शीघ्रगा कुशवर्तिनी ब्रह्मनंदा महितनयेत्यनेकपुण्य नदीभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्र-सिंधुनदादि-परम-पवित्र

जसविराजिते हिमवन् मेरु गोवर्धन क्रौच चित्रकूट हेमकूट महेन्द्र मलय सह्येन्द्र कीसपारियात्राद्यनेक-पर्वत समन्विते मतङ्ग माल्य किष्किन्धऋष्यश्रृङ्गेति महानग समन्विते अंग बंग कलिंग काश्मीर काम्बोज सौवीर सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, मगध, नेपाल, केरल, चोल, पञ्चाल, गौड़ मालव मलय सिंहल द्रविड़ कर्नाटक ललाट करहाट पानाट पाण्डच्य निषध मागध आन्ध्र दशार्णव भोज कुरु गान्धार चिदर्भ विदेह वाल्हीक बर्बर कैकेय कोसल विराट शूरसेन कोंकण कैकट मत्स्य भद्र पारसिक खर्जुर यावन म्लेच्छ जालंधरेति सिद्धवत्यन्य देश विशेष भूमिपाल-विचित्रिते मालवादि देशे इलावृत कुरुभद्राश्व केतुमाल किम्परुष रमणक हिरण्मयादि नव वर्षाणां मध्ये भरतखण्डे वकुल चंपक पाटलाब्ज पुन्नाग जाति करवीर रसाल कल्हार केतक्यादि नानाविध कुसुमस्तबक विरिजिते कोकन्त हिरण्य श्रृंग कुब्जार्बुद मणिकर्णी वटशालग्राम सूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहागल पीतस्वामी प्रभास बदरीति चतुर्दश गुह्य विचसिते जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रादि सम भूमध्यरेखाया: पश्चिम दिग्भागे कुलमेरोर्दक्षिणदिग्भागे विन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्रीशैलस्य वाव्यदेशे कृष्णावेण्योर्मध्यदेशे दशावता राणां मध्ये बौद्धावतारे गंगादि सरिद्भि: पवित्रिते नवसहस्त्र योजन विस्तीर्ण

भारतवर्षे-निखिलजन-पावन परमभागवतोत्तम शोनकादि निवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे सूर्यान्वयभूभृत्प्रतिष्ठिते श्रीमन्नारायण नाभिकमलोद्भूत सकल जगत्स्त्रष्टुः पाराद्धद्धयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्ष प्रथमदिवसे अन्होद्वितीये यामे तृतीये मुहूर्तेरथन्तरादि द्वात्रिंशत् कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमें वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्रीमन्नृपतिविक्रमार्कात श्रीमन्नृपति शालिवाहनाद्धा यथा संख्या गमेन चन्द्र सायन सौर नक्षत्रादि प्रकारेणागतानां प्रभवादि षष्ठिसंवत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनी श्रीमार्तण्ड मंडले अमुकर्तो अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थे चन्द्रे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथास्थानस्थितेषु अमुक शर्मणः (भार्ययासहाधिकृतस्य) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे या बाल्ययोवन वार्धक्यावस्थासु वाक्पाणिपायूपस्थ घ्राणरसना चक्षुः स्पर्शन श्रोत्रमनोभिश्चरित-ज्ञाताज्ञात कामाकाम

महापातकोपपातकादि सञ्चितानांपापानां ब्रह्महत्या सुरापान सुवर्ण स्तेय गुरुतल्पगमन तत्संसर्गरुप महापातकानां बुद्धि पूर्वकानां मनो वाक्काय कृतानां बहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट-संकरीकरण-मलिनीकरण पात्रीकरण जाति-भ्रशंकरण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां रस-विक्रय-कन्या-विक्रय हयविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्रविक्रय दासी-विक्रयाजादि पशुविक्रय स्वगृहविक्रय नीलीविक्रयाक्रेय-विक्रय पष्यविक्रय जलचरादि जन्तुविक्रय स्थलचरादि-विक्रय खेचरादिविक्रय सम्भूतानां निरर्थक वृक्षच्छेदन ऋणानपाकरणा ब्रह्मस्वापहरण देवस्वापहरण राजस्वापहरण परद्रव्यापहरण-रुपाणां ब्राह्मणनिन्दा गुरुनिन्दा वेदनिन्दा शास्त्रनिन्दा पर निन्दा अभक्ष्यभक्षणा भोज्यभोजना चोष्य-चोषणाऽलेह्यलेहनाऽपेयपानाऽस्पृश्य स्पर्शना श्राव्य श्रावणाः-हिंस्य हिंसनाऽवन्द्य वन्दनाऽ चिन्त्य चिन्तना ऽयाज्य याजना ऽपूज्यपूजना-रुपाणां मातृपितृतिरस्कार स्त्री पुरुष प्रीति भेदन परस्त्रीगमन विधवागमन वेश्यागमन दासीगमन चाण्डालादि हीन जातिगमन गुदगमन रजस्वलागमन पश्वादिगमन-रुपाणां कूटसाक्षित्त्रपैशुन्यवादमिथ्यापवाद म्लेच्छ सम्भाषण ब्रह्मद्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण वृत्तिच्छेदन परवृत्तिहरण रुपाणां मित्रवंचन स्वामि

वंचनाऽसत्यभाषण-गर्भपातन पथि तम्बूलचर्वण हीनजातिसेवन परान्नभोजन गणिकान्न भोजन लशुन पालण्डु गृञ्जन-भक्षण ताल वृक्ष-फलभक्षणोच्छिष्ट भक्षण मार्जारोचिष्टभक्षण पर्यूषितान्न-भक्षण-रुपाणां पंक्तिभेदकरण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा बाल हिसाद्यनेकहिंसोद् भूतानां शोचत्याग, स्नानत्याग सन्ध्यात्या-गोपासनाग्नित्याग वैश्वत्याग-रुपाणां निषिद्धा-चरण कुग्रामवास ब्रह्मद्रोह पितृमातृद्रोह परनिन्दात्मस्तुति-दुष्टप्रतिग्रह दुर्जन संसर्ग रुपाणां गोयान वृषभयान महिषीयान गर्दभयानोष्ट्रयानाजया भृत्याभरण स्वग्रामत्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थमन्त्र विप्राश भेदनावन्दिता-शीर्वाद-ग्रह पतितसम्भाषण-रुपाणां पतितजनपंक्ति-भोजनाहः मह वृथामनो रथादि पापानां तथा-महापापोप पापानां नानायोनिषुयत्कृतम्। बालभावेन यत्पापं क्षुत्तृडर्थे च यत्कृतम। आत्मार्थे चैव यत्पापं परार्थे चैंव यत्कृतम रागद्वेषादि जनितं कामक्रोधेन यत्कृतम्॥ महल्लघु च यत्पापं तन्मे नाशय जाह्नवि॥ ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः। महापापानि चत्वारि तत्सर्गी तु पंचमा॥ अतिपातकमन्यच्च यन्न्यूनमुपपातकम्॥ गोवधोवात्यातास्तेयं ऋणानां चानपक्रियाः॥ अनाहिताग्निता-पण्य-विक्रय परिवेदनम्।

इन्धनार्थे द्रुमच्छेदः स्त्रीहिंसौषधिजीवनम्॥ हिंसायात्राविधानंच भृतकाध्यापनं तथा। प्रथमाश्रममारभ्य यत्किञ्चित किल्विष कृतम्॥ कृमिकी-टानि हननं यत्किञ्चत् प्राणि हिंसनम्। मातापित्रोरशुश्रूषा तद्धाक्याकरणं तथा॥ अपूज्य पूजनं चैव पूज्यानां च व्यतिक्रमः॥ अनाश्रमस्थताग्न्यादि देवाशुश्रूषणं तथा॥ परकार्यापहरणं परद्रव्योंपयीवनम्र। ततो ज्ञानकृतं वापि कायिकं वाचिकं नथा॥ मानसं त्रिविधं पापं प्रायश्चित्तै नाशितम। तस्मादशेषपापेभ्यस्त्राहि त्रैलोक्यपावनि॥ निष्पापोऽस्म्यधुना देवि प्रसादात्तव नान्यथा। स्त्रीणांविशेष पणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मापरिपालनम्। इन्द्रि याभिरतिः पुंसु नानायोनिषु या भवेत॥ कृमिकीटादि हननं पंक्तिभेदादिकं तथा पृष्टाष्पृष्टमनाचारं मनसा दोष कल्पनम्॥ तत्सर्व नाशयेः क्षिप्र गंगे त्वं यात्रायानया॥ इत्यादि प्रकीर्ण-पातकानां एतत्काल-पर्यन्त सञ्चितांनां लघु स्तूल सूक्ष्माणां च निःशेष परिहारार्थ दशावरान् दशापरान् आत्म-सहितान एकविंश पुरुषा नुद्वर्तुं ब्रह्मलोकावधि पंचाशत् कोटियोजन-विस्तीर्णेऽस्मिन भूमंडले सप्तर्षि-मंडलपर्यंतं बालुकाभिः कृतराशेः वर्षसहस्त्रावसाने एकैकबालुकापकर्षक्रमेण- सर्वराशयपकर्ष-

संमित-कालपर्यंत ब्रह्मलोके ब्रह्मसायुज्यप्राप्त्यर्थ कुरुक्षेत्रादि सर्वतीर्थेषु स्नानपूर्वकं सहस्त्र गोदान जन्यफल-प्राप्यर्थ तथा मम समस्त-पितृणां आत्मनश्च विष्णवादिलोक प्राप्यये अधीतानामध्ये-ष्यमाणानां चाध्यायानां स्थापन विच्छेद क्रोशधोषण हन्तविवृत्ति दुवृर्त्तद्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वंसवर्णानां गलोपल-बिम्व विवृत्तोच्चारित वर्णानां श्लिष्टास्पष्ट वर्णविघट्ट नादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वे तत्परिहारार्थ अष्टत्रिंशदनध्यायाध्ययते रथ्यासञ्चरतः शुद्रस्य श्रृण्वेतोऽ-ध्ययने म्लेच्छान्त्यजादेः श्रृण्वतोध्ययने अशुचिदेशेऽध्ययने-आत्मनोऽशुचित्वेध्ययने अक्षर स्वरानुस्वार परच्छेद् कडिका व्यञ्जन् ह्रस्व दीर्घ प्लुत कंठ तालु मूर्धन्यौष्ठच्य दन्त्य नासिकानुनासिक रेफ जिह्वामूलीयोमध्यमानीया दात्तानुदात्त स्वरितादीनां व्यत्ययेनोच्चारे माधुयक्षिर व्यक्तिहीनत्वा द्यनेक प्रत्यवान परिहार पूर्वकं सर्वस्य वेदस्य सवीर्यत्व सम्पादन द्वारा यथावत् फलप्राप्त्यर्थ श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ देवब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायण-सन्निधौं गङ्गा भागीरथ्यां वा अमुक तीर्थे वा प्रवाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये, इति संकल्प्य स्नायात् ।। इति हेमाद्रिकृतः संकल्प प्रयोगः ।।

स्नानांगतर्पणम्

ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्भूवः स्वःर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ सनाकादि द्वैपायनादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भू र्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ स्वःर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्भूवः स्वःर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ कव्यताडवानलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ भू. पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूर्भूवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। (ततः आचम्य सव्येन यक्ष्यतर्पणं कुर्यात।) यक्ष्मतर्पणम्-यन्मया दूषित तोप शारीरमलसम्भवात्। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थ यक्षमेतत्ते तिलोदकम्॥ (इतिमन्त्रेण तीर्थतटे तिलमिश्र जलाञ्जलिं निक्षिपेत् पश्चात् लतादिकेषु शिखोदकत्यागः- लतागुल्मेषु वृक्षैषु पितरो ये व्यवस्थिताः। ते सर्वेतृप्तिमायान्तु मयोत्सष्टै शिखोदकैः॥ इतिमन्त्रेण स्दक्षिण भागे स्वशिखाग्रं निष्पीडयेत्। ततो धोते वाससी परिधाय भस्मादि धृत्वा(अथवा गृहे यथेच्छं सन्ध्यादि नित्यकर्माणि कुर्यात इति स्नानाङ्गतर्पणम्॥

दशस्या। व्यस्कभ्ना रादसा विष्णुवत दाघत्थ पृथिवामाभता

भगवत् पूजन प्रायश्चित हवन

यज्ञोपवीत बदल कर शुद्ध वस्त्र पहनकर तीर्थ स्थान हो तो वही एक वस्त्र पर अक्षतों से अष्टदल मांडकर एक ताम्रकलश पर कटोरी मे अक्षतों पर शालिग्रामजी की मूर्ति की पुरुष सूक्त से पूजा करके वेदी पर पंचभू संस्कार करके व्याहृति हवन पूर्वक अग्निपूजन करके बाद में प्रायश्चित मन्त्रों से हवन करके आरती कर, पंचगव्य का तथा सस्त्रवप्राशन पूर्ण पात्र दानादि करके यज्ञ करने योग्य स्थान पर आ जावे।

३अथ षोडशाङ्गन्यास पूर्वकं षोडशोपचार पूजनक्रमः:

(१) सहस्त्रशीर्षा- आवाहनम ।। इतिवामकरे (२)पुरुषऽऐ०-आसनम ।। इति दक्षिणकरे (३)एतावानस्य०-पाद्यम् ।। इति वाम पादे (४)त्रिपादूर्ध्व०अर्घ्यंम ।। इति दक्षिणपादे (५)ततोव्विराडजायत०- आचमनीयम् ।। वामजानौ (६) तस्माद्यज्ञात्०-स्नानं ।। इति दक्षिण जानौ (७)तस्माद्य०ऋच। वस्त्रम् ।। वामकटय्यम् (८)तस्मादश्वा यज्ञोपवितं ।। दक्षिण कटय्याम (९) तं य्यज्ञम्०-गंधाः ।। इति नाभौ (१०) यत्पुरुषम्०-पुष्पाणि ।। इतिहृदये (११) ब्राह्मणोऽस्य० धूपः ।। इति वामकुक्षौ (१२) चन्द्रमा-मनसो:०-दीप ।। दक्षिणकुक्षौ (१३) नाभ्या आसीद०-नैवेद्यम् ।।इतिकंठे (१४) यत्पुरुषेण०-दक्षिणायुत ताम्बूलम् ।। नमस्कारः ।। वक्त्रे (१५) सप्तास्यासन्०-आरार्तिक्यं प्रदेक्षिणम् ।। अक्ष्णोः (१६) यज्ञनयज्ञ. - पुष्पाञ्जला नमस्कारं ।। मूर्ध्नि इति :.

सङ्कल्प

अथास्मिन् शुभसंवत्सरे मासे पक्षे तिथौवासरे च अमुक गोत्रौत्पन्नोऽमुकनामाहं अमुकदेवता प्रतिष्ठायामधिकार-सिद्ध्यर्थ कृत हेमाद्रि प्रभृति दशविधस्नानोऽहं विष्णुश्राद्धमहं करिष्ये। तत्रादौ देहशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तेन-अंगादिन्यास कृत्वा षोडशोपचारैः शालिग्रामपूजनमहं करिष्ये प्रायश्चित्तंगभूतं हवन च करिष्ये।

पुरुषसूक्तम्

हरि ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।। सभूमिᳬ सर्वंत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।१।। पुरुषऽएवेदं सर्वयद्भूतं यच्च भाव्यम्।। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।२।। एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवी।।३।। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।। ततोव्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः।। स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।५।। तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नाराण्या ग्राम्याश्च ये।।६।। तस्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।। छन्दाᳬ सी जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।७।। तस्मादशवाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाताऽअजावयः।।८।।तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुशञ्जातमग्ग्रतः।।तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्याः

सीत्किंम्बाहू किमूरु पादा उच्येते ॥१०॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः ॥ उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रोऽअजायत ॥११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ऽअकल्पयन् ॥१३॥ यत्पुरूषेण हविषां देवा यज्ञमतन्वत ॥ वसन्तो स्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥ सप्तस्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥ देवा यद्यज्ञं तन्वा नाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेह नाकं महिमानः सचन्तः यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्यत्वष्टा विदधद्रू पमेती तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१८॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे:अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ॥ तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥१९॥ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः पूर्वोयो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥२०॥ रुचँ ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वेवम् ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ॥२१॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यातम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण ॥२२॥

भगवान की षोडशोपचार से पूजा कर लें।

अब प्रायश्चित हवन की विशेष बातें यहाँ लिखी जा रही है। यजमान दम्पती के ग्रन्थिबन्धनादि कर दे प्रसिद्ध-प्रसिद्ध छोटी-छोटी बातें मेरी बनाई सरल-ग्रहशान्ति से जाननी चाहिये कुशकाण्डिका विधान भी उसी के आधार से करें।

विशेष

उपयमनकुशान् दक्षिणेन पाणिनाऽऽदाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्।

अग्नयाधान

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवायमुप ब्रुवे। देवां ३असहादयादिह॥

अग्नेरुत्तरत आचार्य ब्रह्मणोर्वरणं कुर्यात। तत्र ग्रहशांतिवत् संकल्पः। ब्रह्मस्थानं दक्षिणे।

अग्नि के उत्तर में आचार्य और ब्रह्मा का वरण कर लेवे। तब संकल्प बोल लेवे॥ ब्रह्मा को दक्षिण में स्थान देवे।

ततो विधिनाम्ने अग्नये नमः।

इससे अग्नि की पूजा करके रेखात्रय की पूजा करें-

ॐ ब्रह्मणे नमः (पूर्वरेखायाम्)

ॐ विष्णवे नमः (मध्यरेखायाम्)

ॐ रुद्राय नमः (उत्तर रेखायाम्)

फिर सप्त जिह्वाओं की पूजा करे -

ॐ कराल्यै नमः ॥१॥ ॐ धूमिन्यै नमः ॥२॥ ॐ श्वेतायै नमः ॥३॥ ॐ लोहितायै नमः ॥४॥ ॐ महालौहितायै नमः ॥५॥ ॐ सुवर्णायै नमः ॥६॥ ॐ पद्मरागायै नमः ॥७॥

फिर दक्षिण जानु को ढालकर ब्राह्मणऽन्वारब्ध* होकर प्रज्वलित अग्नि में चुपचाप स्रुवे से होमे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा (इति मनसा) मन से बोलकर अग्नि में आहुति दे।

इदं प्रजापतये न मम (मन से ही त्याग कर हुत शेष को प्रोक्षणी पात्र में डाल देवे। इसी प्रकार सर्वत्र जानें।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।। इदमिन्द्राय न मम (इत्हाधारौ) ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

(ये दोनों आज्यभाग की आहुति दें) फिर १०८ वा २८ आहुतिया इस प्रकार देवें -

ॐ भू स्वाहा, इदं अग्नये न मम।।

ॐ भुव स्वाहा, इदं, वायवे न मम।।

ॐ स्व: स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार सात बार करने पर २८ आहुतियें हो जाती है। फिर ब्रह्मकूर्च से होम करे। यथा -

सुवर्ण पात्र में गायत्री से गोमूत्र।

गन्ध द्वारा इत्यादि से गोमय।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विष्वत: सोमवृष्णयन्(गोदुग्ध)

---

*आधार - आधार नाम की दो आहुतियें अग्निदेव की नासिका है।
आज्यभाग-आज्यभाग नाम वाली दो आहूतियां नेत्र है।
प्राजापत्य-प्राजापत्य आहुतियां अग्निदेव के मुख मान है।
व्याहृति होम-व्याहृति होम अग्निदेव का कटि भाग है।
पंचवारुण-पंचवारुणी होम-दो हाथ, पैर और मस्तक है।
स्विष्टकृत पूर्णाहुति-ये दोनों आहुतियां अग्निदेव के कान है।

ॐ दधिक्राव्णों० से दधि।

ॐ तेजोसि शुक्रम्० से घृत।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोबाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।। इससे कुशोदक लेवे।

इनका प्रणव से मंथन करके यज्ञियकाष्ठ से फिर मथ कर ॐकार से उसे मन्त्र कर सात से अधिक हरे दर्भपत्रों से पंचगव्य का होम करे। मन्त्र ये है-

ॐ इरावती धेनुवती हि भूत७ सूयवसिनी मनवे दशस्या।। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा।।५।।६।। इदं पृथिव्यै इदं न मम।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०। इदं विष्णेव न मम।।

ॐमानस्तोके०। इदं रुद्राय इदं न मम।।

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय०। इदमग्नये इदन्न मम।। ॐ सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय इदन्न मम।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्०। इदं सवित्रे इदन्न मम।। ॐ "स्वाहा"। इद परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वाहा।। इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार होमकर पंचगव्य और घी दोनों मिलाकर-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।। इति स्विष्टकृत होमः।।

फिर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे--हे ब्राह्मणों में ब्रत ग्रहण करूंगा। तब वे कहे कि " कुरुष्व" कीजिये।

उनकी आज्ञा से प्रणव (ओं) बोलकर हुत से शेष पंचगव्य को पान करे।

पश्चात् दूसरे दिन या उसी दिन संकल्प करके गोदान अथवा तन्निष्क्रय दक्षिणा देवे। फिर--

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इद न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, न मम॥

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, न मम॥

ॐ भूर्भुव स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये, न मम॥

इस प्रकार सात बार होम करके--

फिर ब्राह्मणन्वारब्ध होकर--

ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

ॐ भुव स्वाहा। इदं वायवे न मम॥

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय। इदं न मम॥

अथ प्रायश्चित्त होम

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुस्य विद्वान् देवस्य हेड़ो अवयासिषीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्रेषा॑ऽ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम्॥१॥ ॐ स त्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणॅऽ रराणों वीहि मृडीकॅऽ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम्॥२॥ ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्हनभिशस्ति पाश्चं सत्यमित्वमयासि। अया नो यज्ञं वहस्य यानो धेहि भेषजॅऽ स्वाहा। इदमग्नये॥३॥ ॐ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशावितता महान्तः। तेभिर्न्नो अद्य सवितोत

विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः।।४।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमॅ७ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।५।।

ततःबर्हिर्होमं स्वाहा।। इससे बर्हिहोम करे।

"इदं प्रजापतये न मम" यह भी बोल दे।

पश्चात् सस्रवप्राशन वा अवघ्राण करके दो आचमन करे अग्नि में "स्वाहा" शव्द से पवित्री डालकर पूर्णपात्र दान देवे।

फिर अग्नि की प्रार्थना करे--

ॐ सदसस्पतिदद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनि मघामयासिष७ स्वाहा।। ॐ यां मेघां देवगणाः पितर-श्चोपासते, तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा। मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे।।

उत्तरांग अग्निपूजन तथा पुनः प्रार्थना करे--

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्धान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम। श्रद्धां मेधां यज्ञ प्रज्ञां, विद्यां पुष्टि बलं श्रियम्। आयुष्य द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

पीछे संकल्प में

प्रायश्चित्तोत्तरांग विष्णुश्राद्ध सपत्तये ब्रह्मणंचतुष्टय

आमान्नं पक्वान्नं वादास्ये।

ऐसा बोलकर ४ ब्राह्मणों को कच्चा या पक्का अन्न देवे।

पश्चात् त्र्यायुषीकरण (यज्ञभस्म लगावें)

ॐ त्र्यायुष जमदग्ने (ललाटें)

कश्यपस्य त्र्यायुषम् (ग्रीवायाम्)

यद्देवेषु त्र्यायुषम् (दक्षिणबाहुमूले)

तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदि)

फिर आचार्य दक्षिणा, ब्राह्मण भोजन संकल्प, भगवान की आरती, पुष्पांजलि प्रदक्षिणा करके देवता तथा अग्नि का विसर्जन करे पीछे यजमान के तिलक रक्षाबन्धनादि करे।

॥इति होमारंभे प्रायश्चित्त प्रयोगः॥

वेदी के समीप का कार्य

भद्रसूक्तम्

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ *ॐदेवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतांदेवानϑ रातिरभिनो निवर्त्तताम् दैवानाϑ संख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ ॐ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम अर्यमणं वरुणϑ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ॐ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतंधिष्णाया युवम्॥ ॐ तमीशान जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यौंअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ पृषदश्वामरुतः पृश्निर्मातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षयो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

*कई आचार्य प्रायश्चित हवन के बाद दशदान (गो,भू,) तिल हिरण्य आज्यवस्त्र धान्य गुड़ रजत और लवण दान भी करा के फिर यजमान को मंगल स्नान के लिए लाते है।

स्थिरैङ्गैस्तुष्टुवा॑ऽ सस्तनूभिर्व्यं शेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॐ तिमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोंः ॥ ॐ अदितिर्धौरदितिरन्तरिक्षमद्दितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्ज जना ऽअदिर्जातमदितिर्जनित्वम ।

ॐ द्यौः शान्तिरंतरिक्ष॑ऽ शान्तिः पृथिवी शांतिराप शांतिरोषधयः शान्ति । वनस्पत्यः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व॑ऽ शांतिः शांतिरेव शांति सा मा शांतिरेधि ॥१॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः शांतिः शांतिः शांतिः सुशांतिर्भवतु ॥

पति-पत्नि के ग्रन्थि बन्धन कर दें। मन्त्र यह है--

यदाऽबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य॑ऽ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्म आ बध्नामि । शतं शारदायायुष्माञ्जर दष्टिर्यथासम ।३४।५२।

यजमान को कुशा की पवित्री पहनावे तब बोलें--

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यं रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥ आचमनं प्राणायामं च कृत्वा गुरुं गुरु मंत्रं च स्मृत्वा । गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरु र्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः । ॐ केशवायनमः,

ॐ नाराणायनमः, ॐ माधवायनमः

इससे तीन आचमन करके हाथ धोकर गुरु और गुरु मन्त्र का स्मरण करे। फिर निम्न मन्त्र से शरीर के छीटे दिलावें--

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा॥
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः॥

इसके अनन्तर आसन या पृथ्वी के छींटे दिलावें। यथा--

पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनां धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

(अथ गणेशादिस्मरण)

सुमुखश्चैव दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
अभीप्सितार्थ पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥४॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
अविघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्व्रदा॥५॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नंमोस्तु ते॥६॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये।।७।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः।।८।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव विद्याबलं देवबलं तदैव।
ताराबलं चंद्रबलंतदेव लक्ष्मीपतेस्तेघ्रियुगं स्मरामि।।९।।
यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१०।।
सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।११।।

श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यानमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यग:र्भाभ्यां नमः। माता पितृभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो दवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत् कर्म प्रधान देवतायै नमः श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

अथ संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणों द्वितीय-परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत् मंवतरे अष्टाविंशतितमे

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा७ सस्तनूभिर्व्यं शेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॐ तिमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोंः ॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमद्दितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्ज जना ऽअदिर्जातमदितिर्जनित्वम ।

ॐ द्यौः शान्तिरंतरिक्ष७ शान्तिः पृथिवी शांतिराप शांतिरोषधयः शान्ति । वनस्पत्यः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व७ शांतिः शांतिरेव शांति सा मा शांतिरेधि ॥१॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः शांतिः शांतिः शांतिः सुशांतिर्भवतु ॥

पति-पत्नि के ग्रन्थि बन्धन कर दें। मन्त्र यह है--

यदाऽबघ्नन् दाक्षायणा हिरण्य७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्म आ बघ्नामि। शतं शारदायायुष्माञ्जर दष्ट्रिर्यथासम ।३४।५२।

यजमान को कुशा की पवित्री पहनावे तब बोलें--

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यं रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥ आचमनं प्राणायामं च कृत्वा गुरुं गुरु मंत्रं च स्मृत्वा। गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरु देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः। ॐ केशवायनमः,

ॐ नाराणायनमः, ॐ माधवायनमः

इससे तीन आचमन करके हाथ धोकर गुरु और गुरु मन्त्र का स्मरण करे। फिर निम्न मन्त्र से शरीर के छीटे दिलावें--

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा॥
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः॥

इसके अनन्तर आसन या पृथ्वी के छींटे दिलावें। यथा--

पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनां धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

(अथ गणेशादिस्मरण)

सुमुखश्चैंव दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
अभीप्सितार्थ पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥४॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
अविघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥५॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥६॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये।।७।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः।।८।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव विद्याबलं देवबलं तदैव।
ताराबलं चंद्रबलंतदेव लक्ष्मीपतेस्तेंघ्रियुगं स्मरामि।।९।।
यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१०।।
सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।११।।

श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यानमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। माता पितृभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो दवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत् कर्म प्रधान देवतायै नमः श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

अथ संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणों द्वितीय-परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत् मंवतरे अष्टाविंशतितमे

कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तगत-ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिकानामक्षेत्रे पुष्करारण्ये (पुष्करारण्यसमीपे वा) गंगायमुनयो पश्चिमें तटे नर्मदाया उत्तरे तटे अमुक नाम्नि नगरे (ग्रामे वा) अमुक विक्रम संवत्सरे अमुकशालिवाहन शकाब्दे अमुकायने अमुकर्तो अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अनुकनक्षत्रे अमुकयोगे करणे च (अमुक राशिस्थिते सूर्ये: अमुकराशिस्थिते चंद्रे: शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशि स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशिष्टायाँ शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य सभार्यस्य उपात्तनिखिल दुरितोपशमन द्वारा क्षेमायुरारोग्यादि सम्पत् सिध्यर्थदशानां पूर्वेषां दशानां परेषामात्मनञ्च इत्येक विंशतिकुलानाँ निरतिशयानन्द प्राप्त्र्थं भगवद्भक्ति वृद्ध्यर्थं अद्य प्रति ष्ठाजप्यमानदेवताप्रसाद-द्वारा मत्स्यादि पुराणौक्त तत्प्रतिष्ठा जन्य फल सिद्ध्यर्थं अमुषां देवतानां अचलभक्तिप्राप्त्यर्थ श्री विष्णुप्रभृति देवेषु देवकलासान्निध्यार्थ श्री-परेमश्वर-प्रीतये स्वकारितदेवप्रसाद प्रतिष्ठा-सहितां सनवग्रहमखांएकरात्राधिवासनैकाध्वरयुताम् श्री लक्ष्मीनारायणयोः (सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्नहनुमत्समेत्तस्य) श्री रामचंद्रस्य (श्रीराधाकृष्णयोः) पार्वतीपरमेश्र्वयोः गणपतिस्कन्द

नंदीश्वरसहितयोः)(श्रीमारुतेः) अचलप्रतिष्ठा-विद्यारम्भ सप्ताहे, पंचाहे, चतुरहे, तृतीयाहे श्वः, सद्योवा प्रतिष्ठां करिष्ये। तदंगत्वेन गणपति स्मरणं स्वस्तिवाचनं पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणकर्म करिष्ये।

तदंगत्वेन निर्विघ्नतया सर्वकार्य-सिद्ध्यर्थ गणेशांबिका पूजनं करिष्ये। श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर

दिग्रक्षण्

सरसों या अक्षतों को बायें हाथ में ले के दाहिने हाथ से सब दिशा में फेंके--

पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः।
याम्यां रक्षतु बाराहो नारसिंहस्तु नैऋते॥
वारुण्यां केशवो रक्षेद् वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ईशाने तु गदाधरः॥
ऊर्ध्व गोवर्धनो रक्षेद् धस्ताच्च त्रिविक्रमः।
एवं दश दिशा रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः॥

बाकी की सरसों या चावलों को आगे के श्लोकों से सिर पर घुमा कर बिखेर देवें--

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्यानमाश्रित्य सर्वदा।
नं त्यक्त्वा तु तत्सर्व यत्रस्थ तत्र गच्छतु॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामऽविरोधन ब्रह्म कर्म समारंभे।।

अथवा

ॐ रक्षोहुणं बलगहनम इत्यादि रक्षोध्न सूक्तम।

(यह सूक्त मंडप प्रवेश प्रकरण में पूरा छपा है)

इसका पाठ करके अक्षत प्रक्षेप करें।

पादेन त्रिवार भूमिताड़नम् (पैर से भूमिताड़न करें।)

अब अपने वामभाग में पूजार्थ जलपूरित कलश की पूजा करे।

तत्वायामीत्यस्य शुनः शेष ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः वरुणो देवता वरुण वाहने विनियोगः।

इससे विनियोग करके वरुण का आवाहन करे। मंत्र यह है--

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्द मानस्तदशास्ते यजमानों हविर्भिः।। अहेड़मानो वरुणेह वोध्युरुशॅ७ स मान आयुः प्रमोषी।। मकरस्थं पाशहस्तमंभसां पतिमीश्वरम्।आवाहये प्रतीची शं वरुणं यादसां पतिम्।।ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं असक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यंज्ञमिमत्तन्नो त्वरिष्ट यज्ञॅ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवासे इह मादयन्तामोह३म् प्तिष्ठ।अ०२।१३

ॐ वरुणाय नमः भो वरुण सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। ॐभूर्भूव स्व वरुणायः नम चंदनं समर्पयामि। पंचोपचारैः पूजयेत्।

पुष्पांजलि पर्यान्त पूजा करके अनामिका अंगुलि से कलश को स्पर्श करता हुआ बोले--

कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां च महेश्वरः।
मूले चेव स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता॥
क़क्षौ तु सागराः सप्त सप्तदीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोप्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
गायत्री चैव सावित्री शांतिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु यजमानस्य दुरित क्षय कारकाः।
सर्वे समुद्रा सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
आयान्तु यजमानस्य दुरित क्षय कारकाः।

इतिश्री वरुणदेवता प्रसादात् सर्वविधेः पूर्णतास्तु॥

सब सामग्री के इससे छींटे देवें फिर उसका थोड़ा जल लेके अपना प्रोक्षण करे तब बोले--

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः समरेत् पुण्डरीकाक्षं मंगलायतनो हरिः॥

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्ता नऽ उर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।उशतीरिव मातरः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो

जनयथा च नः ॥ अ. ११ । ५०

- : पश्चात् धृतदीपक की पूजा करे :-

ॐ अग्निज्योति ज्योंतिरग्निः स्वाहा । सूर्योज्योति - ज्योंतिः सूर्य स्वाहाः । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

प्रार्थना

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत । यावत पूजा समाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरौ भव ॥ अनेन पूजनेन दीपदेवता प्रीयताम् ॥

पश्चात् (शंखदेव) घटां च नाम मंत्रेण पूजयेत् ॥ घण्टानाद कुर्यात् ॥

तत्रादौ हस्ते गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा गणेशावाहनं कुर्यात् -

ॐ एह्येहि हेरंभ महेशपुत्र समस्त विघ्नौप विनाशदक्ष । मांगल्य पूजा प्रथम प्रधान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते । ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् । आगच्छ भगवन्देव स्वस्थानात् परमेश्वर अहं पूजा करिष्यामि सदा त्वं सम्मुखो भव ॥

इत्यावाह्य पूजयेत् एतत् पाद्यंगणपतये नमः। एषोऽर्घो गणपतये नमः एतत् स्नानीयजलं गणपतये नमः। इमे वस्त्रयज्ञोपवीते गणपतये नमः। अयं गंधो गणपतये नमः। इमे अक्षता गणपतये नमः। इदं पुष्पं गणपतये नमः।

ॐधूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमॅ॰ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥१।८

इति धूपं, अग्निज्योतिरिति मंत्रेण दीपं, गणपतये नमः नैवेद्यं। आचमनीं गणपतये नमः। ताम्बूलं गणपतये नमः। फल दक्षिणाँ च गणपतये नमः।

अथ विशेषार्घः।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भावार्णवात् ॥१॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो प्रभो षाण्मातुराग्रज।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥२॥
गृहाणार्घमिमं देव् सर्वदेव नमस्कृतः।
अनेन फलदानेन फलदः स्याः सदा मम ॥३॥

अथ पुष्पांजलि।

मालती-माल्लिकाजाति-शतपत्रादि संयुतम्।
पुष्पाञ्जलिं गृहाणेश तव पाद युगार्पितम्।

इस प्रकार पूजन करके इस वाक्य से जल छोड़ें-

ओमेतान्यर्चनानि पाद्यर्घ्य स्नान वस्त्र यज्ञोपवीत-गन्धाक्षत-पुष्प धूप-दीप नैवेद्याचमनीय ताम्बूलफल दक्षिणापुष्पांजल्यन्तानि परिपूर्णानि भवन्तु॥ अनेन पूजनेन गणपतिः प्रीयंताम।

अथ प्रार्थना का श्लोक

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय सुरयज्ञ-विभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ त्रमो नमस्ते॥

अथ कलशस्थापनम्।

पहले नीचे के मंत्र से भूमि स्पर्श करें।

ॐभूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथ्वी यच्छ पृथिवीं हँ० ह पृथिवीं मा हिँ० सीः।१३।१८

कलश के नीचे स्थित जौ या मण्डलस्थ धान्य के हाथ लगावे।

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वःसविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिनां चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।१।२०

फिर कलश स्थापित करे या कलश के हाथ लगावे तब यह बोले-

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशंत्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः- ८।४२

कलश मे जल गेरने का मन्त्रः-

ॐ वरूणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदमसि वरुणस्य ऋदनमासीद ।४।३६

चन्दन गेरना

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

कलश में सर्वोषधी गेरना उसका मन्त्र

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु ब्रभूणामहऽशतं धामानि सप्त च।१२।७५

दूर्वा गेरना

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परूषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।१३।२०

कुशा गेरने का मन्त्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

सप्त मृत्तिका गेरेः-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

पूगीफल कलश में गेरे:-

ॐ याः फलीनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणिः। बृहस्पति, प्रसूतास्तानो मुञ्चत्तवँऽ हसः ॥

पंचरत्न गेरने का मन्त्र:-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

दक्षिणा गेरे:-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

पच पल्लव

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथयत् सनवथ पूरुषम्।

इससे कलश के माली बांधे:-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्सवः। वासोऽअग्ने विश्वरुपँऽ संव्ययस्व विभावसो॥

पात्र में चांवल भरकर कलश पर पूर्णपात्र रखते हुये यह मन्त्र बोले:-

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जँऽ शतक्रतो॥३।४९

नारियल के कुंकुम लगाकर मोली बांधकर कलश के पास स्थापित करता हुआ यों बोले या लाल वस्त्र से वेष्टित श्रीफल को रखे।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।३१।२२

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुँ समान आयुः प्रमोषि॥

पश्चात् आगे के मन्त्र से वरुण का आवाहन करे:-

सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणमावाहयामि॥ अप्पतये वरुणाय नमः॥

फिर वहीं देवताओं का आवाहन करे:-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तदीपा वसुन्धरां। अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती। कावेरीकृष्णा वेणी च गंगाचैव महानदी। ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥ नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापरा:। पृथ्व्यांयानि तीर्थानि कलशस्थानि योनिवै॥ सर्वेसमुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः॥ आयांतु मम शाँत्यर्थ दुरित क्षय कारका:। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः। सामवेदोह्यथर्वणः अंगैश्च संहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः॥

गायत्री चैव सावित्री शाँतिः पुष्टिकरी तथा।

आयान्तु मम शान्त्यर्थ दूरितक्षयकारका:॥

कलशाधिष्ठात्र्यो विष्णुवादि देवता: सुप्रतिष्ठिता-भवन्तु॥

मनोजूतिरित्यावाह्य पूजयेत॥

अथ कलश प्रार्थना

देवदानव-संवादे मध्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विंधृतो विष्णुना स्वयम्॥

त्वत्तोये सर्व तीर्थांनि, देवा: सर्वे त्वयि स्थिता:।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्पूवसि प्राणा: प्रतिष्ठा:॥

शिव: स्वयं त्वमेवासिस विष्णुस्त्वं च प्रजापति:।

आदित्या वसवो रुद्राविश्वेदेवा: सपैत्रिका॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: काम फलप्रदा:।

त्वत् प्रसादादिमं यज्ञंकर्तुमीहे जलोद्भव॥

सान्निधयं कुरु में देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय-

सुश्वेतहासाय सुमंगलाय॥

सुपाश हस्ताय झषाननाय-

जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

पाशपाणो नमस्तुभ्यं पद्मिनो जीवनायक।

यावत् कर्म समाप्ति: स्या त्तावत् त्वं सन्निधौ भव॥

ॐ

वाशिष्ठीहवन पद्धत्यनुसारेण

पुन्याहवाचनम्

पहले यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल अक्षत पुष्प तांबूल दक्षिणा आदि देवे तब **"शिवा आपः सन्तु"** आदि का प्रत्येक वस्तु के साथ उच्चारण करे। तब साथ ही उत्तर में ब्राह्मण लोग भी **"सौमनस्यमस्तु"** आदि कहते जावें।यथा- (यह वशिष्ठी हवनपद्धति का क्रम है।) पुस्तक मिलने का पता: **श्री सरस्वती प्रकाशन**, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी अजमेर

यजमान शिवा आप सन्तु (इस प्रकार कहे)

ब्रा०-सौमनस्यमस्तु। बोलकर शुभकामना करे।

यज०-अक्षताः पान्तु। इससे अक्षत देवे।

ब्रा०-मांगल्यमस्तु। बोलकर शुभकामना करे।

यज०-पुष्पाणि पान्तु। इससे पुष्प देवे।

ब्रा०-श्रीरस्तु। इससे आशीर्वचन कहे।

यज०-तांबूलानि पान्तु। इससे तांबूल देवे।

ब्रा०-ऐश्वर्यमस्तु। इससे आशीर्वचन कहे।

यज०-दक्षिणाः पान्तु। इससे दक्षिणा देवे।

ब्रा०-आरोग्यमस्तु। दीर्घायुः शांतिः पुष्टिः स्तुष्टि।

श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं चास्तु।

यजमान यत्कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया कर्मारम्भाः शुभा शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं ब्रह्मर्षिभि। समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण-वाच्यताम्। इस प्रकार कहे।

पुनर्यजमानो ब्रूयात्-व्रत नियम तपः स्वाध्याय ऋतुदमदान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

(यों यजमान कहे)

ब्राह्मण-समाहितमनसः स्मः।

यजमान प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राह्मण-प्रसन्ना स्मः।

ततो यजमानः अवनिकृत जानु मण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण (ताम्र) कलशं धारयित्वा भूमौं स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किञ्चिदुदकं पातयेत्। तथा ब्राह्मण वदेयुः।

इसके पीछे यजमान अपने दोनों गोड़ों को भू स्पर्श करके याने उखड़ू बैठकर कमल के फूल के समान अपने हाथों की अंजलि करके उसमें जलपूर्ण सुपूजित कलश रख कर उसे शिर से लगावे। इस समय ब्राह्मण लोग यजमान के पास दो पात्र रख दें और प्रथम पात्र में दूर्वा से अथवा पान से जल छोड़े। तब बोलें-

ब्राह्मणः शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्म्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु। द्वितीयपात्रे (दूसरे पात्र में) अनिष्टानिरसनमस्तु यत्पापं रोगम शुभम कल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु (हस्तयो') यद्यच्छ्रैयस्तत्तदस्तु। उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरा हरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नाधि देवताः प्रीयन्ताम्। (दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्) अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। अरुन्धतीपुरोगाः एकपन्त्य प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगा सर्वेवेदाः प्रीयताम्। आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मच्ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अंबिका सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। भगवतीकात्यायनी प्रीयताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। भगवतीऋद्धिकरी प्रीयताम्। भगवतीवृद्धिकरी प्रीयताम्। भगवतीसिद्धिकरी प्रीयताम्। भगवतीपुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती तुष्टकरी

प्रीयताम्। भगवन्तौ विध्नविनायको प्रीयताम्। सर्वा: कुलदेवता: प्रीयन्ताम्। सर्वाग्रामदेवता:प्रीयंताम्। सर्वा,इष्टदेवाताप्रीयन्ताम् (द्वितीय पात्रे) हताश्च ब्रह्मद्विष: हताश्च परपंथिन:। हताश्च विध्नकर्तार: शत्रव: पराभवं यांतु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतु पापानि शम्यंत्वीतय:। (पुन: प्र० पात्रे) शुभानि वर्द्धन्तां शिवा आप: संतु शिवा ऋतव:संतु शिवा अग्नय: संतु शिवा आहुतय: संतु शिवा ओषधय: संतु शिवा वनस्पतय: सन्तु शिवा अतिथय: संतु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐनिकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यंतां योगक्षेमो न: कल्पताम्।। शुक्रांगारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहिता: आदित्य पुरोगा: सर्वे ग्रहा प्रीयन्ताम् भगवान्नरायण: प्रीयताम्। भगवान् पर्जन्य: प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेन: प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रात: सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

ततो यजमान: कलशं: भूमौ निधाय प्रथमपात्रीय जलेन यजमानस्य सपरिवारस्य शिर: संमृज्य द्वितीयपात्रजलं एकान्ते पातयेत्।

फिर जयमान कलश को रख देवे। प्रथम पात्र कटोरी के जल से अपना

अभिषेक करके दूसरा त्याज्य पात्र किसी गरीब को दिलवादे। दोना हो तो फिकवादे फिर यजमान हाथ जोड़ कर ब्राह्मणों से कहे:-

अथ यजमानो ब्रूयात्ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन् कारकम्॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवंतु नः ॥१॥ भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रूवन्त (ब्राह्मणाः ॐ पुण्याहम् ३) पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥२॥ (यजमान) पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत् कल्याणां पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत् कल्याणं ब्रूवन्तु नः। भो ब्राह्मणः मम सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्ते, ब्रूवन्तु। (ब्राह्मण) ॐ कल्याणम् ॥३॥ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्याँ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपपादो नमतु॥ (यजमान सागरस्य च या लक्ष्मीर्महालक्ष्यम्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रूवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धि भवंतो ब्रवन्तु॥ (ब्राह्मणः) ॐ ऋद्ध्यताम् ॥३॥ सत्रस्य ऋऽद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽ अभूम। दिवं पृथ्व्यिां अदध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वज्योतिः। (यजमानः) स्वस्त्यस्तु ह्यविनाशाख्या नित्यं मङ्गल दायिनी। विनायक

प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रूवन्तू नः।। भो ब्राह्मणाः ममः सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवंतो ब्रूवन्तु।। (ब्राह्मण) ॐस्वस्ति।।३।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिः नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। (यजमानः) समुद्रमथनाज्जाता जगदान्द कारिका। हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रूवन्तु न भो ब्राह्मणा मम सपरिवारस्य गृहे श्रोरस्त्विति भवंतो ब्रूवन्तु (ब्राह्मणाः) ॐ अस्तु श्रीः ।।३।। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण।। (ततस्तिलकाशीर्वादः) विप्रेभ्यो दक्षिणा दानम्।। अब यों बोले-

अद्य पुण्याहवाचन सांगता सिद्धयर्थ पुण्याहवाचकेभ्यो नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां संप्रददे।। इति पुण्याहवाचनम्।।

गणपतिमातृका पूजनात् पूर्व वैश्वदेव करणम्।

यदि यह नहीं कर सके तो प्रायश्चित्त संकल्प करें।

इदं वैश्वदेव हवनीय द्रव्यं सदक्षिणाकमत्रावसरे वैश्व-देवा करण जनित प्रत्यवाय परिहारार्थ करण जनित

फलप्राप्त्यर्थ अमुक शर्मणे ब्रह्मणाय विष्णुरुपिणे तुभ्यमहं संप्रददे।

पश्चात् षड्विनायकादि पूजा

गेहूं से पूर्ण हल्दी से रंगे हुये कलश पर छः बिन्दियां देकर अथवा षटकोण माँडकर षड्विनायक पूजा करे-

ॐमोदाय नमो मोदमावाहयामि। ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदमावाहयामि। ॐ सुमुखाय नमः सुमुख मावाहयामि। ॐ दुर्मुखाय नमोः दुर्मुखमावाहहयामि। ॐ अविघ्नाय नमः, अविघ्नमावाहयामि। ॐ विघ्नकर्त्रे नमो विघ्नकर्तारमावाहयामि। ऐसा बोलकर साँगोपांग पूजा करे।

ॐ अम्बेऽअम्बालिके नमा नयति कश्चन्।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील वासिनीम्।।
अम्बिकाम् आवाहयामि।

ॐश्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणिरुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण। श्री महालक्ष्म्ये नमः महालक्ष्मीं आवा०।

गौर्यादिषोडशमातृका पूजनम्

(गेहुंओं के बनाये हुए मातृका मंडल पर)

गोरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृति पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

ॐ गौर्ये नमो गोरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि०। ॐ शच्यैनमः शचीमावाहयामि। ॐ मेधायै नमो मेधा मा०। ॐ सावित्र्यै नमः सावित्री०। ॐविजयायै नमो विजया मा०। ॐजयायै नमो जया मा०। ॐ देवसेनायै नमो देव०। ॐस्वधायै नमः स्वधा मा०। ॐस्वाहायै नमः स्वाहा मा०। ॐमातृभ्यो नमो मातृ०॥ ॐ लोकमातृभ्यो नमो लोक०। ॐ धृत्यै नमो धृतिम्०। ॐ पुष्ट्यैनमः पुष्टिम्०। ॐतुष्टयैनमःतुष्टिम्०। ॐ कुलदेवतायै नमः कुलदेवताम्०।

पोडशोपचारैः पूजनं घृतगुड़ नेवेद्यम्।
रुपं देहि जयं देहि भाग्यं भवति देहि मे॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

श्रीफलेन एषोऽर्घः।

अनेन पूजनेन षोडशमातृकाः प्रियंताम्॥

मातृकापूजनान्तरमायुष्यमंत्रजपः---

ॐ आयुष्यं वर्चस्यँ रायस्पोषमौद्भिदम्। इदँ हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादु माम्।। ॐन तद्रक्षाँसि न-पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजँ ह्येतत्।। यो विभर्ति दाक्षायणँ हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।।अ०३४।५१

ॐयदा बध्नन्दाक्षायणा हिरण्यँ शतानीकाय सुमनस्यमानः। तन्मऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।अ०३४।५२

इति आयुष्यमंत्रजपः

इसके बाद नांन्दीश्राद्ध करें-

।।संक्षिप्त नान्दी श्राद्ध।।

नान्दी श्राद्ध में दूर्वा या डाभ की सत्यवसु नामक विश्वदेवा की दो चटें बनावें-याने दूर्वा के गाँठ देकर पत्तल पर रख देवें। इसी प्रकार माता, पितामही: प्रपितामही, पिता, प्रमातामही, प्रपितामह की छह चटें बनावें तथा मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही, मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह की भी छह चटें बनावें। कुल १२ न बनाना चाहे तो छह ही बना लें। दो विश्वेदेवा की अर्थात कुल आठ बनावें। जो पिता जीवित हो तो उनकी न बनावें। सबको पत्तल पर विराजमान कर दें।

पश्चात्ताम्रपात्रे दधि कुंकुम यवाक्षत दूर्वा जलानि कीकृत्य सव्येनैव संकल्पं कुर्यात।

ताम्रपात्र या सराई में दही, रोली जौ, दूर्वा और फल इकट्ठे करके

संकल्प करें। एक पाद्य पात्र भी उपरोक्त वस्तुओं का पृथक बना लेवें। यह कर्म सव्य ही रहकर करें, फिर संकल्प करें।

ॐ तत्सदद्य मासोत्तमेऽमुकमासे अमुक पक्षे तिथौ वासरे अमुककर्माङ्गीभूतं आभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये।

पात्रस्थ यवदधि दूर्वादीन् दूर्वया चालयन् निम्न मन्त्रं ब्रूयात्। यत्र वृद्धि शब्द आगच्छेत्तदा पत्रावल्यां विराजमानेषु विश्वेदेवादिषु जलं त्यजेत्।

पीछे पात्र में जौ, दही, दूर्वा आदि हैं उनको दूर्वा या डाभ से हिलाता जावे और नीचे लिखे मन्त्र बोलता जावे। जहाँ 'वृद्धि' आवे वहाँ दूर्वाकरों से कुछ जल लेकर पत्तल पर विराजमान विश्वेदेवा आदि पर छोड़ता जावे।

ॐसत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐभूर्भुवः स्वः पाद्यं स्वाहा, अनामयं च वृद्धिः।

इसी प्रकार सव्य ही रह कर पितृगणों पर जल छोड़े यथा-

अमुकगोत्रा मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्याः ॐभूर्भुवः स्वः इदं पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।

अमुकगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।

अमुकगोत्रा मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः नान्दीमुखाः ॐभूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धि।

ॐ श्रगणेशाम्बिके भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं

च वृद्धिः।

पाद्य पात्रं परित्यज्य आचमनं प्राणायामं कर्मपात्रं स्थापयेत्।

पाद्यपात्र को हटाकर आचमन तथा प्राणायाम करे कर्मपात्र स्थापना करे।

कर्मपात्रायासनं आसने पात्रं पात्रे पवित्रम्।

अब कर्मपात्र के लिये आसन धरे, आसन पर पात्र धरे, उसमें पवित्र दुर्वाकुरादि रख देवें।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवंन्तु पीतये शंयोरभि स्त्रवन्तु नः।

इस मन्त्र से उसमें जल भरे। यथा-

ॐयवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे स्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताल्लोकाः पितृसदनाः पितृसदनमसि।

इस मंत्र से उसमें जौ डाले चन्दन तथा पुष्प डाले। पीछे-

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण धायुँ षि तारिषत्।

इस मन्त्र से उसमें दधि डाले फिर

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृध्दश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

इसमें पूर्वादि दिशाओं में अक्षत फेंककर दिग्बंधन करदे। फिर बोले-

संकल्प विधिना आभ्युदयिक श्राध्दोपहाराणां पवित्रतास्तु। देश काल पात्रोपहार द्रव्य श्रद्धा सम्पदस्तु। पीछे

सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः आसन गन्धाद्यु पचार कल्पनं स्हानामयंच वृद्धिः।

इसे बोलकर कुशा से जल हिलाता जावे। "वृद्धि" आवे तब विश्वेदेवा पर छोड़े--

अमुकगोत्रा मातृपितामहो प्रपितामह्यः नांदीमुख्याः। ॐ भूर्भुवः स्वः आसन गन्धाद्युपचार कल्पनं स्वाहानामयञ्च वृद्धिः ॥१॥

अमुकगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहा० (पूर्ववत्) ॥२॥

अमुकगोत्रा मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानांदीमुखाः० (पूर्ववत्) ॥३॥

गणेशाम्बिकयो ॐ भूर्भुवः स्वः आसनगन्धाद्यु पचार कल्पनञ्च वृद्धिः ॥४॥

इसके बाद--

इदमर्च्चितं वो ज्योतिः सूर्योज्योतिः दीपकंः ज्योतिः पुष्पम्।

ऐसा बोलकर सूर्य वा दीपक की तरफ अक्षत पुष्प फेंक दे।

फिर "**सत्यसु संज्ञका विश्वेदेवा नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्यन्तं दास्यमानमन्नं यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहानामयञ्च वृद्धिः।**

फिर पूर्ववत् "अमुकगोत्र" से चारों वाक्य बोलते हुए--

युग्म ब्राह्मण भोजनं आमान्नं समुत्सृजे।

द्राक्षामलक नैवेद्यं तन्निष्क्रयं दक्षिणां च दातुमहमुत्सृजे।

सीधा, दाख आँवले और दक्षिणा चारों पर चढ़ावें।

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।
ऐते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥

पश्चात् निम्न मंत्रेण मुद्रया पात्रटङ्कारं कुर्यात।

पीछे नीचे के मन्त्र को बोलता हुआ मुद्रा से पात्र को बजा देवे।

इडामग्ने पुरुद७ स७ सनिंङ्गो शाश्वत्तमँ७हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।अ०१२।५१

फिर ऐसा बोल कर जल छोडें।

अनेन कर्मणा नान्दीमुख देवताः प्रीयन्ताम्। वृद्धिः शिवंशिवम्। कृतस्यास्य नांदीश्राद्धस्य विधेर्यन्यूनमति- रिक्तं तत्सर्व भवतां ब्राह्मणानां वचनात्। श्रीगणेशाम्बिकयोः प्रसादत सर्वविधेः परिपूर्णतास्तु ॥

इति नान्दीश्राद्ध प्रयोगः ॥

अथ ब्राह्मणवरणम्-

पूर्वमाचार्यस्य वरणं पश्चात् सर्वेषाम्।

अब आचार्य का तथा पीछे अन्य ब्राह्मणादि का वरण करें-

आचार्य प्रति यजमानों ब्रूयात्-

अब आचार्य से यजमान प्रार्थना करें-

अस्मिन्नासने आस्यताम् (आप इस आसन पर बिराजें)

आचार्यों ब्रूते-आस्ये (आचार्य कहे कि बैठता हूँ)

ततो यजमानो निम्नमंत्रेण पादप्रक्षालन कुर्यात्।

अब यजमान आगे के मंत्र से विप्र का दक्षिण पैर धोवे।

यत्पुण्यं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे।

तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ। विप्राणाँ पादशौचने।।

फिर नीचे के मंत्र से ब्राह्मण के तिलक करें-

नमोऽस्त्वनंताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।

सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटि युगधारिणे नमः।।

उनके मोली बाँधकर व्रतबंध करें-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

पश्चात् निम्नलिखित संकल्प करके वस्त्रादि भेंट करके उनका आचार्य पद पर वरण करें।

ॐ अद्येत्यादि नवग्रहमखहोमकर्म कर्तुमेभिश्चन्दन ताम्बूल कुण्डलांगुलीयक कमण्डलु वासोभिराचार्यत्वेन अमुकगोत्रममुक शर्माणं अमुक वेदाध्यायिनं त्वामहं वृणे। इति वृणुयात्।

उन्हें चन्दन ताम्बूल लोठा अंगूठी कुण्डल धोती अंगोछा यज्ञोपवीत आसन आदि भेंट करें।

आचार्यों वृतोस्मीत्ति प्रतिवचनं दद्यात्।

आचार्य उन्हें लेकर 'वृतोऽस्मि' इस प्रकार करे।

अब आचार्य नीचे के मंत्र से कुशायुक्त जल बिन्दुओं से यजमान का अभिषेक कर दें-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

अब आचार्य से प्रार्थना करे। यथा-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनाँ बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

अथ ब्राह्मणवरणम्- ब्राह्मणं प्रति यजमानो ब्रुयात्- अस्मिन् आसने आस्यताम्।

यजमान ब्राह्मण से प्रार्थना करें कि आप इस आसन पर बिराजिये

ब्राह्मणः आस्ये। ब्राह्मण कहे कि बैठता हूँ।

ततो यजमानः- नमोस्त्वनन्तायेति मंत्रेण पादप्रक्षालनं कुर्यात्। गंधपुष्प माल्यादिभिंरभ्भर्च्य अद्येत्यादि नवग्रहमखहोमकर्मणि न्यूनाधिक्य परिहारार्थमेभिश्चन्दन तांबुल-कुण्डलांगुलीयक कमण्डलु वासोभिर्ब्रह्मत्वेन। अमुकगोत्रममुक शर्माणं अमुक वेदाध्यायिनं त्वामहं वृणे।

फिर यजमान पूर्ववत् उनका पाद प्रक्षालन करें। हाथ धोकर तिलक करें, मोली बांधें और पूर्ववत् वरण सामग्री आसन धोती अंगोच्छा पंचपात्रादि भेंट करें-

ब्राह्मणः-- वृतोस्मि इति प्रतिवचनं दद्यात्।

ब्राह्मण कहे कि आपके द्वारा मैं वृत.हो गया हुँ। फिर यजमान प्रार्थना करें-

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

अब ब्रह्मा निम्न मन्त्र बोलता हुआ कुशस्थ जल बिन्दुओं से यजमान का अभिषेक कर दे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति-दक्षिणाम्। तया च श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

एवंमेवऋत्विग्वरणम्- ऋत्विजं प्रति यजमानो ब्रूयात् इदमासनमास्यताम्। ऋत्विक्-आस्ये। ततो यजमानस्तस्य पाद प्रक्षालनं तिलकादि कृत्वा वरण सामग्री तस्मै दद्यात्। और संकल्प में ऐसा बोलें- पूर्वोक्त नवग्रहमखहोम कर्मणि ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्॥

पूर्ववत् वरण करके प्रार्थना करें

ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः।
अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं च मखे भव॥

पूर्ववत् ऋत्विक बोले-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। तया च श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते॥

इत्यादि और कुशयुक्त जल बिन्दुओं को यजमान पर छोड़ें।

एवमेवाध्वर्यु होतारं सदस्यमुपद्रष्टारं च वृणुयात्।

इसी प्रकार अधिक ब्राह्मण हों तो किसी को होता, किसी को अध्वर्यु आदि बनावें।

यजमान सबसे प्रार्थना करे:

त्वं गुरुश्च पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणम्।
त्वत् प्रसादाच्च विप्रर्षे सर्वं मेस्यान् ममोगतम्॥१॥

आपद्विमोक्षणार्थाय कुर्युर्यज्ञमतन्द्रिता।
ऋत्विजः सहिताः शुक्ला संयुताः सुसमाहिताः॥२॥
आचार्येण च संयुक्ताः कुर्यः कर्म यथोदितम्
भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वधर्म भृतांवर॥३।
वितते मम यज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज॥

इति ब्राह्मणादि वरणम्

अथ जलयात्रा विधान

सपत्नीक यजमान आचमन प्राणायामान्तर संकल्प करें। उसमें अमुक देव प्रतिष्ठार्थ जलयात्रां करिष्ये" बोलकर गणपति प्रतिमा का जो पूजन किया था, उस थाली को ब्राह्मण लेवे। छोटा काम हो तो यजमान गणपति को हाथ में या दोने में लेकर चले। सौभाग्यवती स्त्रियाँ जल लाने के कलश लेकर चलें।

ब्राह्मण लोग मार्ग में "आनो भद्रादि" भद्र सूक्त को बोलते जावें, जो मंडप प्रवेश समय में छपा है।

तालाब या कूप के किनारे पंचगव्य से तथा गोमय से भूमि को पवित्र करके उस पर चतुरस्त्र चौकोण मंडल बनाकर साँठिया मांड कर सपत्नीक यजमान को उदङ् मुख या पूर्वाभिमुख बैठाकर उसके दाहिने भाग में आटे से अष्टदल पद्म बनावे। अथवा बड़े सारे लाल वस्त्र पर चांवलों से अष्टदल पद्म बनावें और नव कलशों को आठ पंखड़ियों पर और एक तांबे के मुख्य कलश को मध्य में विजाजमान कर दें। १८ कलश अलग भी लाने चाहिए।

फिर संकल्प करें कि "**जलयात्राङ्गभूत श्री वरुणदेवता प्रीत्यर्थ गणेश जलमातृ-जीवमातृ-स्थलमातृ-सप्तसागर योगिनी क्षेत्रपाल-जलवरुण भूमिपूजन पूर्वकं नववर्द्धनी कलशेषु वरुण पूजनं करिष्ये।**

सर्षप विकरण

ॐइन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात् पातु प्रचेतास्त्वा रुद्रै. पश्चात्पातु मनोजवास्त्वा पितृभिर्दक्षिणतः पातु विश्वकर्धा त्वादित्यैरुत्तरतः पात्विदमहं त्तप्तं वार्वाहिर्धा यज्ञान्निः सृजामि।

पीछे ताम्रपात्र में या थाली में गणेशजी की पूजा करें।

यथा महागणेशमावाहयामि। भो गणपते सुप्रतिष्ठितो वरदोभव। महागणपतेये नमः। आसनं पाद्यं अर्ध्य आचमनं पंचामृतस्नानं शुद्धोदकस्नानं।ततः गन्धानुलेपन पूर्वकं पत्रपुटे अक्षतपुंजे संस्थाप्य महागणपतये नमः वस्त्रोपवस्त्रे। वस्त्रान्ते आचमनीयं पुनः यज्ञोपवीतं पुनः गधं पुष्पं दूर्वाकुराणि सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि। पश्चात् धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि महागणपतये नमः नैवेद्य निवेदयामि। मध्ये पानीयं। उत्तरापोशनं। हस्तमुखप्रक्षालनार्थे जलं। पुनः आचमनीयम्। करोद्वर्तनार्थे गंधंसमर्पयामि। मुखवासार्थे तांबूलम्। सुवर्णदक्षिणां। आर्तिक्यं पुनः पुष्पांजलिम्। पुनः विशेषार्ध्यम्। प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारः पुनः सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। हस्ते जलं गृहीत्वा अनया पूजया श्रीगणपतिः प्रीयताम्। एवमेव गौरी पूजयेत्॥

पीछे जलमातृका

वस्त्र पर या थाली में उदक्संस्थ सप्त अक्षतों के मण्डल बनाकर या सात बिंदियों पर पूजा करें--

१. ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। भो मत्सि इहागच्छेह तिष्ठ।

२. ॐभूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मीमावाहयामी स्थापयामी। भो कूर्मी इहागच्छेह तिष्ठ।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावा० स्था० भो वाराहि इहागच्छेह तिष्ठ।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः मांडूक्यै नमः मांडूकीमावा० स्था० भो मांडूकि इहागच्छेह तिष्ठ।

५. ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावा० स्था० भो मकरि इहागच्छेह तिष्ठ।

६. ॐ भूर्भुवः स्वः ग्राहक्यै नमः ग्राहकीमावा० स्था० भो ग्राहकी इहागच्छ इह तिष्ठ।

७. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रौचिक्यै नमः क्रौचिकीमावा० स्था० भो क्रौचिकि इहागच्छ इह तिष्ठ।

मनोजूति० इत्यादि मंत्रैण प्रतिष्ठिताः वरदा भवत्।। पश्चात् ''मत्स्यादि जल देवताभ्यो नमः बोलता हुआ पूजा करे।

पश्चात् सप्ताक्षत पुंजेषु सप्तजीवमातृकाः

१. ॐ भूर्भुवः स्वः कुमारीमावाहयामि स्यापयामि।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः धनदामावा० स्यापयामि।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दा मा० स्यापयामि।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः विमलामा० स्यापयामि।

५. ॐ भूर्भुवः स्वः मंगलामा० स्यापयामि।

६. ॐ भूर्भुवः स्वः अचलामा० स्यापयामि।

७. ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मामा० स्यापयामि।

प्रतिष्ठां पूजनञ्च। अनया पूजया कुमार्यादयः जीवमातृकाः प्रीयंताम्।।

सप्ताक्षतपुंजेषु स्थलमातृकाः

१. ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मिमावा० स्था०।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी मा० स्था०।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महा० स्था०।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः पानादेव्यै नमः० महा० स्था०।

५. ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः० महा० स्था०।

६. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः० महा० स्था०।

७. ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः० महा० स्था०।

प्रतिष्ठापनं पूजनम्। अनया पूजया सप्तस्थलमातृकाः प्रीयंताम्॥

अक्षतपुंजोपरि सप्तसागरान्

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः इति मंत्रेण आवाहनम्। मनोजूतिर्जुषताम् अनेन प्रतिष्ठां कृत्वा पूजनम्। अनया पूजया सप्तसागराः प्रीयन्ताम्।

अब जल में ६४ योगिनी का पूजन करें।

ॐ "चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः" पूजन करके

अब जलाशय पर वायव्य कोण में सिन्दूरादि से क्षेत्रपाल बनावें।

क्षेत्रपालावाहन

ॐ क्षत्रस्य योनिरित्यस्य प्रजापतिऋषिः द्विपदा विराड् गायत्रीछन्दः क्षेत्रपालो देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः। (जल छोड़े)

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मा त्वा हिंऽ सीन्मा मा हिंऽ सीः। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल मावाहयामि स्थापयामि। भो क्षेत्रपाले इहागच्छ इह तिष्ठ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः इति गन्धाद्यु पचारेः पूजयेत्।

बलिदानम्-क्षेत्रपाल के आगे दीपक, उड़द, दही भात की बलि रख के बोले--

क्षेत्रपाल महाबाहों महाबल पराक्रम।
बलिं गृहाण देवेश क्षेत्र रक्षण हेतवे॥

ॐ भूर्भुवः क्षेत्रपालाय नमः सदीप-दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

अब कूप या जलाशय पर जलपूजन-

लवणेक्षु-सुरासर्पिर्दधि- क्षीरजलमययान् सागरानाबाहयेत्। ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ २ ऽउदारदुपाऽ शुना सममृतत्वमानट्।घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः।

जलाशयस्थित जलपूजनम्

ॐ अद्भ्यो नमः। पुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः॥

जले वरुणपूजनम्। तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशऽ समान आयुः प्रमोषीः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणं पूजयामि। प्रतिष्ठां पूर्ववत्

बलिदानञ्ज। (पेड़े आदि का बलिदान भी देवे।)

जल पंचामृत-प्रक्षेपः (पंचामृत मंत्रैः)

जले स्त्रुवेण द्वादशघृताहुतीर्जुहूयात्

१. ॐ अद्भ्य स्वाहा। इदं अद्भ्यो न मम।
२. ॐ वार्भ्य स्वाहा। इदं वार्भ्यो न मम।
३. ॐ उदकाय स्वाहा। इदं उदकाय न मम।
४. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। इदं तिष्ठ०।,,
५. ॐ स्त्रवन्तीभ्यः स्वाहा।इदं स्त्रवं०।,,
६. ॐ स्यन्दमानाभ्य स्वाहा। इदं स्यन्द०।,,
७. ॐ कूप्याभ्य स्वाहा। इदं कूप्याभ्यः।,,
८. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। इदं सूधाभ्यः।,,
९. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। इदं धार्याभ्यः।,,
१०.ॐ अर्णवाय:स्वाहा। इदं अर्णवाय०।,,
११.ॐ समुद्राय स्वाहा। इदं समुद्राय०।,,
१२.ॐ सरिराय स्वाहा। इदं सरिराय०।,,

हस्ते जलमादय इदं सर्व जलाधिपतये सपरिवार वरुणाय, न मम।

अर्ध्यत्रयदानम् (वरुणस्योत्तंभनमसि) इति त्रिवारम्।

(अर्घ देवे)

पुनः जले फलप्रक्षेपः। जल में फल गेर दे।

अथाग्रे-भूमि पूजनं-ग्रहशांतिवत् कलशस्थापनम्।

यथा नव कलश स्थापना प्रयोग--

ॐ मही द्यौरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः द्यावापृथिवी देवते भूमिस्पर्शने विनियोगः। (जल छोड़ें) अष्टदलाग्रे भूमि स्पृष्ट्वा (पृथ्वी के हाथ लगा के) बोले-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥अ०८।३२

अष्टदलों के नीचे जौ रखे तब बोले

ॐ औषधयः इत्यस्य बन्धुऋषिः निचृदनुष्टुप् छन्दसी औषधयो देवता यव प्रक्षेपे विनियोगः (जल छोड़ें)

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तᳪ राजन् पारयामसि॥

कलश स्थापन

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः॥ पुनरुर्जा निवर्त्तस्व। सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः। अ० ८।४२

कलशों पर सप्तदर्भा से छींटे देवे यानि पवित्र करें--

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

स्थिरीकरण-

ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् पृथुर्भव

सुषदस्त्वमग्ने पुरीषवाहण: ।।

नवकुम्भों में जल भरें

१. मध्यकलश में जल भरें--

ॐ समुद्र ज्येष्ठाः सलिलस्थ मध्यात्पुनानायंत्य निविशमानाः। इन्द्रो या वज्रो वृषभोररादता आपो देवीरिहमामवन्तु।।

२.पूर्वकलशे-ॐ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः। समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

३.आग्नेयकलशे -ॐ या सा राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानुते अवपश्यञ्जनान्ना। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

४.दक्षिणकलशे-ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासूर्ज मदन्ति। वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

५.नैऋत्यकलशे-ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षङ्गच्छ स्वाहा देव॑ सवितारं गच्छ स्वाहा। मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा॑ सि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा, सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नमो गच्छ स्वाहाग्निं, वैश्वानंरगच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवन्ते धूमो गच्छतु स्वज्योतिः पृथिवीं

भस्मना पृण स्वाहा॥

६.पश्चिमकलशे-ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा। शिंमिदाय त्वा वाताय स्वाहा॥

७.वायव्यकलशे-ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतांङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा। अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा॥

८.उत्तरकलशे-ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके॥

९.ईशानकलशे जलपूरणम-ॐ वरुणस्यो त्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ सर्जनीस्थों वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

सबकुम्भों में धान्य प्रक्षेप

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्भात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि॥अ० १।२०

गन्ध प्रक्षेप

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥

कलशं वस्त्रेण वेष्टनम्।

कलश के मोली बांधे--

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

अथ सर्वौषधिः।

कलश में सर्वोषधि गेरना उसका मन्त्र

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनेनु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च।

अथ दूर्वा प्रक्षेपः।

दूर्वा गेरना

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।

अथ कलशे कुशा प्रक्षेपः।

कुशा गेरने का मन्त्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

सप्तमृत्तिका-सप्त मृत्तिका गेरे-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः

पूगीफलम्- पूगीफल कलश मे गेरे-

ॐ या फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वऽ हसः॥

पंचरत्नम्- पंचरत्न गेरने का मन्त्र-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दध-द्रत्नानि दाशुषे॥

दक्षिणा-दक्षिणा गेरे

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेमः॥

पंच पल्लवाः- वट, पीपल, गूलर, आम, पलाश

ॐ अश्वत्थे वों निषदिनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत सनवथ पुरुषम्।

पूर्णपात्रम्।

पात्र में चांवल भरकर कलश पर पूर्णपात्र रखते हुए यह मन्त्र बोले-

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा ऽइ मूर्जᳬ शतक्रतो॥

नारियल के कुंकुम लगा कर मोली बांधकर कलश पर स्थापित करता हुआ यो बोले-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्ण न्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोंकम्मऽइषाण॥

फिर कलश पर वरुण की प्रतिष्ठा करे यह मन्त्र बोले-

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशᳬ समान आयुः प्रमोषीः॥ ततः षोडशोपचारैः पूजनम्।

प्रार्थना

कलशस्य मुखे विष्णुग्रीवायां च महेश्वरः।
मूले चैव स्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथः यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
गायत्री चैव सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु यजमानस्य दुरित क्षय कारकाः।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
आयान्तु यजमानस्य दुरित क्षय कारकाः।
वरुणदेवता प्रसादात् सर्वविधे पूर्णतास्तु॥

नोट:- स्मरण रहे जहां जहां कलश स्थापन होंगे वहां वहां ये सारे संस्कार होंगे। यहां केवल नौ कलशों में जल डालने के मन्त्र अधिक है।

सर्वत्र नवें मन्त्र "वरुणस्यो त्तंभनमसिं०" से ही जल भरा जाता है।

जल यात्रा से नगर यात्रा जाते समय अर्द्ध मार्ग में भैरव पूजन-

चोराहे पर गोबर से भूमि लीपकर वहां अक्षतों पर सुपारी रखकर या पाषाण के सिंदूर लगाकर क्षेत्रपाल का आह्वान करें।

ॐ नहिस्पशमित्यस्य विश्वामित्रऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः क्षेत्रपालो देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः। मन्त्र ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

पूजनम्-क्षेत्रपालाय नमः स्नानं वस्त्रं इदमनुलेपनं। इमे अक्षताः। इमानी पुष्पाणिः। इमानी सौभाग्य द्रव्याणि। अयं धूपः। अयं दीपः। इदं नेवेद्यं। इदं फलम्। इदं तांबूलम्। इयं दक्षिणेति उपचारैः पूजनम्।

अब बलिदान

सदीपमाष भक्तनलि सामने रखकर विनियोग सहित मंत्र बोले-

ॐ क्षत्रस्येत्यस्य वरुणऋषिः याजुषी गायत्री छन्दः। तार्प्य देवतं बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्षत्रस्योल्बमसि क्षत्रस्य जराय्वसि क्षत्रस्य योनि-रसि

क्षत्रस्य नाभिरसीन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि मित्रस्यासि वरुणस्यासि त्वयायं वृत्रं बधेत्। दवासि रुजासि क्षुमासि। पात्तैनं प्राञ्चं पात्तैनं प्रत्यञ्चं पात्तैनं तिर्यञ्च दिग्भ्यः पात ।। भगवनॅ क्षेत्रपाल भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख अवतर अवतर कपिल पिंगल ऊर्ध्वकेश जिह्वाललन छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि कुरु कुरु मुरु मुरु चल चल लं लः हां हीं हूं हैं ॐ भगवन क्षेत्रपाल मम यज्ञं रक्ष रक्ष बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। ॐक्षेत्रपालायनमः सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि। अथ उपम् पृशेत्। क्षेत्रपालं नमस्कुर्यात्-

ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप पूजाँ बलि गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ।। आयुरारोग्यदो भूयाः निर्विघ्नं कुरु सर्वदा। मा विघ्नमास्तु में पापं मा सन्तु परिपन्थिनः सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः।

संकल्प-अनया पूज्या क्षेत्रपालः प्रीयताम् ।।

फिर हाथ पैर धोकर आचमन करके यज्ञमण्डप के पश्चिम द्वार पर आकर खड़े रहें।

फिर पुत्रवती सुवासिनी उसकी आरती करें। पीछे उसी द्वार से यज्ञमण्डल में प्रवेश करके लाये हुये नौ (९) कलशों को-

पश्चिम दिग्भाग में वारुणमण्डल के अधोभाग में भूमि पर स्थापित कर देवें। वरुणमण्डल नहीं बनाया हो तो प्रधान के पास इन २७ कलशों को रख दें। आगे इनके रखने के स्थान निर्धारित करेंगे।

तत्तोयं (कलशीय जलं) मणिके क्षिपेत्

९ कलशों का कुछ-कुछ जल मणिक में भी पधरा देवें।

अथ मण्डप प्रवेश विधि

सपत्नीक पुत्रपौत्रदि युक्त यजमान आचार्यादि के साथ मंगलघोष से और "आनो भद्रा" इत्यादि भद्रसूक्त के पाठ से कलश हाथ में लिये हुए मंडप में पश्चिम द्वार से प्रवेश करें।

श्री गणेश, अम्बिका, वरुण कलश तथा मातृका मण्डल ब्राह्मणों के हाथों में थाल में रखकर महामण्डप या प्रसाद को प्रदक्षिणा करके पश्चिम द्वार से प्रवेश करें।

प्राङ्मुख होकर भूमि की प्रार्थना करें पहले भूमि पूजा करें-

ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शंखपद्मधरां चक्रशूल हस्तां धरा भजे॥
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभि वन्दिता॥
ॐ भूम्यै नमः (ऐसा बोलकर)-
उत्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्रांगैर्लीलया देवि यज्ञाःर्थ प्रणमाम्यहम्॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च् धनं रुपं च पूजिता,॥
गृहाणार्ध्यमिमं देहि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।

ॐ भूम्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। ततो गन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्यैर्भूमिं अर्चयेत्॥

इस प्रकार यजमान ऋत्विजों सहित पश्चिम द्वार से प्रवेश करें। यजमान पत्नी दक्षिणद्वार से प्रवेश करे। ऐसी भी प्रथा है।

पश्चात् अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा करके अग्निकोण में गोधूमराशि पर कुंभों को स्थापित कर देवें।

होमद्रव्य को पूर्व द्वार से लावें। दान द्रव्य आवे तो दक्षिण द्वार से, पूजार्थ द्रव्यानयन उत्तरमार्ग से करें।

अथ दिग्रक्षणम्

बायें हाथ में गौर सर्षप (सरसों) लेकर रक्षोघ्न सूक्त का पाठ करें यथा

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवी मिदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यम सबन्धुर्निचखानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि। यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ् किरामि॥१॥

ॐ रक्षोहणो वो बलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणों वो बलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां बलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां बलगहनौ पर्यूंहामि वैष्णवीं वैष्णवमसिवैष्णवास्थ।२।

ॐ रक्षासां भागोऽसि निरस्तं॑ रक्ष ऽइदमहं॑ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहं रक्षो ऽवबाध ऽइदमहं॑ रक्षोऽधमं तमोनयामि। घृतेन द्यावापृथिवि प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥३॥

ॐ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत् ॥४॥

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवां २ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥५॥

अपक्रामन्तु ते भूता ते भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषाम ऽविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥
यदत्र संस्थितं भूत स्थानमाश्रित्य सर्वतः।
स्थानत्यक्त्वा तु तत्सर्व यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
भूतप्रेतपिशाचाद्याः अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवंत्विमाम्॥
भूतानि राक्षसा वापि ह्यत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वऽप्य पगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहन्।

इन मंत्रों से सरसों बिखेर देवें। और वामपाद से तीन बार भूमि का ताड़न कर दें। फिर उदक का स्पर्श कर ले या मंत्र से छींटे दे देवें पंच गव्य भी छिड़क देवें।

अथ प्रथम धान्याधिवास:

कई प्रान्तों आदि में नवीन मूर्तियों का धान्याधिवास भी कराया जाता है। अत: जो करना चाहें वहाँ सपत्नीक यजमान को कुशासन पर बैठाकर संकल्प करावें: उसमें यह बोले-

देश कालो संकीर्त्य ममग्रहे प्रचुरधान्य पुत्र पौत्रादिसुख-सम्पत्यादि निवासार्थ अमुकमूर्तीनां धान्याधिवांस करिष्ये।।

ऐसा संकल्प करा के गोबर से लीपी हुई शुद्ध भूमि पर वस्त्र बिछाकर कुछ धान्य बिखेर कर भूम्यादि पूजन करके ज्येष्ठादि क्रम से देवमूर्तियों को स्थापित करें। फिर षोडषोपचार से पूजा करके सारे कुटुम्ब के लोगों से मूर्तियों पर बहुत सा धान्य डलवा देवें।

मंडप प्रवेशानन्तर

सर्व प्रथम स्नानादि से शुद्ध सपत्नीक यजमान को पूर्वाभिमुख बैठाकर, गठजोड़ा जोड़ दें।मंत्र यह हैं-

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्य माना:। तन्म ऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्मा ञ्जरदष्टिर्यथासम्।

यजमान को कुशा की पवित्री पहनावें।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्वते पवित्रपते पवित्र पूतस्म यत्कामः पुने तुच्छकेयम्॥ आचमनं प्राणायामं कृत्वा गुरु गुरुंमन्त्रं च च स्मृत्वा-

पीछे आचमन प्राणायाम के बाद गुरु और गुरु मन्त्र का स्मरण कर लेवें। पश्चात् शरीर के मार्जन करें। तथा-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुन्डरीकाक्षं बाह्याभ्यंतरः शुचिः।

फिर पृथ्वी के छीटे दें-

पृथ्वि त्वथा धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता
त्वं च धारय मा देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पुनः आचार्य नीचे लिखे मन्त्र से पत्ते अलग रखे कूं कूं से यजमान के मस्तक पर मंगल-तिलक करें-

ॐ स्वस्तिं नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।स्वस्ति नस्ताक्ष्यों ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

पुनः आचार्यादि हाथ में अक्षत लेकर 'भद्रसूक्त' पढ़े-

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽअपरितासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां-देवाना৩ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवान৩ संख्यमुपसेदिमा वयं देवा न ऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्।

अर्यमणं वरुण७ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥ तन्नो, वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्योंऽअरिष्टिनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह॥७॥ भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षमभिर्यजत्राः। स्थिरैङ्गैस्तुष्टुवा७ सस्तनूभिर्व्य शेमहि देवहितंयदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा ऽअदितिः पंच जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष-७ शांतिः पृथिवी शाँतिरापः शांतिरौषधय शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिब्रह्म शांतिः सर्व७ शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शाँतिरेधि॥११। यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शंनः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु॥

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

गजाननंभूत-गणाधि सेवितं, कपित्थ जम्बूफलचारु भक्षणम्।उमासुतं शाक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पंजजम्॥१॥

ॐ सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो, विघ्ननाशो विनायकः॥२॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि, यः पठेच्छुणुयादपि॥३॥
विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव, विध्नस्तस्य न जायते॥४॥
अभीप्सितार्थ-सिद्धयर्थ, पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविध्न हरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः॥५॥
वक्रतुण्ड!महाकाय! कोटि सूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव!,सर्वकार्येषु सर्वदा॥६॥

॥अथ श्री विष्णु वन्दना॥

स शंख चक्रं स किरीट कुण्डलं स पीतवस्त्रं स रसीरुहेक्षणम्।
स हार-वक्षःस्थल कौस्तुभप्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥१॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्दबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेस्तेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि॥२॥

शुक्लाम्बरधरं देव, शशि चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्वं--विघ्नोप शान्तये।।३।।
सर्वदा सर्व कार्येषु, नास्ति तेषाम मंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः।।४।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।५।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु, त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं, ब्रह्मे शान जनार्दनाः।।६।।
विनायकं गुरुं भानुं, ब्रह्म विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणौम्यादौ, सर्वकार्यार्थ---सिद्धये।।७।।

।।अथ गौरी-वन्दना।।

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये !, शिवे ! सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि!नमोऽस्तु ते।।१।।

।। अथ गुरु-वन्दना ।।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, त स्मै श्रीगुरवे नमः।।१।।
अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञनाञ्जनशालाकया।
चक्षुरुन्मोलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।६।।

श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥१॥

श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ॥२॥

श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः ॥३॥ श्री शची पुरन्दराभ्यां नमः ॥४॥ वाणी-हिरण्य गर्भाभ्यां नमः ॥५॥ माता-पितृभ्यां नमः ॥६॥ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥७॥ कुलदेवताभ्यो नमः ॥८॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॥९॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥१०॥ स्थानदेवताभ्यो नमः ॥११॥ सर्वभ्यो देभ्वेयो नमः ॥१२॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥१३॥ सर्वेभ्यः परमर्षिभ्यो नमः ॥१४॥ श्री-गुरुचरणकमलेभ्यो नमो नमः॥१५॥ ॐ परब्रह्मणे नमः ॥१६॥

पुनः यजमान जल-अक्षत द्रव्य हाथ में लेकर प्रधान-संकल्प करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महा-पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽन्हिं-द्वितीये परार्द्धे, श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टविशिंतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे, भूर्लोके, जम्बुद्वीपे, भरतखण्डे, भारतवर्षे, आर्य्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे श्री पुष्करारण्ये अमुकनगरे ग्रामे विक्रमादित्य राज्यतोऽमुकसंख्याके अमुकनाम्नि सम्वत्सरे, श्री सूर्यैऽमुकायनेऽमुक गोलावलम्बिते श्री गगन चक्रचूड़ामणौं अमुकर्तौ:समांगल्य- प्रदे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौं अमुकवासरे, प्रवर्तमाने अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते शशांके अमुकराशिस्थिते श्रीमार्त्तन्डे

अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथाराशि-स्थानस्थितेषु सत्सु, एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुक-प्रवरो अमुकशाखाऽध्यायी, अमुकनाम, (शर्मा-वर्मा-गुप्तोऽहं) मम सकुटुम्बस्य सर्वापच्छान्तिपूर्वकं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, सर्वारिष्ट-निवारणार्थम खण्ड- लक्ष्मी-प्राप्त्यर्थञ्च (अमुक-कामना सिद्ध्यर्थं) श्री गणपत्यादि- देवतानां पूजन पूर्वकम्, अमुकदेव प्रतिष्ठा हवनादि कर्माणि करिष्ये।

यजमान दोनों हाथ जोड़कर श्री गणेशजी का ध्यान करें-

अथ ध्यानम्- उच्चैर्ब्रह्मांड खण्ड द्वितयसहचरं कुम्भ युग्मं दधान, प्रेङ्मुखं नारारिपक्षप्रतिभटविकट श्रोत्रतालाभिरामम्। देवं शम्भोरपत्यं भुजगपतितनुस्पर्धिवर्धिष्णुहरतं, ध्याये पूजार्थमीशं गणपतिममलधीश्वरं कुञ्जरास्यम्॥

पूर्ववत् पूजापात्र में वरूणावाहन

ॐ वरूणस्योत्तम्भनमसि० तथा कलशस्य मुखेविष्णु०, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य० इत्यादि पठेत्।

पश्चात् स्वस्तिक तथा द्वादश पर गणपति पूजा करे। यथा-

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहित श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ध्यायामि॥

यजमान हाथ में रोली चावल तथा रक्त-पुष्प लेकर नीचे लिखे मन्त्र से श्री गणेशजी का आवाहन-स्थापन करें और अक्षतादि गणेशजी

के साँठिये पर रखें-

अब वेदोक्त गणेशमंत्र- ॐ गणानान्त्वा गणपति ऽ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ऽ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ऽ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्व सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः- आवाहयामि, स्थापयामि॥

卐

पुनः यजमान निम्नलिखित मंत्र से 'श्री गणेशप्रतिष्ठापन' के लिये पुनः रक्ताक्षत गणेशजी के स्वास्तिक (सांठिये पर रखें-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं-तनोत्वरिष्टं यज्ञ ऽ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोंऽम्प्रतिष्ठ। अ.२।१३

अथ द्वादश-विनायक पूजनम्

यजमान सर्व-प्रथम हाथ जोड़कर १२ विनायकों का ध्यान करें। तदनंतर निम्नलिखित नाम-मंत्रों से अपने बाँये हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर, सीधे हाथ से प्रत्येक आसानों पर यथास्थान 'आवाहयामि-स्थापयामि' कहता हुआ अक्षत आदि छोड़ता जाय-

अथ द्वादश विनायक आसनम्-

१	२	३
४	५	६
७	८	९
१०	११	१२

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो। व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो। गृतसेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो। विरूपेभ्यो विव्वरूपे भ्यश्च वो नमो नमः। सेनाब्भ्य॥ (ध्यायामि)॥ श्री गणपत्यादि द्वादश विनायकेभ्यो नमः॥

१. मार्गशीर्षे- ॐ गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२ पौषे- ॐ विनायकाय नमः। विनायकमावा० स्था०।

३. माघे- ॐ गजवक्त्राय नमः। गजवक्त्रमावा० स्था०।

४. फाल्गुने- ॐ भालचंद्राय नमः। भालचंद्रमावा स्था०।

५. चैत्रे- ॐ उपेन्द्राय नमः उपेद्रमावा० स्था०

६. वैशाखे- ॐ विघ्नविनाशाय नमः। विघ्नविनाशमा० स्था०।

७. ज्येष्ठे- ॐ शिवसुताय नमः। शिवसुतमावा० स्था०।

८. आषाढ़े- ॐ हरिनन्दनाय नमः। हरिनन्दनमावा० स्था०

९. श्रावणे- हेरम्बाय नमः। हेरम्बमावा० स्था०।

१०. भाद्रपदे- लंबोदराय नमः। लंबोदरमावा० स्था०।

११. आश्विने- ॐ कार्तवीर्याय नमः। कार्तवीर्यमावा०स्था०।

१२. कार्तिके-ॐमहावीर्याय नमः। महावीर्यमावा० स्था०।

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृस्पतिर्यज्ञमिमं- तनोत्वरिष्टं

यज्ञ ँ समिमं दधातु। व्विश्वे देवास इह मादयन्तामों३म्प्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रेतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥ सुप्रतिष्ठिताः भवत॥ द्वादश-विनायकानावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

तदन्तर यजमान षोडशोपचार पूजन करें-

ततः- पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोर्ध्यं समर्प०। स्वांग स्नानीय समर्प०। पंचामृतस्नानं समर्प०। शुद्धोदक स्नानं समर्प०। मुखे आचमनीयं समर्प०। पुनराचमन समर्प०। वस्त्रोपवस्त्रार्थे वस्त्रे कौशेयवस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्प०, पुनराचमनीयं समर्प०, गन्धं समर्प० गंधान्तेऽक्षतान् समर्प०, अबीरं गुलालं हरिद्राचूर्णञ्च समर्प०, सौभाग्य द्रव्याणि समर्प०, सिन्दूरं समर्प०, नानासुगंधिद्रव्याणि समर्प०, पुष्पाणि समर्प०, दूर्वांकुराणि, समर्प०, (दूर्वांते) धूपमाघ्रापयामि, प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यं पुरतः कृत्वा, गन्ध-पुष्पे प्रक्षिप्य 'ग्रासमुद्राँ-धेनुमुद्राञ्च'-प्रदर्श्य, १ प्राणाय स्वाहा, २ अपानाय स्वाहा, ३ समानाय स्वाहा, ४ उदानाय स्वाहा, ५ व्यानाय स्वाहा, मध्ये-मध्ये आचमनीयम्, उत्तरापोषणम्, मुख-प्रक्षालनम्, हस्तप्रक्षालनम्, करोदुवर्तनार्थे पुनर्गन्धं समर्प०, मुखवासनार्थे ताम्बूलं-पूगीफलं समर्प०, कृतायाः

पूजायाः साद्गुन्यार्थें यथाशक्ति दक्षिणां समर्प० ॥

॥पुनः॥ आरार्त्तिकञ्च समर्प०, विशेषार्घ्यं नमस्कारं समर्पयामि ॥ इति श्रीगणपतिपूजनम् ॥

यहां अन्त में छपी गणेशजी की आरती कर, पुष्पांजलि देवें। पीछे ब्राह्मणों, 'नमोस्त्वनंताय सहस्त्रमूतये' से तिलक करें।

'व्रतेन दीक्षामाप्नोति' से व्रत बन्ध करे पश्चात भूरसि० इत्यादि से कलशार्चन करके 'पुण्यावाचन' करें जो पहले छप चुका है। अब षोडशमातृकादि पूजन करें-

अथ षोडश-मातृका आसन्

आत्मनः कुल देवता १६	लोक-मातर १२	देव सेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टि १४	स्वाहाः १०	विजया ६	पद्मा २
धृति १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी + गणेश १

अथ षोडश-मातृका पूजनम्

यजमान प्रथम हाथ जोड़कर सोलह मातृकाओं का ध्यान करें। तदन्तर 'निम्नलिखित' नाम मन्त्रों से अपने बायें हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर, सीधे हाथ से प्रत्येक के आसनों पर यथा स्थान 'आवाहयामि

स्थापयामि'- कहता हुआ अक्षत-आदि छोड़ता जाय-

ॐ आयं गौःपृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेअम्बालिके नमोनयति कश्चन। ससस्तश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥ (ध्यायामि)॥
ॐ गौरी पद्मा शची मेघा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः, पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मन, कुलदेवता।
गणेशेनाथिका ह्योता-वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

ॐ गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः।

ॐ गं गणपतये नमः, गणपतिमावा० स्था०।

१ ॐ गौर्यै नमः गौरीमावा० स्थापयामि।

२ ॐ पद्मायै नमः, पदमामावा० स्था०।

३ ॐ शच्यै नमः, शचीमावा० स्था०।

४ ॐ मेधायै नमः, मेधामावा० स्था०।

५ ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावा० स्था०।

६ ॐ विजयायै नमः, विजयामावा० स्था०।

७ ॐ जयायै नमः, जयामावा० स्था०।

८ ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावा० स्था०।

९ ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावा० स्था०।

१० ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावा० स्था०।

११ ॐ मातृभ्यो नमः, मातृरावा० स्था०।

१२ ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृरावा० स्था०।

१३ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावा० स्था०।

१४ ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावा० स्था०।

१५ ॐ तुष्ट्यै नमः, स्तुष्टिमावा० स्था०।

१६ ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः, आत्मकुलदेवता मावाहयामि स्थापयामि॥

(पूर्व दिशा में)

अथ सप्त घृत-मातृका चित्रम्

श्री

श्रीः	लक्ष्मीः	धृतिः	मेधाः	स्वाहाः	प्रज्ञाः	सरस्वतीः
१	२	३	४	५	६	७

अथ सप्त घृत-मातृका पूजनम्

यजमान प्रथम हाथ जोड़कर सात घृत-मातृकाओं का ध्यान करें। तदनन्तर निम्नलिखित' नाम मन्त्रों से अपने बायें हाथ में पुष्प एवं कुमकुमाक्षत रखकर, सीधे हाथ से प्रत्येक के आसनों पर 'आवाहयामि स्थापयामि'- कहता हुआ अक्षत-आदि छोड़ता जाय-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व लोकम्मऽइषाण॥ (ध्यायामि)॥

ॐ 'लक्ष्मीधृतिर्मेधा, स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।

मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते, सप्तैता घृतमातरः ॥'

ॐ श्रूयादिसप्तधृत- मातृकाभ्यो नमः।

१ ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

२ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

३ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

४ ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

५ ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

६ ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

७ ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ **मनोजूतिः**- इस मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठापन करे। तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्र से क्रमशः सात वसोर्धारायें (घी की धारायें) करें-

नोटः- आचार्य प्रथम गोबर और हल्दी से भीत (दीवार) को चौकोर लिपवा कर अथवा किसी पट्टे पर सिन्दूर और शुद्ध घी से 'सप्त घृत-मातृकाओं'- की चित्रानुसार रचना करें तथा मन्त्र सहित ७ (सात) सप्त वसोर्धाराये करके सवा सेर गुड़-घी का नैवेद्य देवें।

कलश स्थापन स्पष्टीकरण

९ वर्द्धनी कलशों को तो प्रधान के पास ही रखें।

(....विशेष कलश जलाशय से लाये हों या न भी लाये हों तो उनका स्थापन विधान।)

१० कलश दशो दिक्पालों के लिये जिनमें एक-एक द्वार पर तथा ९ उर्ध्व (पूर्व में) और १ अधः (नैऋत्य ९ पश्चिम के बीच में)

११ तीन-तीन चारों द्वारो पर (इनमें दो द्वार के और १ तोरण का है)

१ ईशान कोण वेदी (कुंड) के पास।

३ वेदी के तीन कोणों में शोभार्थ।

१ पुण्याहवाचन का कलश ताँबे का।

१ वास्तुकलश तांबे का।

१ प्रधान का स्वर्ण, रजत वा ताम्र का।

१ षड्विनायक षोंडशमातृ का।

१ रूद्रकलश का।

१ भैरव के लिये दिया का कलश।

३ योगिनी के दिये।

४ तोरणों के । एवं

३९ कलश दियो सहित।

कई आचार्य ध्वज पताका स्तम्भों के भी कलश रखाते हैं। कई कुल २७ कलश ही रखते हैं पर समयाकूल यावच्छक्य करा देना ही उचित है।**श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर की पुस्तकें ही खरीदें**

६४ कोष्ठात्मक

देववास्तुमण्डल पूजा विधान

एकाशीतिपदं वास्तु गृहकर्मणि शस्यते।
चतुःषष्टिपदं वास्तु प्रासादे देवभूभुजाम्॥

एक पाटे पर ६४ कोष्ठों का मण्डल बनाकर मध्य में कलश पर मूर्ति रखें।

यत्र कुण्डं तत्र वास्तु पीठं कुर्यात् प्रयत्नतः। स्थण्डिले चाल्पहोमे तु वास्तुपीठं कृताकृतम्॥ (गोतमीये)

सपत्नीक यजमान मण्डप के नैऋत्यकोण में वास्तु मंडल के स्थान के पास पश्चिम मुख होकर बैठे। आचमन प्राणायाम संकल्प आचार्य करा देवें। यथा-

अद्य अमुकतिथौ प्रारब्धस्य अमुक देवप्रतिष्ठायाः सांगतासिद्ध्यर्थं चतुःषष्टिपदे वास्तुपीठे शिख्यादि-वास्तुमंडल देवताऽऽवाहन प्रतिष्ठा पूजनं करिष्ये।

वास्तु मण्डल के आग्नेयादि कोणों में चार शंकु (कीलें) रोप देवें। तब यों बोलें-

विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा॥

फिर उन कीलों का द्विगुणीकृत त्रिसूत्री से वेस्टन कर दे। और शेष त्रिसूत्री से वास्तूपूजांत में मण्डप के चारों ओर वेस्टन कर दें। एतदर्थ तीन कूकड़ियों का कौया पहले बनाकर रख लें।

फिर आग्नेयादि रोपण क्रम से उनके पास उड़द भात दध्योदन की बलि देवें।

अग्निकोणीय शंकु के पास बलि रखकर ये बोलें-

ॐ अग्निभ्योऽत्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिता:।
बलि तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।

नैर्ऋत्यकोण में बलि रखकर बोले-

ॐ नैऋत्याधिपतिश्चैव नैऋत्यां ये च राक्षसा।
बलि तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥

वायव्य कोणे बलि-

नमो वै वायुरक्षोभ्यो, ये चान्ये तान् समाश्रिता:
बलि तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥

ऐशानकोणीय बलि देव तब बोले-

ॐ रूद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिता:।
बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि गृह्णान्तु सततोत्सुका:॥

पश्चात् 'शंकुदेवताभ्यो नम:, बलिं समर्पयामि॥ शंकुदेवताभ्यो नम:," इति नाममंत्रेण पंचोपचारै: पूजनम्।

इनकी पूजा करें। पश्चात् वास्तुपीठ पर वस्त्र फैलाकर पश्चिम से पूर्व तक 'उदक् संस्था समा नवरेखा: पूजनम्'।

ॐ लक्ष्म्यै नम:। यशोवत्यै नम:। कान्तायै नम:। सुप्रियायै नम:। विमलायै नम:। शिवाय नम:। सुभगायै नम:। सुमत्यै नम:। इड़ायै नम:॥

फिर दक्षिण से उत्तर की ओर नवरेखा देवता पूजन:-

धान्यायै नम:। प्राणायै नम:। विशालायै नम:। स्थिरायै नम:। भद्रायै नम:। जयायै नम:। निशायै नम:।

विरजायै नमः। विभवायै नमः।

पीछे- मनोजूतिर्जुषता० इत्यादि मंत्र से प्रतिष्ठा करके-

''ॐ रेखादेवताभ्यो नमः'

इस नाम मंत्र से पंचोपचार पूजा कर दे

ततो वास्तुमंडलदेवता-स्थापनं प्रतिष्ठापनम्।

ताम्रकलश पूर्वोक्त विधि से स्थापित करके उस पर स्वर्ण या रजतमयी वास्तु प्रतिमा स्थापित करके आगे का संकल्प बोलें-

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं (सपत्नीकोऽहं) अस्यां वास्तूमूर्तौ अवघातादि दोषपरिहार्थे अग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठाँ करिष्ये।

अब मूर्ति को पात्र में रखकर धृत लगाकर पंचामृत से सन्तत धारा देवें। तब बोलें-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवोभव।। ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदाः वरिवोदाः। अन्यांस्ते। अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव।।

इस प्रकार आग्न्युत्तारण (पंचामृतधारा देकर) करके मूर्ति को वामहस्त में लेकर दक्षिण हाथ से ढक आगे के मन्त्रों से प्राण प्रतिष्ठा करे।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः प्राणा इह तिष्ठन्तु।

ॐ आं ह्रीं क्रौ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः

सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेर्जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्ते वाङ्मनस्त्वक् चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपाद पायुपस्थानि इहागत्य सुखं चिरतिष्ठन्तु स्वाहा॥

ॐ मनोजूति० से प्रतिष्ठा करके बोले-

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा वायांतु (क्षरन्तु) च। अस्यै देवत्वमचार्यैं माम हेतीतिं कश्चन। वास्तुपुरूष प्रतिष्ठितो वरदो भव॥

मूर्ति को कलश पर रखकर बोले-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ 'वास्तुपुरूषाय नमः' मंत्र से आह्वान करके अर्घ्यं दे। प्रार्थना करें:-

पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञ रक्षादि हेतवे।
त्वां विनानार्चनं सिध्येद्यज्ञ दानादिषु क्वचित्॥
अयोने भगवान् भर्ग- ललाटस्वेद सम्भव।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तोः स्वामिन्नमोस्तु ते

पश्चात् पायस (पेड़ आदि की) बलि देवे। इसी प्रकार 'शिखिने नमः' इत्यादि सबकी बलि देवें।

१ ॐ शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि। पायसन्न बलिं च समर्पयामि।

२ ॐ पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि०।

३ ॐ जयंताय नमः, जयंतं। ४ ॐ कुलिशायुधाय नमः।

५ ॐ सूर्याय नमः। ६ ॐ सत्याय नमः।

७ ॐ भृशाय नमः। ८ ॐ आकाशाय नमः

९ ॐ वायवे नमः १० ॐ पूष्णे नमः

११ ॐ वितथाय नमः। १२ ॐ गृहक्षताय नमः।

१३ ॐ यमाय नमः। १४ ॐ गन्धर्वाय नमः।

१५ ॐ भृंगराजाय नमः १६ ॐ मृगाय नमः।

१७ ॐ पितृभ्यो नमः। १८ ॐ दौवारिकाय नमः

१९ ॐ सुग्रीवाय नमः। २० ॐ पुष्पदंताय नमः।

२१ ॐ वरूणाय नमः। २२ ॐ असुराय नमः।

२३ ॐ शोषाय नमः। २४ ॐ पापाय नमः।

२५ ॐ रोगाय नमः। २६ ॐ अहये नमः।

२७ ॐ मुख्याय नमः। २८ ॐ भल्लाटाय नमः।

२९ ॐ सोमाय नमः। ३० ॐ सर्पाय नमः।

३१ ॐ आदित्यै नमः। ३२ ॐ दित्यै नमः।

३३ ॐ अद्भ्यो नमः (आपाय नमः)

३४ ॐ सावित्राय नमः। ३५ ॐ जयाय नमः।

३६ ॐ रूद्राय नमः। ३७ ॐ अर्यम्णे नमः।

३८ ॐ सवित्रे नमः। ३९ ॐ विवस्वते नमः।

४० ॐ विबुधाधिपाय नमः

४१ ॐ मित्राय नमः। ४२ ॐ राजक्ष्यमणे नमः।

४३ ॐ पृथ्वीधराय नमः। ४४ ॐ आपवत्साय नमः।

४५ ॐ ब्रह्मणे नमः। ४६ ॐ चरक्यै नमः।

४७ ॐ विदार्यै नमः। ४८ ॐ पूतनायै नमः।

४९ ॐ पापराक्षस्यै नमः। ५० ॐ पूर्वे स्कन्दाय नमः।

५१ ॐ दक्षिणे अर्यम्णे नमः।

५२ ॐ पश्चिमे जृम्भकाय नमः।

५३ ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय नमः।

५४ ॐ पूर्वे इन्द्राय नमः।

५५ ॐ आग्नेय्यां अग्नेय नमः।

५६ ॐ दक्षिण यमाय नमः।

५७ ॐ नै० नैर्ऋतये नमः।

५८ ॐ पश्चिमे वरूणाय नमः।

५९ ॐ वाय० वायवे नमः।

६० ॐ उत्तरे कुबेराय नमः।

६१ ॐ ईशान्यां ईश्वराय नमः।

६२ ॐ ब्राह्मणे नमः

६३ ॐ अनंताय नमः।

मनोजूति० से प्रतिष्ठा पीछे पूजन करें।

सर्वेभ्यो वास्तुमंडल देवताभ्यो नमः पायसबलिं (पेड़ा-बलि) दधिमाषभक्त दीससहितं समर्पयामि। न ममं।

पीछे प्रार्थना करें।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धा विवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव पूरिपूर्ण तदस्तु मे॥
नमस्ते वास्तु देवेश सर्वदोष हरो भव।
शांति कुरू सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे॥
पश्चात् ससुवर्ण नारिकेलं वास्तु पुरूषाय समर्प्य प्रणमेत्॥

रक्षोघ्न तथा पवमान सूक्तो से जल दुग्ध की धारा देते हुए त्रिसूत्री को मंडप के लपेट देवें।

रक्षोघ्न सूत्र मंडप प्रवेश प्रकरण में मुद्रित है, उसे देखकर बोलें-
नोट:- निखनन करना हो तो उसी दिशा में खड्डा खोद कर करें।

वास्तुपूजने पक्षत्रयम्-

१ वास्तुदेवतापूजन बलिदानहोम प्रतिमा निखननांत प्रथमो मुख्य:।

२ प्रतिमानिखनन रहितो मात्स्योक्तो मध्यम:।

३ पूजाबलिदानमात्र: शरदोक्त: कनिष्ठ। तत्र मण्डपे बलिरेव,

न होमादि इति जीर्ण सम्प्रदायानुगतः शारदोक्त एवं गृह्यते। साधारणश्चैवं।

प्रतिष्ठाप्रभुः (स्मार्त प्रभुः) ४६ तमे पृष्ठे टिप्पण्याम।

(१) वास्तु में पूजन, बलिदान, होम और प्रतिमा निखनन इन सबका होना उत्तम कोटि का है। (उत्तम)

(२) प्रतिमा निखनन रहित पक्ष मात्स्योक्त है। (मध्यम)

(३) पूजा बलिदान मात्र शारदोक्त है। (साधारण है)

जैसी सुविधा हो वैसा ही करा दे। प्रत्येक की बलि न दे सकें तो एक महाबलि शिख्यादि को दे देने का विधान भी प्रतिष्ठा कौमुदी में लिखा है। मंगवाने का पता: **श्री सरस्वती प्रकाशन, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर**

वायव्य पीठे

अथ चतुःषष्टियोगिनी स्थापनादि

ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्।
योगाभ्यासेन संतुष्टां परध्यान समन्विताम॥१॥
दिव्यज्वालाति संकाशा दिव्यज्वालाति लोचना।
मूतिमती ह्यमूर्ता च उग्रा चैवोग्र रूपीणी॥२॥
यज्ञे निर्विघ्नतां कृत्वा श्रेयो यच्छन्तु मातरः।
दिव्ययोगा महायोगा सिद्धियोगा गणेश्वरी॥३॥
प्रेताक्षी डाकिनी काली कालरात्रि निशाचरी।

हूंकारी सिद्धि वैताली खर्परी भूतयामिनी ॥
ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मासंभोजनी ।
फेत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया ॥
रक्ता च घोररक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी ।
चौरिका मारिका चंडी वाराही मुंडधारिणी ॥
भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवाहिनी ।
कंटकी दीर्घलंबोष्ठी मालिनी मंत्रयोगिनी ॥
कालाग्नि मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी ।
कुंडलाक्षी जुही लक्ष्मी यमदूती करालिनी ॥
कौशिकी भक्षणी यक्षी कौमारी यंत्रवाहिनी ॥
विशाला कामुकी व्याघ्री यक्षिणी प्रेतभूषणी ॥
धूर्जटा विकटा घोरा कपाला चैव लांगली ।
चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः ॥
त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं देवमानव योगिभिः ।
ॐ भूर्भुवः स्वः योगिन्य इहागच्छत इहतिष्ठत ॥

इस मंडल पर तीन प्रतिमायें तीन कलशों या दियों पर स्थापित करें। प्राण प्रतिष्ठा पूर्ववत् कर महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती का आवाहन पूजन के साथ चौसठ योगिनियों की पूजा करें।

६४ चतुःषष्टियोगिनीनामआवाहनम्

दिव्ययौगायै नमः। महायोगायै नमः। सिद्धियोगायै नमः। गणेश्वर्यै नमः। प्रेताक्ष्ये नमः। डाकिन्यै नमः। काल्यै नमः।

कालरात्रये नमः। निशाचर्यै नमः। हुंकायै नमः। सिद्धवैताल्ये नमः। खर्पर्यै नमः। भूतयामिन्यै नमः। ऊर्ध्वकेश्यै नमः। विरूपाक्ष्यै नमः। शुष्कांग्यै नमः। मांसभोजिन्यैं नमः। फेत्कार्यैं नमः। वीरभद्राक्ष्यै नमः। धूम्राक्ष्यै नमः। कलहप्रियायै नमः। रक्तायै नमः। घोर रक्ताक्ष्यै नमः। विरूपाक्ष्यै नमः। भयंकर्यै नमः। चौरिकाये नमः। मारिकायै नमः। चंडिकायै नमः। वाराह्यै नमः। मुण्डधारिण्यै नमः। भैरव्यै नमः। चक्रापाण्यै नमः। क्रोधायै नमः। दुर्मुज्यै नमः। प्रेतवाहिन्यै नमः। कंटक्यै नमः। दीर्घलंबोष्ठयै नमः। मालिन्यै नमः। मंत्रयोगिन्यै नमः। कालाग्न्यै नमः। मोहिन्यै नमः। चक्रयै नमः। कंकाल्ये नमः। भुवनेश्वर्यै नमः। कुण्डलाक्ष्यै नमः। जुह्यै नमः। लक्ष्म्यै नमः। यमदत्यै नमः। करालिन्यै नमः। कौशिक्यै नमः। भक्षिण्णै नमः। यक्षिण्यै नमः। कौमार्यें नमः। यंत्रवाहिन्यै नमः। विशालायै नमः। कासुक्यै नमः। व्याघ्रयै नमः। यक्षिण्यै नमः। प्रेतभूषण्यै नमः। धूर्जट्यै नमः। विकटायै नमः। घोरायै नमः। कापलायै नमः। लांगल्यै नमः। चतुः षष्टियोगिन्यः।

क्षेत्रपाल नामावली आवाहनम्

क्षेत्रपाल ४९ कोष्ठों का बनाकर एक कलश मध्य में रखकर आवाहन

(१) ॐ क्षेत्रपालाय: नमः।२। अजराय नमः।३। व्यापकाय नमः।४। इन्द्रचौराय नमः।५। वरुणाय नमः।६। उक्षाय नमः।७। कूष्मांडाय नमः।८। वरुणाय नमः।९। बटुकाय नमः।१०। विमुक्ताय नमः।११। लिप्तकायाय नमः।१२। लीलाकाय नमः।१३। एकदंश्ट्राय नमः।१४। एरावताय नमः।१५। औषधिघ्नाय नमः॥१६॥ बन्धनाय नमः॥१७॥ दिव्यकायाय नमः॥१८॥ कंवलाय नमः॥१९॥ भीषणाय नमः॥२०॥ गवयाय नमः॥२१॥ घण्टाय नमः॥२२॥ व्यालाय नमः॥२३॥ अणवे नमः॥२४॥ चन्द्रवारुणाय नमः॥२५॥ पटाटोपाय नमः॥२६॥ जटालाय नमः॥२७॥ क्रतवे नमः॥२८॥ घन्टेश्वराय नमः॥२९॥ विटङ्काय नमः॥३०॥ मणिमानाय नमः॥३१॥ गणबन्धवे नमः॥३२॥ डामराय नमः॥३३॥ ढुण्डिकर्णाय नमः॥३४॥ स्थविराय नमः॥३५॥ दन्तुराय नमः॥३६॥ धनदाय नमः॥३७॥ नागकर्णाय नमः॥३८॥ महाबलाय नमः॥३९॥ फेत्काराय नमः॥४०॥ चीत्काराय नमः॥४१॥ सिंहाय नमः॥४२॥ मृगाय नमः॥४३॥ यक्षाय नमः॥४४॥ मेघवाहनाय नमः॥४५॥ तीक्ष्णौष्ठाय नमः॥४६॥ अमलाय नमः॥४७॥ शुल्कतुन्डाय नमः॥४८॥ सुधापालाय नमः॥४९॥ बर्बराय नमः।५० पवनाय नमः।५१।

पावनाय नमः।५२। युधामन्यवे नमः ।।

(५२ भैरव) सहिताभ्यः क्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः।।

इस प्रकार पूजा करके अन्त में बोले

अनेन पूजनेन क्षेत्रपालाः प्रीयन्ताम्

कई स्थानों पर ४१ ही की पूजा की जाती है।

अथ षोडषस्तंभ पूजाविधानम्

संकल्प

ॐ अद्येत्यादि अमुकशर्माहं अस्य देवस्य प्रतिष्ठाकर्मणि करिष्णमाण-यज्ञार्थं वरुणविधिना षोडशवरुण पूजनपूवकं सस्थूण-शक्ति नागमातृक ब्रह्मादि षोडशस्तम्भपूजनमहं करिष्ये।

अन्तरीशाने पूर्व वरुणपूजां कृत्वा। ब्रह्मादि देवतानामावाहन पूजनादि। ॐ ब्रह्म जज्ञानसि ति गौतम ऋषिः त्रिष्टुपछन्दो ब्रह्मदेवता ब्रह्माऽऽवाहने विनियोगः।

इससे जल छोड़कर

एह्येहि विप्रेन्द्र पिता महेश हंसाधिरूढ त्रिदशैक वन्द्य।
श्वेतोष्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद० पूरा मन्त्र बोलकर--

ॐ भूर्भवः स्वः ब्रह्मदैवत्त संज्ञक स्तम्भेहागच्छ।

सस्थूणनाग मातृकाय ब्रह्मदैवत संज्ञक स्तम्भाय नमः।

(पाद्यादि से पूजा करें)

कृष्णाम्बराऽजिनधर पद्मासन चतुर्भुज। जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव। ॐ सावित्र्यै नमः। ब्राह्मयैनमः। गंगायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ का आलभन करके बोले--

ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये तिष्ठा देवो नः सविता। ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघदिभर्विह्वयामहे॥

"स्तंभशिरसि नागमात्रे नमः" सम्पूज्य शाखां बद्ध्वा

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः। क्षमापनम्। ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं करु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो निर्मितो विश्वकर्मणा। स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कर्म समाप्तये॥१॥

अन्तराग्नेये--इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता विष्णुआवाहने विनियोगः आवाहन-एह्येहि नारायण दिव्यमूर्ते, सर्वामरैरर्चितपादपद्म शुभाशुभानंद शुचामधीश, गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेति० (मन्त्र बोले) ॐ भूर्भुवः स्वः. विष्णं

इहागच्छ इहतिष्ठ। विष्णवे नमः (इससे पूजा करें) प्रार्थना देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो। पाहिदुःखांबुधेस्मान् भक्तानुग्रह कारक॥ वहीं पर लक्ष्मी आदि की पूजा। ॐ लक्ष्म्यै नमः। नन्दायै नमः। वैष्णव्यै नमः। पूजा करके पूर्ववत् ऊर्ध्व उषुण० इत्यादि मंत्र बोले॥२॥

(यह पूरा मंत्र सब पूजा में बोला जायेगा)

नैऋत्ये-नमस्ते इति परमेष्ठीऋषिर्गायत्रीछन्दो रुद्रो देवता रुद्रावाहनेविनियोगः॥ आवाहन-एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौलेवृषभाधिरूढ। देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत ऽ इषवे नम०। (पूरा मंत्र बोले)

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्रः इहागच्छ इहः तिष्ठ। रुद्राय नमः इति संपूज्य प्रार्थयेत्॥ पंचवक्त्र् वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव। चंद्रमौले महादेव मम स्वस्ति करो भव॥ माहेश्वर्यै नमः। गौर्यै नमः। ॐ शौभानायै नमः।

पूजा करके (ऊर्ध्व०) इत्यादि मन्त्र बाले॥३॥

वायव्ये त्रातारमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने विनियोगः। आवाहन-एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्त्रनेत्र त्रिदशैकवन्द्य। शचीपते चक्र सुरेश नित्यं गृहाण

पूजां भगवन्नमस्ते।। ॐ त्रातारमिन्द्रं। (इत्यादि मंत्र) भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। इन्द्राय नमः।

मंत्र से पूजा करके प्रार्थना करें-- **देवराज गजारूढ़ पुरदर शतक्रतो। वज्रहस्त महाबाहो वांछितर्थप्रदो भव।।**

इन्द्राण्यै नमः। आनन्दायै नमः।। विभूत्यै नमः।।

पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मन्त्र बोले।।४।।

बहिरीशाने--चित्रमिति कुत्सऋषिविराट् छन्दः सूर्यों देवता सूर्यावाहने विनियोगः। एह्येहि सप्ताश्व सहस्रभानो सिंदूरवर्ण प्रतिमावभास। छायापते सूर्य दिनेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ॐ चित्रं देवानां (पूरा मंत्र)

भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ। सूर्याय नमः। (इस मंत्र से पूजा करके प्रार्थना करें) **पद्महस्त रथारूढ़ पद्मासन सुमंगल। क्षमा कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोस्तु ते। सावित्र्यौ नमः। मंगलायै नमः। भृत्यै नमः।**

इनसे पूजा करके उर्ध्व आदि मन्त्र को बोल दें।।५।।

ईशानपूर्वयोर्मध्यें-गणानां त्वेनि प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दो गणपति देंवता गणपत्यावाहने विनियोगः। आवाहनम्। एह्येहिहेरम्ब महेश पुत्र समस्त विघ्नौपविनाशदक्ष। मांगल्यपूजा प्रथम प्रधान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

गणानां त्वां०।। : भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ।

गणपतये नमः। (इससे पूजा करके प्रार्थना करें) लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। जयायै नमः। सरस्वत्यै नमः। इनसे पूजा करके (उर्ध्व इत्यादि मंत्र बोल दे।) ॥६॥

पूर्वाग्नेययोर्मध्ये-नमोऽस्त्विति देवश्रवाऋषिः स्त्रिष्टुप् छन्दो अनन्तो देवताऽनन्तावाहने विनियोगः। एह्येहि नागेन्द्र धरामरेश नागाङ्गना किन्नर गीयमान। अनन्त यक्षौरंगलोकसंघैर्गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो०। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ, इहतिष्ठ। अनंताय नमः। (इससे पूजा करके) प्रार्थना-आशीविषसमोपेत नागकन्या-विराजित। पाहि यज्ञमिमं देव फणसप्तक मण्डित॥ ॐ अधरायै नमः। पद्मायै नमः। महापद्मायै नमः। पूजा के अनन्तर ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र पूर्ववत् बोले॥७॥

बाह्याग्नेये-ॐ यदक्रन्द इति भार्गव-जमदग्नि दीर्घतमसऋषयः। त्रिष्टुप् छन्द स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने विनियोगः। (आवाहन) एह्येहि गौरीसुत देवदेवषत्कृत्तिकारक्षित-देहयष्टे। मयूरवाह प्रणतार्तिहारिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽ उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्वन्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द, इहागच्छ। स्कंदाय नमः। (इससे पूजा करके प्रार्थना करें।)

मयूरवाहन स्कन्द गौरीसुत षडानन। कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे॥ ॐ जयायै नमः। विजयायै नमः। पश्चिमसंध्यायै नमः। पूज्रा करके ऊर्ध्व० इत्यादि मंत्र बाले॥८॥

आग्नेयदक्षिणयोर्मध्यै-ॐ यमाय त्वेति दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्यजुश्छन्दो यमो देवता यमावाहने विनियोग:। (आवाहन) एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। विशालवृक्षः स्थल रुद्र रुप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ७स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमेइहागच्छ यमाय नमः। (इससे पूजा करके प्रार्थना करे) धर्मराज महाकाय दण्डहस्त वरप्रद। रक्तेक्षण महाबाहो पाहि यज्ञं नमोस्तु ते॥ ॐ पूर्वसंध्यायै नमः। क्रूरायै नमः। नियन्त्र्यै नमः।

पूजा करके ऊर्ध्व मंत्र इत्यादि बोले॥९॥

दक्षिणनैऋत्यमध्ये-वायुरिति वसिष्ठऋषि, त्रिष्टुप छन्दो वायुर्देवता वाय्वाहने विनियोग:। (विनियोग करके आवाहन) एह्येहि वायो मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्ध संघैः। प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। ॐ वायुरग्रेगाः यज्ञपीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ॥ वायवे नमः

(मंत्र से पूजा करके प्रार्थना करें) नमो धरणिपृष्ठस्थ ध्वजधारिन् समीरण। पाहि यज्ञमिमं देव प्रसन्नो भव में सदा। ॐ तीव्रायै नमः। गायत्र्यै नमः। वायव्यै नमः। (पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोले) ॥१०॥

नैर्ऋत्ये-सोममिति बधुर्ऋषिः गायत्रीछन्दः सोमो देवता सोमावाहने विनियोगः। (विनियोग करके आवाहन) एह्येहि सोमाध्वर देवदेव विधत्स्व रक्षां भगणेन सार्धम्। योगस्य सर्वौषधि-पितृयुक्त गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते॥ ॐ सोम ऽराजनमवसेऽग्नि मन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णु ऽ सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पति ऽ स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ। सोमाय नमः (इससे पूजा करके प्रार्थना करे) क्षीरार्णव समुद्भूत द्विजराज सुधाकर। सोम त्वं सौम्यभावेन ग्रहपीडां निराकुरु॥ ॐ सावित्र्यै नमः। अमृतकालायै नमः। विजयायै नमः। पूजन करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोले॥११॥

पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये--इमं में वरुणेति वत्सऋषिः बृहती छन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने विनियोगः। (आवाहन) एह्येहि यादोगणवारिधीश पर्जन्य-देवाप्सरसां मणेन विद्याधरेन्द्रामरगीयमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचक्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ। वरुणाय नमः (इससे पूजा करके प्रार्थना करे)

शंखस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत। पाश हस्त महाबाहो वरुण त्वं कृपां करु॥ ॐ वारुण्यैनमः। बार्हस्पत्यै नमः। पाशधारिण्यै नमः। पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोले॥१२॥

पश्चिमवायव्यमध्ये-सुगाव इति वशिष्ठऋषिः गायत्री छन्दः। वसुर्देवता वस्वावाहने विनियोगः। (जल छोड़कर आवाहन करें) एह्येहि देवेश्वर दिव्यदेह वसो प्रसन्नात्म दृगष्टमूर्ते॥ ममास्य यागस्य सुरक्षणार्थ गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ सुगावो देवाः सदना ऽअकर्म य ऽ आजग्मेद ऽसवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमानाहर्वींऽष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः वसो इहागच्छ। वसवे नमः (से पूजाकर प्रार्थना (करें) दिव्यवस्त्राष्टमूर्ते त्वं दिव्यदेह धर प्रभो। पाहि यज्ञमिमं सर्व वरदं त्वां नमाम्यहम्। ॐ विनतायै नमः। गरिमायै नमः। सम्भूत्यै नमः॥

इनसे पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोल दे॥१३॥

वायव्ये-सोमो धेनुमिति गोतमऋषिः त्रिष्टुप छन्दो धनदो देवता धनदावाहने विनियोगः (जल छोड़कर आवाहन करे) एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशाल बेताल पिशाच संघैः। ममध्वरं पाहि कुबेर देव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ सोमो धेनु ऽसोमो ऽअर्वन्तमाशु ऽसोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्थ ऽसभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धनदा इहागच्छ। धनदाय नमः (इससे पूजा करके प्रार्थना

करें) दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीतहाराम्बरावृत। उत्तरेश महाबाहो वांछितार्थप्रदो भव।। ॐ आदित्यै नमः। सिनीवाल्यै नमः। लघिमायै नमः।

पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोले॥१४।

उत्तरवायव्यमध्ये-बृहस्पते इति गृत्समदऋषिः, त्रिष्टुप छन्दो बृहस्पतिर्देवता बृहस्पत्यावाहने विनियोगः। (जल छोड़कर आवाहन करे) एह्येहि देवेन्द्रगुरो मखेश बृहस्पते यज्ञपते सुयागे। रक्षार्थ मंत्रोपविशानुकम्पिन् गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते।। ॐ बृहस्पते अति यदर्य्यो० इति। ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते अत्रागच्छ। बृहस्पते नमः। (इससे पूजा करके प्रार्थना करे) देवाचार्य यथाशक्त्या पूजितोसि मया मुद्रा। क्रूरग्रहोपशातिं त्वं कुरु नित्यं नमोस्तु ते।। ॐ पौर्णमास्यै नमः। वेदमात्रे नमः। सन्नत्यै नमः।

इनसे पूजा करके ऊर्ध्व आदि मंत्र बोले॥१५॥

उत्तरेशानयोर्मध्ये-विश्वकर्मन्निति शासऋषिः, त्रिष्टुप छन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मावाहने विनियोगः। (जल छोड़े, फिर आवाहन करें) एह्येहि शिल्पीश्वर विश्वकर्मन् मूर्त्यादि निर्माण करैकमुख्य। दोर्दण्डसंसाधित सर्व शिल्प गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रं कृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमंत पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मन्निहागच्छ।

विश्वकर्मणे नमः (इससे पूजा करके प्रार्थना करे) **विश्वकर्मन् प्रसीद त्वं शिल्पशास्त्र विशारद। दण्डपाणे महाबाहो तेजोमूर्तिधर प्रभो॥ ॐ वास्तुदेवतायै नमः। वैश्यकर्मण्यै नमः। शारदायै नमः।**

इससे पूजा करके ऊर्ध्व इत्यादि मंत्र बोले॥१६॥

फिर प्रार्थना

जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज।

पश्चात् दही, उड़द, चांवलों का बलिदान--

बाहर पूर्व में--ॐ त्रातारमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता सदीप दधिमाषभक्त-बलिदाने विनियोगः। (जल छोड़ के) ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिद्र ںहवे हवे सुहव ںशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ںस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ। इन्द्राय नमः। इदं सदीपदधिमाषभक्तबलये नमः। (पूजा करके जल छोड़े) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। सर्वविघ्न प्रणाशाय गृहाणेन्द्रवर प्रद॥ (मंडले सप्रवक्ष्यामि मिया भक्त्या निवेदितम्। इदमर्ध्यमिदं पाद्यं दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। (अग्नये)- त्वन्नो अग्ने इति हिरण्यस्तूप ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो अग्निर्देवता सदीपदधिमाषभक्त बलिदाने विनियोगः। ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिष्ठाः। यजिष्ठो

वह्नितम शोशुचानो विश्वा द्वेषाऽसि प्रमुमुग्ध्स्मत् स्वाहा। ॐ भूर्भुव: स्व: अग्ने इहागच्छ। अग्नये नम:। सदीपमाषभक्तबलये नम:। (पूजा करके जल छोड़े) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाणाग्ने महाबाहों रक्षोविध्नं प्रणाशय।। (मंडलेति पूर्ववत् पठेत्।।२।।

दक्षिणे-असीति जमदग्निर्ऋषि:, त्रिष्टुप्छन्दो यमो देवता सदीपदधिमाषभक्तबलिदाने विनियोग:। (जल छोड़कर) ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि स्वाहा।। ॐ भूर्भुव: स्व: यमेहागच्छ। यमाय नम:। सदीपदधिमाषभक्तबलये नम:। (इससे पूजा करके जल छोड़े) दधिमाषोदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। यमराज गृहाण त्व सर्वदोषं निवारय।। (मण्डलेति पूर्ववत्) ।।३।

नैऋत्ये-असुन्वंतमिति विवस्नानृषिस्त्रिष्टुप् छन्दो निर्ऋतिर्देवता सदीपदधिमाषभक्तबलिदाने विनियोग: (जल छोड़े) ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेनस्येत्या मन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु। ॐ भूर्भुव: स्व: निर्ऋते इहागच्छ। निर्ऋतये। सदीपदधिमाषभक्तबलये नम:।। (इससे पूजा करके जल छोड़े) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण निर्ऋते देव सर्वान्दोषानिन्वाराय। (फिर मंडलेति पूर्ववत्) ।।४।।

पश्चिमे- तत्वायामीति शुनःशेफऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, वरुणो देवता सदीपदधिमाषभक्तबलिदाने विनियोगः (इससे जल छोड़कर मंत्र बोले) ॐ तत्वायामि ब्रह्माणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुष ᳟समान आयुः प्रमोषीः। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणेहागच्छ। वरुणाय नमः। सदीपदधिमाषभक्तबलये नमः। (इससे पूजा करके जल छोड़े) (फिर बोले) दधिमाषो दनैर्युक्त सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण देव वरुण रक्षोविध्नं प्रणाशय।। (फिर मण्डलेति पूर्ववत बोले) ।।५।।

वायव्ये-आनो नियुद्भिरिति वसिष्ठऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो वायुर्देवता सदीपदधिमाषभक्त बलिदाने विनियोगः (जल छोड़ के आगे का मंत्र बोले) ॐ आ नो नियुद्भिः शतिः नीभिरध्वर ᳟सहस्त्रिणीभिरूप याहि यज्ञम। वायो अस्मिन त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा न्।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ, वायवे नमः। सदीपदधिमाषभक्त बलये नमः। (फिर जल छोड़े और बोले) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण वायो देवेश सर्वव्याधिक्षयं कुरु।। (फिर मण्डलेति पूर्ववत् बोले) ।।६।।

उत्तरे-वयमिति बंधुऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, सोमो देवता सदीपदधिमाषभक्त बलिदाने विनियोगः (जल छोड़ के आगे के मन्त्र बोले) ॐ वय ᳟सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः

प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ भूर्भुवः स्वः सोमः इहागच्छ, सोमाय नमः। सदीपदधिमाषभक्तबलये नमः। (इससे पूजा करके जल छोड़े और बोले) **दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण सोमऋक्षेश मम शांतिकरों भव।** (मण्डलेति पूर्ववत् बाले) ॥७॥

ईशाने-ईशावास्यमिति गोतमऋषिः, जगतीछन्द, ईशानो देवता, सदीपदधिमाषभक्त बलिदाने विनियोगः (जल छोड़ के आगे के मन्त्र बोले) **ॐ ईशा वास्यमिद ँसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ। ईशानाय नमः।** (करके जल छोड़े फिर बोले) **दधिमाषोदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाणेशान सर्वज्ञ सर्वशत्रुक्षयं कुरु।** (मण्डलेति पूर्ववत् बोले) ॥८॥

ईशानपूर्वयोर्मध्ये--आयंगौरिति सूर्यैऋशिः गायत्री छन्दो अनन्तो देवता सदीपदधि माषभक्त बलिदाने विनियोगः। (जल छोड़कर मन्त्र बोले) ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः। ॐ भूर्भुव स्वः अनन्तेहागच्छ। अनंताय नमः। सदीपदधि माषभक्त बलये नमः। (पूजा करके जल छोड़े फिर बोले) **दधिमाषोदनैर्युक्तं सदीप बलिमुत्तमम् गृहाणानन्त नागेन्द्र सर्वान् विघ्नान् प्रणाशय॥** (पीछे मण्डलेति पूर्ववत् बोले) ॥९॥

(अब नैर्ऋत्य पश्चिम के बीच में) **ब्रह्म जज्ञानमिति**

गौतमऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो ब्रह्मा देवता सदीप दधिमाषभक्त बलिदाने विनियोगः (जल छोड़कर आगे का मन्त्र बोले) ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्धि सीमत् सुरुचो वेन ऽआवः। सबुध्न्याऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ। ब्रह्मणे नमः। सदीपदधिमाषभक्तबलये नमः। (इससे पूजा करके जल छोड़े और फिर बोले) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण ब्रह्मन् देवेश सर्वसौख्यं विवर्धय। फिर मण्डलेति पूर्ववत् बोले ।।१०।।

मण्डप के बाहर दक्षिण में

सदीप, दधि, माष, भक्त, सिन्दूर, कज्जल, रक्तपुष्प, पक्वान्न, कुंकुम बलि सोपायन रखकर

नहि स्पर्शमिति विश्वामित्रऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः, क्षेत्रपालो देवता बलिदाने विनियोगः (इससे जल छोड़कर आगे का मन्त्र बोले) ॐ नहिं स्पर्शमविदन्न न्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालेहागच्छ। क्षेत्रपालाय नमः। बलये नमः (इससे पूजा करके जल छोड़, फिर बोले) दधिमाषौदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम्। गृहाण त्वं क्षेत्रपाल रक्षोविघ्नं प्रणाशय ।।

पीछे दुर्बल ब्राह्मण की पूजा करके उसको बलि देकर प्रार्थना करे--

भ्राजद्वक्त्रजटाधरं त्रिनयनं नीलांजनाद्रि प्रभम्।
दोर्दण्डान्तगदाकपालमरुणं स्रग्गंध वस्त्रवृतम्।।

घण्टाघुर्घुरमेखला ध्वनियुतं हुंकार भीमं प्रभुम्।
वन्दे संहितसर्पकुण्डलधरं श्री क्षेत्रपालं सदा।।

नमस्कार

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मा-विष्णु-शिवैः सार्धं रक्षा कुर्वन्तु तानि मे ।।इति।।

अथ बलिकाष्ठ तोरणादिपूजन

अथ बलिकाष्ठानि पूजयेत्। यथा-ॐ नागमात्रे नमः। ऐसा बोलकर पूजे। अथ शाखोद् बन्धनानि पूजयेत्। ॐ सर्वेभ्यो शाखोद् बंधन देवताभ्यो नमः।

इससे शाखा उद्बन्धनादि की पूजा कर दे

पीछे पश्चिम द्वार से निकलकर पूर्वादि द्वार तोरणों की पूजा करें। यथा पूर्वं दिशा में मंडप के बाहर हस्तमात्र पर अश्वत्थ नामक सिन्दूर सदृश महेन्द्र पर्वत शंख सहित तोरण को स्थापित करके--

हे अश्वत्थ तोरण एनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय। ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः सुदृढतोरण मावाहयामि। गधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्य दक्षिणां समर्पयामि। ॐ कृतयुगाय नमः इति कृतयुगं संपूज्य तत्रैव राहुं बृहस्पतिञ्च आवाहयामि। राहुं बृहपस्पतिञ्च संपूजयेत्। तत्रैकः कलशः स्थाप्य।

कलश पूजा सारी करें। ऊपर श्रीफल रखकर उस पर ध्रुव पूजा करे।

ॐ ध्रुवमावाहयामि पूजनं कुर्यात्।

अब दक्षिण में जाकर औदुम्बर का बनें विकट नामा चक्रांकित विंध्यनामगिरि युक्त धूमरंग के तोरण रखके पूजा करे यथा--

हे विकटतोरण एनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान् निवारय यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः। विकटतोरणमावाहयामि। त्रैतायुगाय नमः। तत्रैव सूर्याय नमः अंगारकाय नमः। पूर्ववत् पूजनम्। कलशस्थापनं तस्मिन् कलशे धरायै नमः। धरायाः पूजनम्।

पीछे पश्चिम में प्लक्ष (छंवरे) का तोरण सुभीमाख्य स्वर्ण सदृश कान्ति वाले गन्धमादन पर्वत सहित गदा तोरण की पूजा करे यथा--

अयिं सुभीम तोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान् निवारयः। ॐ सामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः। सुभीमतोरणमावाहयामि। सुभीततोरणाय नमः द्वापरयुगाय नमः गन्धाद्यै रुपचारैः पूजनम्। तत्रैव शुक्राय नमः। बुधाय नमः। शुक्रबुधामावाहयामि। स्थापयामि। पूजनम्। कलशे अपि पूर्ववत् स्थापयेत्। तत्र वाक्पतिं आवाहयेत् गन्धाद्यु पचारैः पूजनम्।

पीछे उत्तर में जाकर वट-वृक्ष के सुप्रभाख्य शुद्ध स्फटिक की कान्तिवाले हिमवत् पर्वत सहित पद्मांकित तोरण को स्थापित करके बोले--

एह्येहि सुप्रभ सुतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान् निवारय। अथर्ववेदाधिष्ठिताय सुप्रभ तोरणाय नमः। कलियुगाय नमः।

गन्धादिभिः पूजनम्। तत्रैव सोममावाहयामि। केतुमावाहयामि। शनैश्चराय नमः। शनैश्चर मावाहयामि। सोमकेतुशनेश्चरेभ्यो नमः। गन्धाद्यैः पूजनम्।

तत्रैकः कलशः स्थाप्यः। तस्मिन् कलशे विघ्नेशं आवाहयामि। गन्धाद्यैः पूजयेत्। फिर ध्वजा पताकाओ की पूजा करें।

अब द्वारदर्शो की पूजा करें। यथा--

द्वारोर्ध्वे-ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः देहल्यै नमः।

द्वारशाखाओं की पूजा इनसे करे।

ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः।

द्वार कलशों की पूजा इनसे करें-

ॐ गोदावर्यै नमः। कृष्णायै नमः॥ तथा द्वाराधिष्ठातृ देवेभ्यो नदीभ्यश्च नमः॥ (सब द्वारों के इसी तरह)

पश्चात् इन्द्र अग्नि यमादि लोकपालों की बली पहले दी जा चुकी हैं। सिर्फ यहां पर उन देवों की ध्वजा पताकाओं का आलंभन एवं पूजा करके सामूहिक यह मन्त्र बाले दें।

''ध्वजाय नमः पताका भ्यो नमः''

इमां पताकां रम्यां ध्वजं माल्यादि भूषितम्।
दिक्पालादयः सर्वे स्वी कुर्वन्तु कृपायुताः॥

यस्य यस्य देवस्य यो यो ध्वजः पताका वा तास्तास्ते ते देवाः स्वीकुर्वन्तु॥ इति प्रार्थना॥

पुनः बलि देवे।

अधश्चैवतु ये लोका असुराश्चैव पन्नगा।
सपत्नी परिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्।।
नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारिताः।
स्थानं चैव पितृणां तु प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्।
बलि गृह्णन्त्वि मे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।।
असुरायांतु धानाश्च पिशाचाः मातरो गणाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः।।
जृम्भकाः सिद्धगंधर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायका।।
जगतः शान्तिकर्तारो ब्रह्मद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्ना मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च देवा भूतगणास्तथा।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलि वै सार्वभौतिकम्।।
अनेन बलिदानेन अधो लोकादयः प्रीयन्ताम्।

बहुत सी बलि सामूहिक रूप में धर दें। फिर प्रार्थना करे।

मण्डपे स्थित देवानां पूजने या त्रुटिर्भवेत्।
क्षन्तव्या करुणां कृत्वां प्रार्थनेयं मुहुर्मुहः।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वराः।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु में।।

पीछे हाथ-पैर धोकर प्राग द्वार से मंडप में प्रवेश करके यजमान दक्षिण की ओर बैठकर कर्म कराने की प्रार्थना करें।

अथ सर्वतोभद्रनिर्माण कारिका

अतिसरल कारिका हिन्दी में इस प्रकार है--

तीन-पाँच ग्यारा नौ। सर्वतोभद्र मांडो सा॥

संस्कृत में

प्रागुदीच्यायता रेखा कुर्यादेकोनविंशतिः।
खन्डेन्दुस्त्रिपदः कोणे शृंखला पंचभिः पदैः॥१॥
एकादश पदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः।
चतुर्विशत् पदा वापी परिधिर्विशतिः पदैः॥२॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम्।
श्वेतेन्दुः शंखला कृष्णा वल्लीः नीलेन पूरयेत्॥३॥
भद्राऽरुणा, सिता वापी परिधिः पीतवर्णका।
बाह्यान्तर्दलः श्वेतः कर्णिका पीतवर्णिका॥४।
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वरजस्तमः।
तन्मध्ये स्थापयेद् देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान्॥५॥

विशेष ज्ञान छपे हुए मण्डल से करें।

मिलने का पता: श्री सरस्वती प्रकाशन, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

मध्य में सारे संस्कार करके कलश स्थापन करे। उस पर, पूर्णपात्र पर, सुवर्ण प्रतिमा रखे। उसे वास्तुवत् अम्न्युत्तारणादि करके षोड़शोपचार

से पूजा करे। वस्त्र की जगह कौशेयवस्त्र हो। बाहर पंखुड़ियों पर १५ पात्र भी रखें।

लिंगतोभद्र के भी मूर्ति सत्कारादि सर्वतोभद्रानुसार कर लें। फिर पूजा करें। इसका मंडप भी छपा है। वहाँ देखें समझ में आ जावेगा।

सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम्

आचम्य प्राणानायम्य संकल्पः। अद्यपूर्वोच्चारितशुभ पुण्यतिथौ अमुक देवता प्रतिष्ठा कर्मणि सर्वतोभद्र देवताऽऽ वाहनं प्रतिष्ठा पूजन च करिष्ये।

१ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विव्ः। इति मंत्रेण मध्ये कर्णिकायां भो ब्रह्मनिहागच्छ इह तिष्ठ।

२ उत्तरे परिधि समीते सोमम। ॐ वय७ सोमव्रते तप मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ भूः सोमाय नमः। सोममावाहयामि।

३ ईशान्यां खण्डेन्दौं-ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेद सामसदवृधे रक्षिता पायुरदब्ध, स्वस्तये॥ ॐ भूः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४ पूर्वेइन्द्रम्- ॐ त्रातारमिन्द्रम वितारमिन्द्र ७ हवे हवे। सुहव७ शूरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। इन्द्रमावाहयामि॥

५ आग्नेय्यामग्निम्--ॐ त्वन्नो अग्ने तब देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वंध। त्रातातोकस्य तनये गवामस्य निमेष७ रक्षमाणस्तव व्रते॥ अग्निमा०॥

६ दक्षिणेयम्। ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। यममा० ।।

७ नैर्ऋत्यां निर्ऋतिम। ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामान्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। निऋतिमा० ।।

८ पश्चिमे वरुणम्। ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ समान आयुः प्रमोषी।। वरुणामा० ।।

९ वायव्यां वायुम। ॐ आनो नियुद्भिः शतनीभिरध्वर ꣳ सहस्रिणीभिरूप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिंत्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदाः नः।। वायु मावा० ।।

१० वायुसोमयोर्मध्ये वसून्। ॐ सुगा वो देवाः सदना ऽअकर्मयऽआजग्मेꣳ द न्सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा। वसूनमा०।

११ सोमेशानयोर्मध्ये रुद्रान। ॐ रुद्रा स ꣳ सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्र ऽ इच्छुक्रो देवेषु रोचते।। (रुद्रमावा०) ।। अ० ११

१२ इन्द्रेशानयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्। ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ७ होश्चिद्या वरिवो वित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥ आदित्याना०॥

१३ इन्द्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ। ॐया वाङ्कशा मधुमत्याश्विना सूनृतावती। तया यज्ञ मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा॥ अश्विनावा०॥

१४ अग्नियमयोर्मध्ये विश्वेदेवान। ॐ ओमासश्चर्षणी धृतो विश्वे देवास ऽआगत। दाश्वा ७ सो दाशुषः सुतम्। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥ विश्वेदेवामा०॥

१५ यमनिर्ऋतियोर्मध्ये यक्षान्। ॐ अभित्यं देव७ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव७ रत्नधामभिप्रियं मतिं कविम्। उध्र्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्य पाणि रमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥ यक्षानावा०॥

१६ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये नागान्। ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं ह७ हन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थेऽग्ने हव्य७ रक्ष॥ नागानावा०।

१७ वसुणवाय्वोर्मध्ये गन्धर्वाप्सरसः। ॐ ऋताषाड्ऋत धामाग्नि गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसो मुदो नाम। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा। गंधर्वादीनावा० ॥

१८ ब्रह्मसोमयोर्मध्ये रुद्रम्। ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वापुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वंन॥ रूद्रमावा० ॥ य० अ० २९

१९ रूद्रसोमयोर्मध्ये स्कन्दम्। ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम। संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत७ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ स्कन्दमा०।

२० इत्रैव नंदी शूलमहाकालान्। ॐ ऋषभं मा समानानां सपत्नीनां विषासहिम्। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपर्तिगवाम्। ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे वोचे मशंतमं हृदे। ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं ग्रहा विभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमम्यन मिवज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ। ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षम्। ॐ अतिदिर्ह्यैजनिष्ट दक्षया दुहिता तव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतवंधवः॥ नद्यादीना० ॥

२१ तत्रैव आदितिम्। ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्ष माता

स पिता: स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। अदितिमा० ।।

२२ तत्रैव दुर्गाम्। ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीम् वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गा देवीं शरणामहं प्रपद्येमुतरसि तरसे नमः।। दुर्गामा० ।।

२३ तत्रैव विष्णुम्। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् समूढमस्य पा॑ सुरे।। विष्णुमावा० ।। अ० ५

२४ स्वधाम्। ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।। स्वधामावा० ।।

२५ ब्रह्मयमयोर्मध्ये। मृत्युरोगान्। ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ॅ रीरिषो मोत वीरान्।। मृत्युमा० ।।

२६ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणेशम् ॐ गणानां त्वा गणपति ॅ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॅ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॅ हवामहे वसो मम आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। गणेशमावाहयामि०।

२७ ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये अपः। ॐ शन्नो देवीरभिष्ट आपो स्त्रवन्तु पीतये शंयोरभि स्रवन्तु नः।। अप आवा० ।।

२८ ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये मरुत:। ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहस:। स सुगोपातमो जन:। ॐ मरुद्भ्यो नम: मरुत: आवाहयामि।

२९ ब्रह्मण पादमूले पृथवीम्। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा न: शर्म सप्रथा:॥ पृथ्वीमआवाहयामी॥

३० ब्रह्मण: पादमूले नदी:। ॐ इमं मे यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमं स च ताप रुष्णया। असिकन्या मरुदवृध: वितस्तयाजी कीये शृणुह्या सुषोमया॥ पृथिव्या उत्तरत: ॐ भूगंगादिनदीभ्यो नम:॥ आवा०॥

३१ ब्राह्मण: समन्तात सप्तसागरान्। ॐ इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडया। त्वामवस्युराचके॥ सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि॥

३२ तदुपरि मेरू नाममंत्रेण पूजयते यथा। ॐ मेरवे नम:॥

३३-४० मण्डल वाह्ये श्वेतपरिधौ उत्तरादि क्रमेण--ॐ भूर्भुवः गदायै नम:। ईशानसमीपे त्रिशूलाय नम:। पूर्वे इन्द्रसमीपे वज्राय नम:। आग्नेय्यां अग्निसमीपेॐभू: शक्तये नम:। दक्षिणेयम समीपे ॐ भू:दंडाय नम:। नैर्ऋत्यां निर्ऋतिसमीपे ॐ भू: खड्गाय नम:। पश्चिमे वरुण समीपे ॐ भू: पाशाय

नमः। वायव्यां वायुसमीपे ॐ भूः अंकुशाय नमः। गदाद्या आवाहयामि॥

४१-४८ पुनः पूर्वादिषु दिक्षु। उत्तरे ॐ भूः गौतमाय नमः। ऐशान्याँ ॐ भूः भरद्वाजाय नमः। पूर्वे ॐ भूः विश्वामित्राय नमः। आग्नेयां ॐ भूः कश्यपाय नमः। दक्षिणे ॐ भू जमदग्नये नमः। नेऋत्यां ॐ भूः वशिष्ठाय नमः। पश्चिमे ॐ भूः अत्रये नमः। वायव्यां ॐ भूः अरुन्धत्यै नमः॥ ऋषीनावा०॥ मण्डलबाह्ये कृष्णपारिधौ-ऐंद्रयाद्यष्टदेवता--

४९-५६ पूर्वे ॐ भूः ऐंद्रयै नमः। अग्नेय्याम् ॐ भूः कौमार्यै नमः। दक्षिणे ॐ भूः ब्राह्मयै नमः। नैर्ऋत्यां ॐ भूः वाराह्यै नमः। पश्चिमे ॐ भूः चामुण्डायै नमः। वायव्याम् ॐ भूः वैष्णव्यै नमः। उत्तरे ॐ भूः माहेश्वर्यै नमः। ऐशान्याम ॐ भूः वैनायक्यै नमः॥५६॥

पूर्वोक्त षट्पंचाशत् देवान् देवाश्च आवाहयामि स्थापयामि।

एवं सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनं कुर्यात॥

।। चतुर्लिंगतोभद्र-कारिका ।।

रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्ग-समुद्भव। कोणन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णशृङ्खला ।।१।। वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम्। भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमंष्टा दशैः पदैः ।।२।। शिवस्य पार्श्वतो वार्पी (वार्मी) कुर्यात्पंवपदां सिताम। पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ।।३।। शिरसि शृङ्खलायाश्च कुर्यात पीतपदत्रयम् लिंगानाः स्कंधतः कोष्ठा विशती रक्तवर्णकाः ।।४।। परिधि पीतवर्णैस्तु पदै, षोडशभि स्मृतः ।। पदैश्च नवभिः पश्चाद्रक्तं सकर्णिकम् ।।५।।

कोणेन्दु ३ सफेद। शृङ्खला काली त्रिपदा।

बल्ली-मूंग वाली हरी (याने नीली) सात। भद्र (लाल) चतुष्पद भद्र (लाल के पास अठारह महारुद्र) शिवजी के पास वापी (श्वेत) २४

प्रतिष्ठाप्रभु (स्मार्तप्रभुः) पं. दौलतरामजी ने ८० पृष्ठ में सर्वतोभद्र की टिप्पणी में प्रमाण दिये हैं।

सर्वत्र रुद्रयागे विष्णुयागादौ च सर्वतोभद्रमेव कार्यम्। मयूखादौ अस्यैवोक्तत्वात्) सम्प्रदायानूरोधेन शिवप्रतिष्ठायां

शिव यागे वा लिंगतो भद्रकरणेस्पि नत्र सर्वतौभद्रदेवता एताबाह्या: मयूखादौ तासामेवावाहनोक्ते: देवतान्तरानुक्तेश्च। लिंगतोभद्रे अष्टभैरवावाहनमुक्तं तत मण्डलाद् बहि: प्रागादिक्रमेण ऐन्द्राद्यादि-अष्टशक्तिसमीपे कार्यम्। एतेन सर्वंतोभद्र षट्पंचाशत् (५६) देवता: लिंगतोभद्रे तु ६४ देवता इति निश्चितम्।

लिंगतोभद्रेषु तु मण्डलाद् बहिरेव पूर्वाद्यष्टदिक्षु अष्टभैरवानां स्थापनमिति विशेष:।

इत्यादि प्रमाणों में शिवप्रतिष्ठा में भी सर्वतोभद्र की रचना करनी चाहिये परन्तु प्रागादिक्रम से आठ अष्टभैरवों की भी स्थापना तथा पूजन करने का लेख है।

३२ देवात्मक लिंगतोभद्र मे तो केवल ३२ भैरवों (शिवों) का स्थान हैं। शिवजी के अंगीभूत उमा, गणपति, स्कन्द कुबेरादि का नामोल्लेख नहीं होने से मुझे तो वह नहीं जचा। अत: सर्वतोभद्र तथा बाहर अष्टभैरव (रुद्र) निर्माण पूजन ही मान्य हैं। अथवा ३४ रेखात्मक द्वादशलिंगतोभद्र बनाना अच्छा लगता है। जिसमें सारे शिव परिवार के साथ भगवान् विष्णु उनके परिवार एवं ब्रह्मादि देवताओं के स्थान है।

अथ लिंगतोभद्र ३२ देवतानां

वैदिकमंत्रैरावाहनम्

सर्वतोभद्र--बाह्ये पूर्वादिक्रमेण--ॐ कृत्स्नातया धावते सत्वनां पतये नमो नम: सहमामाय निव्याधिन

आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गणे ककुभाय स्तेनानाँ पतये नमो नमो निचेरवे परिचाराण्यानां पतये नमः॥ ॐ भूः असिताङ्ग भैरवाय नमः। असितांग भैरवमावाहयामि।१। आग्नेय्याम्- ॐ श्वित्र आदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्घ्रीनमस्ते मत्या अरण्याय सृमरो रूरूः रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौ हस्ते वाजिनां कामाय पिकः॥ ॐ भूः रूरूभैरवाय नमो रूरूभैरवमा०।२। दक्षिणस्याम्- ॐ उग्रं लोहित्येन मित्र ऽ सौव्रत्येन रूद्रं दौर्वत्येनेन्द्रं प्रकीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठय ऽ रुद्र स्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः। चण्डभैरवामावा०।३। नैर्ऋत्याम्-ॐ इन्द्रस्य क्रोड़ोदित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवोदित्यै भसज्जीमृतान् हृदयौपशेनांतरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवा कौ मतस्नाभ्यान्दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीन्हा वल्मीकान् क्लोमभिग्लौं भिर्गुल्मान् हिराभिः स्त्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिभ्या ऽ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना। ॐ भूः क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवमावा०।४। पश्चिमे-ॐ उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रा वैष्णवा उन्नतः शितिवाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्रा बार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषा आग्निमारूतताः श्यामाः पौष्णा॥ ॐ भू उन्मत्त भैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवमावा०।५। वायव्याम्- ॐ कार्षिरसि

समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः॥ ॐ भूः कपालभैरवाय नमः कपालभैरवमावा० ।६। उत्तरे- ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च सासह्वांश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा॥ ॐ भूः भीषण भैरवाय नमः भीषणभैरवमाया० ।७। ईशान्याम्- ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ॐ भूः संहार भैरवाय नमः संहारभैरवमावा ।८।

तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण-ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकंठाय च॥ ॐ भूः भवाय नमः ।९।

आग्नेय्याम्- ॐ अग्नि ऽ हृदयोनाशनि ऽ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्न हृदयेन भवं यकना॥ शर्व मतःस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमंतः पर्शव्येनोग्रंदेवं वनिष्ठुना वरिष्ठे हनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्॥ ॐ भूः शर्वाय शर्वमावा० ।१०। दक्षिणे-ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ऽ सौव्रत्यैन रूद्रं दोर्व्रत्येनेन्द्रम प्रकीडेन मरूतो बलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्यकंठ्य ऽ रूद्रस्यान्तः पाश्र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्टूः पशुपते पुरीतत् ॐ पशुपतये नमः पशुपतिमावा० ।११। नैऋत्याम्-ॐ. तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।

पूषानो यथा वेदसामसद् वृधेरक्षिता पायुरऽदब्धः स्वस्तये। ॐ भूः ईशानाय नमः ईशानमावा० ।१२। पश्चिमे- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूः रुद्राय नमः। रुद्रमावा० ।१३। वायव्याम्-ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सांसह्वांश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा। ॐ भूः उग्राय नमः। उग्रं आवा० ।१४। उत्तरे-ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय॥ ॐ भूः भीमाय नमो भीममावा० ।१५। ईशान्याम्- ॐ मानो महान्तमुत मानो अर्भकं मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्। मानः वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वा रूद्ररीरिषः॥ ॐ भूः महतं नमो महान्तमावा० ।१६। तद्बाह्ये पूर्वादिक्रमेण- ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथा॥ ॐ भूः अनन्ताय नमः, अनन्तमावा० ।१७। आग्नेय्याम्-ॐ देहि में ददामि ते निमे धेहि निते दधे। निहारञ्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। ॐ भूः वासुकये नमोवासुकिमावा० ।१८। दक्षिणे-ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यश्च पुंजिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यौः मृगयुभ्यश्च वो नमः। नमः श्वभ्यः श्वतिभ्यश्च वा नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाच च पशुपतये च नमो

नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ ॐ तक्षकाय नमः तक्षकमावा० ।१९। नैऋत्याम्--ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते बनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्री ह७ सा वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्ते कूपारस्य ह्रियै शल्यकः॥ ॐ भूः कलिशाय नमः कुलिशामावा० ।२०।

पश्चिमे--ॐ सोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शकाते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वोन्यंकुः कर्कटस्तेनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः॥ ॐ भूः कर्कोटकाय कर्कोटकमावा० ।२१। वायव्याम्--ॐ अग्निर्ऋषिः पनमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे माहगयम्। उपयामगृहोतोस्यग्नये त्वा वर्चमे एषते योनिरग्नये त्वा वर्चमे। ॐ शंखपालायनमः शंखपालमावा० ।२२। उत्तरे--ॐ सीसेन तंत्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञ७ सनिता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्॥ ॐ भूः कंबलाय नमः कंबलमावा० ।२३। ईशान्याम्--अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे पुरस्तात् सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वा रोश्विंनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्या ७ सौर्ययामो श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्क्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ इन्द्रायस्व पस्याय वेदद्वैष्णवौ वामनः॥ अश्वतराय नमः अश्वतरमावा० ।२४। ईशानेन्द्रयोर्मध्ये-ॐ नमः श्वभ्यः श्व

पतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॐ शूलाय नमः शूलमावा० ।२५। इन्द्राग्न्योर्मध्ये--ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखाग्निरजायत। ॐ भूः चन्द्रमौलिने नमश्चन्द्रमौलिमावा० ।२६। अग्नियमर्योर्मध्ये- ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवी। रयिम्पिशङ्ग बहुलं पुरुस्पृहऽ हरिरेति कनिक्रदत॥ ॐ भूश्चन्द्रमसे नमः, चन्द्रमसेमावा० ।२७। यमनिर्ऋतिमध्ये-ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोपणश्चर्षणीनाम्। सक्रन्द्रनो निमिष एकवीरः शतऽ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ ॐ भूः वृषभः ध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावा० ।२८। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये-ॐ सुगावो देवाः सदना अकर्मय आजग्मेदऽ सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीऽ षयस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा। ॐ भूः त्रिलोचनाय नमः त्रिलोचनमावा० ।२९।

वरुणावायुर्मध्ये--ॐ रुद्राः सऽ सृज्य पृथिवी बृहज्ज्योति समीधिरे। तेषाँ भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते॥ ॐ शक्तिधराय नमः शक्तिधरमावा० ।३०। वायुसोमयोर्मध्ये--ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ महेश्वराय

नमो महेश्वरमावा०।३१। सोमेशानयोर्मध्ये-ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तयायज्ञं मिमिक्षतम्।। ॐ भूः शूलपाणये नमः शूलपाणिमावाहयामि।३२।

फिर लिंगतोभद्र पर मध्य में कलश रखकर उस पर अभ्युत्तारण पूर्वक मूर्ति विराजमान करके पंचोपचार से पूजा करें। फिर प्रार्थना करे--

इति लिंगतोभद्रदेवता स्थापनं, पूजनं पंचोपचारैः कुर्यात।

पूजितोऽसि मया देव कुर्यास्त्वं मम मंगलम्।
अस्य यज्ञस्य संसिद्धै क्षमस्व वृषभध्वज।।

इति लिंगतोभद्रस्थापनपूजनम्

व्रतोद्यापन चन्द्रिकानुसारेण

चतुर्लिंगतोभद्रमंडल

देवतास्थापनम्

(पूर्वलिंगेषु) वीरभद्राय नमः। वीरभद्रमावाहयामि स्थापयामि।१। शँभवे नमः। शंभुमावाहयामि स्था०।२। अजैकपदे नमः। अजैकपदमावाहयामि स्था०।३। (दक्षिण लिंगेषु) अहिर्बुंध्न्याय नमः। अहिर्बुध्न्यमावा० स्था०।४।

पिनाकिने नमः। पिनाकिनमावा० स्था० ।५। शूलपाणये नमः। शूलपाणिमावा० स्था० ।६। (पश्चिमलिंगेषु भुवनाधीश्वराय नमः। भुवनाधीश्वरमावा० स्था०।७। कपालिने नमः कपालिनमावा० स्था ।८। दिक्पतये नमः दिक्पतिमावा.स्था. ।९। (उत्तर लिंगेषु) रुद्राय नमः रूद्रमावा० स्था० ।१०। शिवाय नमः शिवमावाह स्था.।११। महेश्वराय नमः महेश्वरमावा० स्था० ।१२।

(ततः पूर्वादि क्रमेणाष्टभैरवदेवताः) असितांग भैरवायनमः असितांग भैरवमावा० स्था० ।१३। रूरूभैरवाय नमः रूरूभैरवमावा० स्था० ।१४। चंडभैरवाय नमः चंडभैरवमावा० स्था० ।१५। क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवमावा० स्था० ।१६। उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मतभैरवमावा० स्था० ।१७। कपालभैरवाय नमः। कपालभैरवमावा० स्था० ।१८। भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवमावा० स्था.।१९। संहारभैरवाय नमः संहारभैरवमावा० स्था० ।२०।

(ततः पूर्वादिक्रमेण चतुर्विंशतिदेवताः) भवाय नमो भवमावा० स्था० ।२१। शर्वाय नमः शर्वमावा० स्थापयामि।२२। रूद्राय नमो रूद्रमावा० स्था० ।२३। पशुपतये नमः पशु पतिमावा० स्था० ।२४। महते नमो महान्तं आवा० स्था० ।२५। भीमाय नमो भीम आवा० स्था० ।२६। ईशानाय

नमः ईशानं आवा० स्था० ॥२७॥ अनन्ताय नमो अनंतं आवा० स्था० ॥२८॥ तक्षकाय नमः तक्षकं आवा० स्था० ॥२९॥ वासुकये नमो वासुकिमावा० स्था० ॥३०॥ कुलिशाय नमः कुलिशमावाहयामि स्था० ॥३१॥ कर्कोटकाय नमः कर्कोटकमावा० स्था० ॥३२॥ शंखपालाय नमः शंखपालमावा० स्था० ॥३३॥ कम्बलाय नमः कम्बलमावा० स्था० ॥३४॥ अश्वतराय नमः अश्वतरमावा० स्था० ॥३५॥ शूलिने नमः शूलिनमावा० स्था० ॥३६॥ चंद्रमौलये नमः चन्द्रमौलिमावा० स्था० ॥३७॥ चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसेमावा० स्था० ॥३८॥ वृषभ ध्वजाय नमो वृषभध्वजमावा० स्था० ॥३९॥ त्रिलोचनाय नमःत्रिलोचनमावा० स्था० ॥४०॥ शक्तिधराय नमः शक्तिधरमावा० स्था० ॥४१॥ महेश्वराय नमः महेश्वरमावा० स्था० ॥४२॥ शूलधारिणे नमः शूलधारिणमावा० स्था० ॥४३॥ स्थाणवे नमः स्थाणुमावा० स्था० ॥४४॥

(मध्ये कर्णिकायाम्) ब्रह्मणे नमो ब्रह्माणमावा० स्था० ॥१॥ (उत्तरे उत्तरशिवलिंगस्याधः) सोमाय नमः सोममावा० स्था० ॥२॥ (ईशान्यां खण्डेन्दो) ईशानमा० स्था० ॥३॥ (पूर्वलिंगस्याधः) इन्द्राय नमः इन्द्राम आ० ॥४॥ (अग्नेये खंडेन्दौ) अग्नये नमः अग्निमावा० ॥५॥ (दक्षिणे दक्षिणलिंगस्याधः) यमाय नमो यममावा ॥६॥ (नैर्ऋत्या

खंडन्दौ) निर्ऋतये नमो निर्ऋतम् आ० ॥७॥ (पश्चिमे पश्चिमलिंगस्याधः) वरुणाय नमो वरुणमा:० ॥८॥ वायव्यां खंडेन्दौ) वायवे नमोवायु० ॥९॥ (वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे) अष्टवसुभ्यो नमोऽष्टवसूनावा० ॥१०॥ (सोमेशानयोर्मध्येभद्रे) एकादश रुद्रेभ्यो नमो एकादशरुद्रान्० ॥११॥ (ईशानेन्द्रयोर्मध्ये भद्रे) द्वादशादित्येभ्यो नमो द्वादशादित्यान्० ॥१२॥ (इन्द्राग्न्योर्मध्ये भद्रे) अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवा० ॥१३॥ (अग्नियमयोर्मध्ये भद्रे) विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमो विश्वान्देवान्० ॥१४॥ (यमनिर्ऋत्योर्मध्ये भद्रे) सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान्० ॥१५॥ (निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे) भूतनागेभ्यो नमो भूतनागान्० ।१६॥ वरुणवायव्ययोर्मध्ये भद्रे) गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरान् आवा० ॥१७॥ (उत्तरलिंगस्याधः) स्कन्दायनमः स्कन्दमावा० ।१८। (तत्रैव नन्दीश्वराय नमो नन्दीश्वरम् ॥१९॥ शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकालौ आ० ॥२०॥

(ब्रह्मेशानयोर्मध्ये) (शृंखलायाम्) दक्षादिसप्तकाय नमो दक्षादिसप्तकान् आ० ॥२१॥ (पूर्वलिंगस्याधः) दुर्गायै नमो दुर्गामि० ॥२२॥ (तत्रैव) विष्णवे नमो विष्णुम् ॥२३॥

(ब्रह्माग्न्योर्मध्ये) (शृंखलायाम्) स्वधायै नमः स्वधाम्० ॥२४॥ (दक्षिणलिंगस्याधः) मृत्युरोगाभ्यां नमो मृत्युरोगौ आ० ॥२५॥ (ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये) (शृंखलायाम्)

गणपतये नमो गणपतिम्० ॥२६॥ (पश्चिमलिंस्याध:) अद्भ्या नम: अद्भ्य आवा.॥२७॥ (ब्रह्मवाय्वोर्मध्येशृंखलायाम) मरुद्भ्यो नमो मरुत आ० ॥२८॥ (ब्रह्मण: पादमूले कर्णिकायाम्) पृथिव्यै नम: पृथिवीम० ॥२९॥ (तत्रैव) गङ्गादिनदीभ्यो नमों गङ्गादिनदी: आ० ॥३०॥ (तत्रैव) सप्तसागरेभ्यो नम: सप्तसागरान् ॥३१॥ (ब्रह्मणो मस्तके कर्णिकोपरि) मेरवे नमो मेरुम० ॥३२॥ (उदक लिंगे) (सद्यौजाताय नम: सद्योजातम्० ॥१॥ (प्रातीची लिंगे) वामदेवाय नमो वामदेवम्० ॥२॥ (दक्षिणलिंगे) अघोराय नम: अघोर मा० ॥३॥ (प्रचीती लिंगे) तत्पुरुषाय नम: तत्पुरुषम् ॥४॥ (कर्णिकायां मेरुपरि) ईशानाय नम: ईशानम् ॥५॥ (परिधौ) परिधये नम: परिधम् ।६। (मेरो: परिधि समंतात् लिगानां स्कन्धे विंशतिकोष्ठेषु) चतु: पुरीभ्यो नमश्चतु: पुरी: आ० ॥७॥ (आग्नेयादिषु कोणेषु शृंखलाशिरसि) ऋग्वेदाय नम: ऋग्वेदम्० ॥८॥ यजुर्वेदाय नमो यजुर्वेदम् ॥९॥ सामवेदाय नम: सामवे दम्० ॥१०॥ अथर्ववेदाय नम: अथर्ववेदामावाहयामि० ॥११॥

उत्तरलिंगस्य दक्षिणवापीमारभ्य वामवापीपर्यन्तासु अष्टसु वापीषु) भवाय नमो भवमावा० ॥१२॥ शर्वाय नम: शर्वम्आवा० ॥१३॥ पशुपतये नम: पशुपितम्० ॥१४॥ ईशानाय

नमः ईशानम्० ।१५। उग्राय नमः उग्रम० ।१६। रुद्राय नमो रुद्रम० ।१७। भीमाय नमो भीमम्० ।१८। महते नमो महान्तम् ।१९।

(तत्तद्वापीसमस्थैकैकपदेषु क्रमशः) भवान्यै नमो भवानीम्० ।।२०।। शर्वाण्यै नमः शर्वाणीम्० ।।२१।।

पशुपत्यैनमः पशुपतीमावा० ।।२२।। ईशान्यै नमः ईशानीम्० ।।२३।। उग्रायै नमः उग्राम्० ।२४। रुद्राण्यै नमौ रुद्राणीम ।२५। भीमायै नमो भीमाम्० ।२६। महत्यै नमो महतीम्० ।।२७।।

(ॐ पृथ्वीतत्वाय नमः आ० ।२८। जलतत्वाय नमः आ० ।२९। तेजस्तत्वाय नमः आ० ।३०। वायुतत्वाय नमः आ० ।३१। आकाशतत्वाय नमः आ० ।।३२।।

(ब्राह्यश्वेतपरिधौ उत्तरतः सोममारभ्य वायुपर्यन्तमायुधानि) गदायै नमो गदाम्० ।।३३।। त्रिशूलाय नमः त्रिशूलम्० ।३४। वज्राय नमो वज्रम्० ।३५। शक्तये नमः शक्तिम्० ।३६। दण्डाय नमो दण्डम्० ।३७। खड्गाय नम० खड्गम्० ।।३८।। पाशाय नमः पाशम्० ।।३९। अंकुशाय नमः अंकुशम्० ।।४०।।

(तद्बाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरतः क्रमेण) गौतमाय नमो गौतम्० ।४१। भरद्वाजाय नमो भरद्वाजम् ।।४२।। विश्वामित्राय

नमो विश्वामित्रम्० ।।४३।। कश्यपाय नमः कश्यपम्० ।४४। जमदग्नये नमो जमदग्निम्० ।।४५।। वशिष्ठाय नमो वशिष्ठम् ।।४६।। अत्रये नमो अत्रिम्० ।४७। अरुन्धत्यै नमो अरुन्धतीम् ।।४८।।

(तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ उत्तरतः क्रमेण) ऐन्द्रयै नमः ऐन्द्रीम० ।।४९।। कौमार्यै नमः कौमारीम० ।।५०।। बाह्मयै नमो बाह्मीम् ।।५१।। वाराह्यै नमो वाराहीम्० ।।५२।। चामुण्डायै नमोश्चामुण्डाम० ।।५३।। वैष्णव्यै नमो वैष्णवीम्० ।।५४।। महेश्वर्यै नमो माहेश्वरीम्० ।।५५।। वैनायिक्यै नमो वैनायिकीम० ।।५६।। (१२७) इति चतुर्लिंगतोभद्र -मंडलदेवताः प्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु। ततः चतुर्लिंगतोभद्र-मंडलदेवतानां पूजनम्। चतुर्लिंगतो भद्रमंडल देवताभ्यो नमः इति मंत्रेण पूजनम् प्रार्थना-

एह्येहि गौरीशं पिनाकपाणे शशाँकमौले वृषभाधिरूढ़।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

इति श्रीव्रतोद्यापनचन्द्रिकानुसारेण चतुर्लिंगतोभद्र पूजनम् ।।

कुण्ड स्वरूप

१- एक हाथ का कुण्ड = (२४) (चौबीस अंगुल। बराबर (१) एक हाथ। बराबर (१।।) डेढ़ फुट। (१।।) डेढ़ फुट गहरा एवं चाकौर बराबर (१।।) फुट।

नोटः-ध्यान रहे कि (१।।) डेढ़ फुट मेखला सहित एवं मेखला रहित भी बना सकते हैं।

२-कंठ एक (१) अंगुल बराबर (।।।) पौन इंच को छोड़कर मेखला बनाना चाहिये।

३-मेखला प्रथम (ऊपर की) (४) चार अंगुल, बराबर (३) तीन इंच चौड़ी एवं ऊंची श्वेतवर्ण की।

मेखला दूसरे नम्बर की-(३) अंगुल बराबर (१।) सवा दो इंच ऊंची तथा चौड़ी लाल रंग की।

तीसरी मेखला (याने नीचे की) (२) दो अंगुल बराबर (१।।) डेढ़ इंच ऊंची तथा चौड़ी। कृष्ण वर्णं की।

४- योनि (१२) बारह अंगुल बराबर (९) नौ इंच ऊंची।

(१२) बाहर अंगुल (९) नो इंच की लम्बी।

(८) आठ अंगुल (६) छह इंच चौड़ी रक्तवर्ण की बनाई जावे।

कुंड के लिए विशेष ज्ञातव्य--

कुंड में अधिक खात होने से यजमान रोगी हो जाता है। कम होने पर गौ मर जाती है। कुंड टेढ़ा हो तो संताप होता है। मेखला की अधिकता से गौ और धन का क्षय। योनि न हो तो पत्नी का नाश होता है। कण्ठ न हो तो पुत्र का नाश होता है। कुंड मंडपादि प्रमाण से कम हो तो महाव्याधि। अधिक होने पर शत्रुवृद्धि तथा कष्ट होता है।

कुण्ड पूजा

यदि कुंड बनाया हो तो ये बाते विशेष हैं--

सपत्नीक यजमान आचमन प्राणायाम करके पश्चिम भाग में बैठकर निम्न संकल्प करें--

पूवोक्त गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक देवप्रतिष्ठा कर्मणि अग्निस्थापनमहं करिष्ये। पुनर्जलमादाय तदंगतया संमार्जन मेखला-योनि-कण्ठनाभिप्रभृतिदेवतानां स्थापन प्रतिष्ठा पूजन महं करिष्ये।

फिर अग्न्यायतन को दूर्वा से संमार्जन करके कुशोदक से कुंड का प्रोक्षण करें। यथा-

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता नऽऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो व शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।

फिर हाथ में अक्षत लेकर कुंड को स्पर्श करके आवाहन करें।तथा-

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म-विनिर्मितम्
शारीरं थच्छ ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम।।

फिर निम्न मंत्रों से प्रार्थना करें--

ये च कुण्डे स्थिता देवा कुण्डाङ्गे याश्च देवताः।
ऋद्धिं यच्छतु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विताः।।
हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्व कर्मणाः।
अस्माकं वांछितां सिद्धि यज्ञ सिद्धि ददस्व च।।

पश्चात् कुण्डमध्ये-ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मैः विशः समनमन्त

पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत।। ॐ विश्वकर्मणे नमः।

ऐसा बोलता हुआ गंधाक्षत पुष्पों से विश्वकर्मा की पूजा करके प्रार्थना करें। यथा-

अज्ञानदा ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः।।
नाशय त्वखिलांस्तास्तु विश्वकर्मंन् नमोस्तु ते।।

पश्चात् ऊपर मेखला को श्वेत वर्ण से अलंकृत करके उन पर विष्णु भगवान का आवाहन करें। यथा-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदना। विभो यक्षस्य रक्षार्थं कुंडे सन्निहितो भव।। ॐ विष्णवे नमः।। से पूजन करे यथा--

प्रथम मेखला की पूजा यो करें।

प्रथम मेखलायै विष्णुदैवत्यै सात्विकायै श्वेतवर्णलंकृतायै नमः।

मध्यम मेखला पूजन (यह रक्तवर्णं होनी चाहिये) इस पर ब्रह्माजी का पूजन इस मंत्र से करें--

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरूचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः।। हंसपृष्ठसमारूढ देव देवगणावृत।

रक्षार्थ मम यज्ञस्य कुण्डेस्मिन् सन्निधौ भव।। ब्रह्मणे

नमः इतिपूजनम्।। द्वितीय मेखलायै ब्रह्मदेवस्यै राजस्यै रक्तवर्णालंकृतायै नमः।। इति।।

अधोमेखला कृष्णवर्णा पर रुद्र का आवहन पूजन करें। यथा-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। अ० ३।६०।।

गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर।

आगऽछ भगवान् रुद्र कुण्डेस्मिन् सन्निधौ भव।। रूद्राय नमः।

इससे पूजन करके बोले--

तृतीयमेखलायै रुद्रदैवत्यै तामस्यै कृष्णवर्णालंकृतायै नमः।।

अब पहले वहां गौरी की पूजा करें--

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमोनयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः कांपीलवासिनीम् गौर्ये नमः। गन्धपुष्पाणि समर्पयामि।

पश्चात् कुंडयोनि पूजयेत्।। ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मा त्वा हि ७ सीन्मा माहि७ सीः।।

कुंडयोन्यै नमः इति संपूज्य प्रार्थयेत्।

प्रार्थना

सेवन्ते महतीं योनिं सिद्ध देवर्षि मानवा।

चतुरशीति लक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः॥
पशुवः पक्षिणः सर्वेसं सरन्ति यतो भुवि।
येनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका॥
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायिनी।
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोस्तु ते॥

अथ कण्ठ पूजायां रुद्रपूजनम्। कण्ठ पर रुद्रपूजा करे-

मंत्र--नील ग्रीवाः शितिकण्ठा शर्वाऽअधः क्षमाचराः तेषज्ञ ꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ अ० १६।५७॥
कण्ठे रुद्रायः नमः॥ गन्धंः पुष्पाणि च समर्पयेत॥

पश्चात कंठ पूजा में यो बोलकर गन्ध पुष्प चढ़ावे-

जीवनं सर्वजन्तनां स्त्रगादिस्थानमुत्तमम्।
उत्तमांगस्य चाधारं कण्ठमावाहऽ याम्यहम॥

कण्ठाय नमः गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि।

अथ नाभि पूजा

ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मे ऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। अ० २०।९॥

पद्माकाराऽथवाकुण्ड सदृशाकृति-संयुता।
आधारः सर्व कुंडानां नाभि मावाहयाम्यहम्॥ 'नाभ्यै नमः' गन्धपुष्पं समर्पयामि॥

कुंडमध्ये वास्तुपूजनम्॥ आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं

महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल तल वासिनम्।
वास्तुपुरुषाय: नम:।

ॐ वास्तुपुरुषाय नम: अमुम्बलिं समर्पयामि॥

इनसे पेड़े की बलि चढ़ावे

यस्य देहे स्थिता क्षौणी ब्रह्माण्डं विश्व मंडलम्।
व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम्॥
पितामह सुतं मुख्य वन्दे वास्तोस्पतिं प्रभुम्।
वास्तु पुरुष देवेश सर्वविघ्न हरो भव॥
शांति कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छमे।

अब कुंड में त्रिकोण या षट्कोण गन्ध (रोली) से लिखकर उस पर अष्टदल पद्म बनाकर इन २ की पूजा करें--

ॐ ब्रह्मणे नम:। विष्णवे नम:। रुद्राय नम:। ऋग्वेदाय नम:। यजुर्वेदाय नम:। अनंताय नम:। हिरण्यगर्भाय नम:। श्रीकण्ठाय नम:। धनदाय नम:। शिवाय नम:। धर्माय नम:। सूर्याय नम:।

एतान् देवान् गन्धादिभि: संपूजयेत्।

इनकी गन्धादि से पूजा करें।

तत: पञ्चभू संस्कारान् कृत्वा अरणि मंथन द्वारा अग्निं स्थापयेत्॥

वहां पंच भू संस्कार करके अरणि मंथन द्वारा अग्निस्थापन

ग्रहशांतिवत् करें।

अथवा स्थण्डिल (यज्ञ वेदी) पर होम करें। तो भी पंचभू संस्कार तो करे।

यथा कुशकाँडिकाकरणम्

पंचगव्येन शुद्धायां भूमौ दर्भैः परिसमूहनम्

नोटः- पहले वेदी को कुशाओं से बुहारा देकर साफ करें।

हस्तमात्र-परिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशै परिसमूह्य तानैशान्यां परित्यज्य (उन कुशाओं को ईशान में त्याग दे) गोमयेनोपलिप्य (वेदी पर गोबर से लीप दे)

स्रुवमूलेन प्राङ्मुखं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर-क्रमेण त्रिरूल्लिख्य उल्लेखन क्रमेणनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदुमुद्धृत्य ऐशान्यां दशि परिक्षिपेत। तत उदकेन अभ्युक्षणम्।

अब श्रुवे के मूल से उस पर पश्चिम से पूर्व की तरफ तीन रेखा खींच दें। अनामिका और अंगुष्ठ से उन रेखाओं की कुछ-कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें। इसके बाद वेदी पर जल सींच दें।

एते पंच भू संस्कारा यत्र यत्राग्निस्थापनं तत्र तत्र क्रियन्ते।

ये पांचों भूसंस्कार जहां-जहां अग्नि स्थापना हो वहां-वहां करने चाहिये।

अथाग्निस्थापनम्

वामहस्तानामिकया भूमिं स्पृशन् ताम्रपात्रेण

(कांस्यपात्रेण वा) आहृतमग्निं स्वाभिमुखं निदध्यात्। तद्रक्षार्थकंचिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्षतादि प्रक्षेपः।

बायें हाथ की अनामिका से पृथ्वी को स्पर्श करें, ताबें या कांसी के पात्र में (सुवासणी से) अग्नि मंगावे। अग्नि को अपने सामने रख देवें (और अग्नि लाने वाले को दक्षिणा देवें) अग्नि की रक्षार्थ किसी को नियुक्त करके अग्नि लाने के पात्र में अक्षतादि डाल दें।

कुंड में हवन करें तो योनि मार्ग से अग्नि स्थापन करें।

अग्नि को स्वाभिमुख स्थापित कर यह मंत्र बोले--

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवांऽआ सादयादिह॥ अ० ११।१७॥

अरणी मंथन से अग्नि उत्पन्न करनी हो तो पहले अम्बे अम्बालिके इत्यादि मंत्र बोलकर--

अरणी पूजा करें फिर वस्त्राच्छादन करके या सबको दिखाना हो तो यों ही मंथन करें, पंडित लोग अग्नि के मंत्र बोलते रहें। अग्नि उत्पन्न होने पर आचार्य और मंथन सहायक ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें। फिर अग्नि पर छोटे-छोटे काष्ठ आदि डालकर कुंड से बाहर अग्नि कोण में रखकर अग्नि कोण मार्ग से कुंड में रख कर **'ॐ अग्निं दूतम'** आदि मंत्र से नाभिमध्य से स्थित कर दें।

ततोऽग्निं प्रदक्षिणाकृत्य पुष्प चंदन ताम्बूल पूगीफलद्रव्यवस्त्राण्यादाय अग्नेर्दक्षिणतो वास्त्रतरणं कल्पयित्वा ब्राह्मणं (ब्रह्माणं) पादप्रक्षालन गन्धमाल्यादिभिपूजय हस्ते धौतवंत्रोत्तरीय कमण्डलु

भूषणादिकं गृहीत्वा संकल्पः।

फिर अग्नि की प्रदक्षिणा करके पुष्प, चंदन, तांबूल, सुपारी, द्रव्य और वस्त्र लेकर अग्नि के दक्षिण भाग में आसन बिछाकर ब्राह्मण को ब्रह्मा मानकर पाद प्रक्षालन चंदन मालादि से पूजकर हाथ में धोती, दुंपट्टा, लोठा भूषणादि लेकर संकल्प पढ़े यथा--

ॐ अद्यकर्तव्यामुका ध्वरकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं ममुकगौत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणं एभिर्द्र व्याक्षतपूंगीफल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणें। इतिवृणुयात्।

यह जलादि ब्राह्मण को देवे

ब्राह्मण उत्तर देवे '**वृतोऽष्मि**' फिर यजमान इसका मंत्र से अभिषेक करे--अथवा कुशा का ब्रह्मा बनाकर पूजा कर दें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। तया च श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते। अ०१९।२०।

इति प्रतिवचनमुक्त्वाऽग्नेर्दक्षिणतः कल्पितासन उपविशेत। उपवेशयेद्धा।

इस प्रकार अभिषेक करके अग्नि के दक्षिण में कल्पित आसन पर बैठ जावे या कल्पित ब्रह्मा को विराजमान कर दें।

ततः प्रणीता पात्रं वारणकाष्टमयं द्वादशांगुलौच्चं चतुरंगुलमध्यखातं पद्माकृतिं पुरतो निधाय जलेनापूर्यं कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि

निदध्यात।

इसके बाद यजमान उस प्रणीतापात्र को जो (१२) बारह अंगुल ऊंचा, (४) चार अंगुल गहरा (पलाशादि यज्ञीय काष्ठ का बना) पद्माकार होता है, उसे जल से भरकर कुशाओं से आच्छादान करे ब्रह्मा का मुख देखकर या ब्रह्मा को दिखाकर अग्नि के उत्तर की ओर कुशा पर रख देवें।

ततोबर्हिषं परिस्तरणम्

बर्हिर्नाम्नामेकाशीति दर्भदलानां अथवा यावल्लब्धानां चतुर्भागं कृत्वा। यथा एकेन दर्भेण शून्यहस्तो न भवति, तथा प्रथमभागमादाय अग्नेयादीशानान्तं। द्वितीयभागमादाय ब्रह्मणो अग्निपर्यन्तम। तृतीय भाग मादाय नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। चतुर्थभाग मादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तं परिस्तरणं कुर्यात्।

यहाँ (८१) इक्यासी दर्भदल या जितने भी मिलें, उनके चार भाग करें। एक अधिक इसलिए बताया है कि हाथ खाली न रहे एक दर्भा तो रहे।

पहले भाग को अग्नि कोण से ईशान तक रखें। दूसरे भाग को ब्रह्माजी से अग्निपर्यन्त। तीसरे भाग को नैर्ऋत्य से वायव्य तक। चौथे भाग को अग्नि से प्रणीता पर्यन्त रखें।

विशेष यह ध्यान रहे कि कुशाओं का अग्रभाग उत्तर पूर्व की तरफ रहे **यथा प्रागुदेगग्रैः। दक्षिणतः प्रागग्रैः। प्रत्यगुदगग्रे। उत्तरतः प्रागग्रैः (ब्रह्मकर्म समुच्चयः)**

अथ पात्रसाधनम्

अग्नेरुत्तरत: पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणीं साग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वय, प्रोक्षणीपात्रे आज्यस्थाली, बरुस्थाली, सम्मार्जनकुशा: पंच, उपयमनकुशा: सप्त, समिधस्तिस्त्र: प्रादेशमात्रा:, स्त्रुव खादिर आज्यं षट्पंचाशदुत्तरशतद्वयमुष्टयवछिन्नं तण्डुल पूर्णपात्र दक्षिणा (सहित) पवित्र-च्छेदन कुशानां पूर्वपूर्वक्रमेण एतान्यासादनोयानि ।।

फिर अग्नि से अर्थात् वेदी से पश्चिम दिशा में उत्तर की तरफ से ये सामग्रियाँ रखें। पवित्र तोड़ने की (३) तीन डाभ, पवित्र करने की (२) डाभ, प्रोक्षणीपात्र, घी का पात्र, चरुपात्र संमार्जन की (५) पांच कुशा, उपयमन की (७) सात कुशा, प्रादेश (एक विलांत) मात्र तीन समिधा, खैर का स्त्रुवा और चाँवलों से भरा हुआ याने (१२।।) साढ़े बारह सेर का पूर्णपात्र अथवा कम, दक्षिणा में सामग्री जमा दें।

अथ त्रिभि: पवित्रच्छेदन कुशैर्द्वे पवित्रे छित्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रि:प्रोक्षणीपात्रे निधाय (पश्चात्) प्रोक्षणी पात्र वामहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तानामिकांगुष्ठाभ्याँ पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्।

अब तीन पवित्रछेदन कुशाओं से दो पवित्रियों को (३) तीन आंटे देकर) काटकर फैक दें याने तीन को त्याग दे। दो (२) को ग्रहण कर लें। इन पवित्रे को हाथ में रखकर दक्षिण हाथ से प्रणीता का जल (३) तीन बार प्रोक्षणी में डालें।

फिर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ में अनामिका-अंगुष्ठ से पवित्र पकड़ कर प्रोक्षणी के जल को (३) तीन बार ऊपर उछालें।

ततः प्रोक्षणीपात्रं आकाशस्य प्रणीतोदकेनापूरयेत्। भूमौ पतितं चेत्तद्दा प्रायश्चित्तं गोदानम्॥

फिर प्रोक्षणी पात्र को (ऊपर से) प्रणीता के जल से भर ले। किन्तु पृथ्वी पर न गिरने दें। यदि गिर जाय तो गोदान प्रायश्चित करें।

ततः प्रोक्षणी जलेन यथासादित्तवस्त्वनुरूपं सेचनम्। ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्॥

फिर प्रोक्षणी के जल में रखी हुई सारी सामग्री के छींटे देवें और अग्नि तथा प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी को रख देवें।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः।

आज्यस्थाली में घी भर ले।

चरूस्थाल्यां तण्डुलनिर्वापः। तण्डुलानि त्रिः प्रक्षाल्य प्रणितोदकमासिंच्य तस्मिन् किंचित् पाकयोग्यं पयो दत्वा ब्रह्मा तु घृतपात्रं वेद्यां (कुंडे) दक्षिणाभागे स्थापयेत् चरुपात्रंचाचार्यो वेदी (कुंड) मध्ये स्थापयेत्।

चरू बनाने के लिये चरुपात्र में तंडुल डाले। उन्हें तीन बार धोले। उसमें कुछ प्र णिता का जल डाल दे। पश्चात् खीर पकने योग्य दूध डाल दे। ब्रह्मा तो वेदी के दक्षिण में घृतपात्र को रखकर गर्म करें। और आचार्य वेदी पर चरुपात्र रख दें।

चरु पक्व पर्यन्तं ग्रहादीनामावाहनं कुर्यात्।

अब चरु बनजावे तब तक आचार्य ग्रहों और देवों का आवाहन कर लेवें।

ग्रहाणां मंडलम्

वृत्तमण्डलमादित्ये चतुरस्त्रं निशाकरम्।
त्रिकोणं मंगलम चैव बुधं वै बाणसन्निधम्॥
गुरवे पद्दिशाकारं पञ्चकोणं भृगुस्तथा।
मन्दे च धनुषाकारं शूर्पाकारं तु राहवे॥
केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु

ग्रहों का स्थान

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे।
दक्षिणे लोहितं विद्याद् बुधं पूर्वोत्तरेण च॥
उत्तरेण गुरुं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवश।
पश्चिमे तु शनिं विद्यात् राहुं दक्षिण पश्चिमे
पश्चिमोत्तरतः केतुं इत्येषाँ ग्रहसंस्थिति।

ग्रहों का रंग

अरुणौ सूर्य भौमौ च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ।
हरितस्तु बुधः प्रोक्तः पीतवर्णो गुरुस्तथा॥
कृष्णवर्णो शनीराहूः केतवस्तु तथैव च॥

इनके अर्थ स्पष्ट हैं

इनमें कुछ मतभेद भी है। यथा--

अर्धचन्द्रं निशाकरम् बुधं च धनुषाकृतिम्।
गुरुमष्टदलं प्रोक्तं चतुष्कोणं च भार्गवम्।
नराकृतिं शतिं विद्यात् राहुं च मकराकृतिम्।
केतुः खड्गसमो ज्ञेयः।

परन्तु हमने अजमेर प्रान्तीय रीति से मंडप बनवाये हैं।हमारे यहां से प्रकाशित धार्मिक, ज्योतिष, कर्मकाण्डी पुस्तकें ही खरीदें मिलने का पता: **श्री सरस्वती प्रकाशन**, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

अथ ग्रहपूजनम्

अथपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्-

नवग्रहों कें मंडल पर रक्तपुष्प अक्षत डालता जावे।

अथ सूर्यवाहनम्

सप्तम्याँ विशाखान्वितायां कलिंगे जातं काश्यपगौत्रं लोहितवर्ण वर्तुलाकारं मण्डलमध्यस्थं प्राङ्मुख द्विभुजं पद्महस्तं सप्ताश्वरथ वाहनं क्षत्रियाधिपतिमीश्वरा धिदैवत्यमग्नि प्रत्यधि दैवतं सहितंसूर्यमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन्सूर्य इहागच्छ, इह तिष्ठ इमंयज्ञमभिरक्षइत्यावाहयेत्।

इस प्रकार से सूर्यं भगवान् का आह्वान करें। पीछे--

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्। अ.३३

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुज स्यात्सदा रविः।।
इति मंत्रेण पाद्यादिभिः सूर्य पूजनम्।।

इस मंत्र से सूर्य की पूजा करें।

अथ चन्द्रावाहन्

श्वेतपुष्पाक्षतान् गृतीत्वा आवाहयेत्-

हाथ में श्वेत पुष्प तथा अक्षतों से निम्न भांति ध्यान करके आवाहन करें।

ॐ चतुर्दश्यां कृत्तिकान्वितायां समुद्रे जातमत्रिगोत्रं श्वेतवर्ण चतुरस्त्राकृतिमण्डलात् पूर्वदक्षिणदिक्स्थं पश्चिमाभिमुखं दशाश्वरथवाहनं विशांपतिमुमाधिदेवताम्। जल प्रत्यधि दैवत सहित चन्द्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष इत्यावाह्य।

ॐ इमं देवा असपत्नँऽ सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानऽ राजा।। य० अ० ९।।

इति मंत्रेण पाद्यादिभिश्चन्द्र पूजयेत्।

इस मंत्र से पाद्यादि से चन्द्रमा की पूजा करें।

अथ भौमावाहन्

रक्तपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा-

हाथ में लाल पुष्प और लाल अक्षत लेके-

दशम्यां पूर्वाषाढ़ायां अवन्त्यां जातं भारद्वाज गौत्रं रक्तवर्ण त्रिकोण मण्डलाद् दक्षिणदिग्विभागस्थं दक्षिणाभि मुखं मेषवाहनं क्षत्रियाधिपतिं स्कंदाधिदैवतं क्षितिप्रत्यधि दैवतसहितं भोममावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष इत्यावाह्य। ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाᳪ रेताᳪ सि जिन्वति।। य० अ० १५ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः भोम पूजयेत्।

इस मंत्र से भोम की पूजा करें।

अथ बुधावाहन्

हरित्पुष्पाक्षतान् गृहीत्वाऽवाहयेत्

हरे पुष्प और अक्षतों से नीचे के मंत्र बोलकर आवाहन करें।

द्वादश धनिष्ठान्वितायां मगधदेशे जातमत्रिगोत्रं हरिद्वर्ण बाणाकृति मण्डलात्। पूर्वोत्तरस्थं उत्तराभिमुखं शूद्राधिपतिं सिंहवाहनं नारायणाधिदैवतं विष्णुप्रत्यधिदैवत सहितं बुधमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष इत्यावाह्य। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टां पूर्ते सᳪ सृजेथामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। य० अ० १५।

इति मंत्रेण पाद्यादिभिः बुध पूजयेत्।

इस मंत्र से बुध की पूजा करें-

अथ गुरु-आवाहन

पीतपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा गुरुमावाहयेत्।

पीले पुष्प अक्षतों से गुरु का आह्वान करें।

एकादश्यां उत्तराफांल्गुनी युतायां सिंधुदेशे जातमआगीरस गोत्रं गोरोचनाभं द्वीर्घ चतुष्कोणाकृति मण्डलादुत्तरस्थितमुत्तराभिमुखं सिंहवाहनं ब्रह्माधिदैवतं इन्द्रप्रत्त्यधिदैवतसहितं गुरुमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः गुरो इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष इत्यावाह्य। ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। अ० २६।३

इस मंत्र से गुरु की पूजा करें-

अथ शुक्रावाहनम्

हस्ते श्वेतपुष्पाक्षतान् गृहीत्वाऽऽवाहयेत्।

हाथों में सफेद पुष्प अक्षत लेकर आह्वान करे।

नवम्याँ पुष्पयुतायां भोजकटे जातं भार्गव गौत्रं शुक्लवर्ण पंचकोणमण्डलात्। पूर्वदिक्स्थं पूर्वाभिमुखं श्वेताश्ववाहनमिन्द्राधिदैवमिंद्राणि प्रत्यधि देवत सहितं शुक्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष इत्यावाह्य। ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा

व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापति। ऋतेन सत्यमिन्द्रयं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृत मधु॥ अ० १९।७५

इति मंत्रेण पाद्यादिभि शुक्र पूजयेत्।

इस मंत्र द्वारा शुक्र की पूजा करे--

अथ शनेरावाहनम्

अथ विल्वपत्राक्षतान् गृहीत्वा शनिमावाहयेत-

हाथ में बिल्ब-पत्र और अक्षत लेकर शनि का आह्वान करें।

अष्टम्यां रेवती युतायां सौराष्ट्रे जातं काशयप गोंत्र लोहंवर्ण धनुराकृति-मण्डलात् पश्चिमस्थं पश्चिमाभिमुखं गृधवाहनं संकरजातिं यमाधिदैवतं प्रजापति प्रत्यधिदेवतसहितं शनिमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शने इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष। ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तु न॥३॥

इस मंत्र द्वारा पाद्यादि से शनि की पूजा करें।

अथ राहोरावाहनम्

अथ कृष्णपुष्पाक्षतैः राहुमावाहयेत्।

अब कृष्ण पुष्प और अक्षत लेकर राहु का आवाहन करें।

पौर्णमास्यां भरणीयुतायां बर्बरे जातं पैठिनसिगोत्रं कृष्णवर्ण शूर्पाकृतिमण्डलात्। पश्चिमदक्षिणदिक्स्थ दक्षिणाभिमुखं शूद्राधिपतिं सिंहवाहन कालाधिदैवतं सर्प

प्रत्यधि दैवत सहितं राहुमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ। इमं यज्ञमभिरक्ष॥ ॐ कया नश्चित्र ऽ आ भुवदुती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ य। अ० २७/३९

इस मन्त्र द्वारा पाद्यादि से शनि की पूजा करें।

अथ केत्वावाहनम्

अथ कृष्ण पुष्पाक्षतैः केतुमावाहयेत्।

अब कृष्ण पुष्प और अक्षतों से केतु का आवाहन करे-

अमावास्यायां अश्लेषान्वितायां जातं जैमिनिगोत्रं धूम्रवर्ण कपोतवाहनं अन्त्यजाधिपतिं ध्वजाकृतिमण्डलात् पश्चिमोत्तरस्थ दक्षिणाभिमुखं चित्रगुप्ताधिदैवतं ब्रह्मप्रत्यधिदैवत सहितं केतुमावाहयामि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ इमं यज्ञमभिरक्ष०

ऐसा बोलकर नीचे के मंत्र से पाद्यादि द्वारा केतु की पूजा करें।

ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ य० अ० २९।३७।

अर्थ प्रार्थना

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः।
सद्बुद्धि च बुधो गुरूश्च गुरूतां शुक्रः शुभं शं शनिः॥
राहुर्बाहुबलं करौतु सततं केतु कुलस्योन्नतिं।

नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु तव तें सर्वेनुकूला ग्रहाः ॥
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु॥

अधिदेव स्थापनम्

रवेरूत्तरतः ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम्॥ उर्वारूकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥१॥ ॐ भूर्भुव स्वः शंभो इहागच्छेहतिष्ठ॥ सोमस्याग्नेयदिग्भागे। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छेह तिष्ठ॥ भोमस्य याम्ये। ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छेह तिष्ठ॥ बुधस्यपूर्वे। ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्था विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रूवोसि वैष्णवमसिविष्णवे त्वा॥४॥ ॐ भूभुर्वः स्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ॥ गुरोरुत्तरतः ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायताँ दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषा जिष्णु रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥५॥ ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह

तिष्ठ ।। प्राच्याम् ।। ॐ सजोषा इंद्रसगणो मरुद्भिः सोमं पिबं वृत्रहा शूर विद्वान ।। जहि शत्रूं २ऽ रप मृथो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।।६।। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छेह तिष्ठ ।। शनेः पश्चिमें- ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स० स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ।।७।। ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ।। राहोः उत्तरे ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्वा उन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः ।।८।। ॐ भूर्भुवः स्वः काल इहागच्छेह तिष्ठ ।। चित्रावस्विति नैर्ऋते-ॐ चित्रवसो स्वस्ति ते पारमशीय ।। ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छेह तिष्ठ ।।९।।

प्रत्यधिदेवता

ॐ सनः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नमः स्वस्तये ।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ ।। ॐ अपो अद्यान्वचारिषं० रसेन समसृक्ष्महि ।। पयस्वानग्न ।। आगमं तं मा स० सृज वर्चसा प्रजया च्च धनेन च ।।२।। ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छध्वमत्र तिष्ठध्वम्। ॐ चिदसि तयादेवतयांगिरस्त्रं ध्रुवासीद ।।३।। ॐ भूर्भुवः त्रेधा निदधे पदम् ।। समूढमस्यपा० सुरे ।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ ।। ॐ इन्द्र असान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ।। देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयंतीनां मरुतो

यन्त्वग्रम्॥५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छेह तिष्ठ॥ ॐ इन्द्रं देवीर्विशो मरुतोनुऽ वर्त्मानो भवन्यथेंद्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्॥ एवमिमं यजमान देवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु॥६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रुपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयमुष्य पिता सावास्य पिता वयᳫ स्याम पतयो रयीणाँ स्वाहा॥ रुद्रयत्ते क्रिवि परं नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा॥७॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ॥ ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु॥ येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पन्नगा इहागच्छध्वमिह तिष्ठध्वम्। ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरूचो व्वेन आवः॥ सबुध्न्या उपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः॥९॥ ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छेह तिष्ठ॥

पंचलोकपात्लपूजनम्

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳫ हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपतिᳫ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिᳫ हवामहे व्वसो मम॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्व मजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमराती यतो निदहाति वेदः॥ स नः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव्वसिंधु दुरितात्यऽग्नः॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे

इहागच्छेह तिष्ठ।। ॐ वायो येते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि।। नियुत्वान सोमपीयते।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ।। ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसा᳟ व सापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशउद्दिशो दिग्भ्य स्वाहा।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तरिक्ष इहागच्छेह तिष्ठ।। ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।। तया यज्ञंमिमिक्षतम्।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छेतामिह तिष्ठेताम्।। इति पंचलोकपालान् स्थापनम्।

अथ दशदिक्पालावाहनम्

ॐ त्रातारमिन्द्रम वितारमिन्द्र᳟ हवेहवे सुहव᳟ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र᳟ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। भो इन्द्रं इहागच्छ इह तिष्ठ।।१।। ॐ त्वन्नोऽअग्ने तब देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता लोकस्य तनये गवामस्य निमेष᳟ रक्षमाणस्तव व्रते।। भो अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ।।२।। ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिविबन्धनानि।। भो यम इहागच्छेह तिष्ठ।।३।। ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु। भो नैर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ।।४।। ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या

च मृडय। त्वामवस्युराचके।। भो वरूण इहागच्छेह तिष्ठ।।५।। ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर℧ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदाः नः। भो वायो इहागच्छेह तिष्ठ।।६।।

ॐ वय℧ सोमव्रते तव मनस्तनूषू विभ्रतः। प्रजा वन्तः सचेमहि।। ॐ भूः कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ।।७।। ॐ तमीशानं जगत तस्थुषस्पति धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।। पूषा नो यथा वेद साम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः। स्वस्तये।। ॐ भूः ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ।।८।। ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श℧ सते स्तुवते धायि वज्र इन्द्रज्येष्ठाः अस्माँ२ऽअवन्तु देवाः। ॐ भूः ब्रह्मन्निहागच्छेह तिष्ठ।।९।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। ॐ भू अनंत इहागच्छेह तिष्ठ।।१०।।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिविमनु। ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। क्षेत्रपालेइहागच्छ।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं रातीयतो निदहाति वेदः सनः परिषदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ चामुण्डें इहागच्छ।

१-दस्त्रादय शुभास्तारा: योगाश्च करणानि च।

आयान्तु करुणां कृत्वा यजमान हितार्थिनः॥
२-ॐ विश्वकर्मन् इहागच्छ शिल्पविद्या प्रवर्तक।
ध्रुवतारक नद्यश्च पंच सप्तर्षयस्तथा॥
३-सागराः पर्वताश्चैव रैवन्त गरुड़ादये।
पतयः पंचभूतानामायान्तु कृपयाऽखिला॥

रुद्रकलश

इसके आगे ईशानदिग्भाग में रुद्रकलश के स्थापनादि सारे संस्कार नहीं किये हों तो यहाँ करके रुद्र का आवाहन करें, मंत्र--

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषाऽ सहस्रयोजने बधन्वानि तन्मसि॥
ॐ मनोजूतिं इत्यादि मंत्रेण प्राणप्रतिष्ठा
षोडशोपचारैः पूजनम्॥

षोडशोपचार से सबकी पूजा कर दे॥ सबके लिए (१।) सवा रूपये से अन्यून दक्षिणा चढ़वा दें।

शेष कुशकाँडिका तथा हवन

पश्चात् सिद्धेचरौ ज्वलतृणादि आज्योपरि भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः।

पीछे जलते हुए तृणादि को आज्य पर घुमाकर अग्नि में डाल देवें।

ततः स्त्रुव प्रतपनं कृत्वा सम्मानर्जनकुशैः त्रिः स्रुवमार्जनं, मूलेन मूलं मध्येन मध्यं आग्रेणाग्रम्। पुनः परितप्य

स्त्रुव दक्षिणतो निदध्यात्।

फिर स्त्रुवे को तपाकर सम्मार्जन कुशाओं से मूल से मूल को मध्य से मध्य को तथा अग्रभाग से अग्रभाग को साफ कर, फिर तपा कर दाहिनी तरफ रख दे।

एवमेव आज्यप्रतपनं उत्पवनं कृत्वा तदवेक्षणम् अपद्रव्यनिरसनञ्च।

फिर घी को उतार कर उत्पवन करके देख ले कोई अपद्रव्य हो तो निकाल दें।

तत उत्थाय उपयमन कुशानादाय वामहस्ते घृत्वा अग्निपर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्।

फिर उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में लेकर, दाहने हाथ में उपरोक्त तीनो समिधा लेकर, उन्हें घी में भिगो कर खड़े होकर ब्राह्माजी का मन से ध्यान करके चुपचाप अग्नि में छोड़ दें।

ततं उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय पातितदक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्ध समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्

फिर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणीजल अग्नि के चौतरफ डाल दें। पवित्र को प्रणीतापात्र मे रख दें पीछे दाहिनी जंघा को नवाकर डाभ से ब्रह्मा को स्पर्श करले ब्रह्मा से मोली यजमान तक रख दें। और स्रुवे से अग्नि में घी की आहुति दें।

आहुतिन्तुष्टये स्त्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। अग्रे यथादैवतं चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्यागं

च कुर्यात् ॥

प्रथम चार आहुतियों में स्त्रुवे के अवशिष्ट घृत को प्रोक्षणी पात्र में त्यागता जावे। आगे देवता नाम के चतुर्थी विभक्ति बोलकर स्वाहा बोलकरहोम और ''न मम'' से त्याग करता जावे।

अथ हवनविधि

ब्रह्मणा अन्वारब्ध आहुति दद्यात्

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम।
ॐ अग्नये स्वाहा। इहमग्नये, इदंन मम।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम।

बिना अन्वारब्धमेका आहुतिः।

ब्रम्हा जी से मोली सम्बन्ध हटाकर एक आहुती दें। यथा--

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम॥

तत्पश्चात् अग्नि का आवाहन पूजनादि करे। यथा--

ध्यानम्

रुद्रतेजः समुत्पन्नं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्॥
स्त्रुचं स्त्रुवं च शक्तिं चाप्यक्षमालां च दक्षिणे॥
तोमरं व्यंजनं चैव घृतपात्रं तु वामकैः॥
विभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्॥

दक्षिणे तु चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखे। कोटिद्वादश मूर्त्याख्य द्विपंचाशत् कलायुतम्। स्वाहा स्त्रधा वषटकारैरंकितम मेषवाहनम् रक्तमाल्यावरं रक्तं रक्त पद्मासन-

स्थितम्। रौद्रं वागीश्वरीरूपं वह्निमावाहयाम्हम्।।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते।
आगच्छ भगवन्नग्ने यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौ भव।
वरद नामाग्नेवैश्वानर इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य पंचोपचारैः पूजयेत्।

ततः अग्नेः सप्तजिह्वानाँ पूजां

कनकायै नमः, रक्तायै नमः, कृष्णायै नमः उद्गारिण्यै नमः उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः, बहुरूपायै नमः, अतिरिक्तायै नमः। तदनन्तरं स्रुवसमिद्वनस्पतीनां पूजनम् चेति।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकनामाहं सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यात्मनः सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थ ममुकयज्ञकर्मणा। श्रीसुर्यादि नवग्रहादीनाँ साधिदेवता प्रत्यधिदेवतानां लोकपालदिक्पालानाममुक प्रधानदेवता सहितानां च प्रीतये। ब्राह्मण द्वारा यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यैस्तत्तद वत्तामंत्रैर्यक्ष्ये।

अथ पंचवारुणी (प्रायश्चित्तोहोमः)

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांᳫसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरूणाभ्याम्०। ॐ सत्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणᳫ रराणो वीहि मृडीकᳫ सुहवो न एधि

स्वाहा। ईदमग्निवरुणाभ्यां०। ॐअयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि। अयानो। यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज्ँ स्वाहा। इदमग्नेय०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महांतः। तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्य स्वाहा०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यँ श्रथाय। अथ वयमादित्यव्रते तवानागसोअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये०। अत्रोदक स्पर्श

इति पंचवारुणी अथवा प्रायश्चित्त होमः।

ततो गणपतिप्रीत्यर्थ होमः

ॐ गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे। प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे।। निधी नां त्वां निधिपतिँ हवामहे। वसो मम आहमजानि गर्भधमात्व मजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये स्वाहा।।

अधिवासारम्भः

अथ नवग्रहाणां होमः

यहां क्रम से अर्कपलाश खदिर अपामार्ग पिप्पल उदुम्बर शमी दूर्वा कुशा की आहुतियें भी देवें।

ततो घृताक्ताः समिधो जुहुयात्। ॐ आ कृष्णेन रजसा

वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन स्वाहा। इदं सूर्याय०।। ॐ इमं देवाऽअसपत्नঌ सुबध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।इमममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविश एष वोऽमी राजासोमोऽस्मांकंब्रह्मणानांঌ राजा स्वाहा। इदं चंद्राय०। ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाঌ रेताঌ सि जिन्वति स्वाहा। इदं मंगलाय०। ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सঌ सृजेथामयं च।अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा। इदं बुधाय०। बृहस्पतेऽअतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा। इदं बृहस्पते०।ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानঌ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा।। इदं शुक्रायः। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तु नः स्वाहाः। इदं शनैश्चराय०। ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा। इदं राहवे।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। केतवे स्वाहा। इदं केतवे०।।

।।इति नवग्रहहोमः।।

नवाहुतय:

(प्रतिष्ठा ग्रन्थों में ये ९ आहुतियें नहीं है। पर देने में कोई दोष नहीं हैं।)

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवांऽऽआसादयादिह स्वाहा।।१।। अप्पस्वग्ने सधिष्ठवसौषधीरनुरुध्यसे।। गर्भे सञ्जायसे पुनः स्वाहा।।२।। स्योनापृथिवि नोभवानृक्षरा निवेशनी।यच्छानः शर्मसप्रथाः स्वाहा।३।। इदंविष्णुर्विचक्रमें त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा॰ सुरे स्वाहा।।४।। महां २ऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी **शर्मयच्छतुहंतुपाप्मानं** योस्मान्द्वेष्टि स्वाहा।।५।। शुक्र ज्योतिश्च चित्त ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योति ष्मांश्च। शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्य॰ हाः स्वाहा।।६।। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तुवय॰ स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।।७।। आयं गौः पृश्निर क्रमीद सदन्मातरं पुरः।। पितरं च प्रयन्त्स्वः स्वाहा।।८।। ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चव्विः स्वाहा।।९।।

अथाधिदैवानां मन्त्रः

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा। इदं त्र्यंबकाय०। ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रै पार्श्वे नक्षत्राणि

रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणां मुम्मइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा। इदमुमायै०। ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीषात्। श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन् स्वाहा। इदं स्कन्दाय०। ॐ विश्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा। इदं विष्णवे० ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेन आवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठा,सतश्चयोनिम सतश्चव्विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे०। ॐ त्रातारमिंन्द्रम वितारमिंन्द्र ७ हवे हवे सुहव७ शूरमिंद्रम् ह्वायामि शक्रं पुरुहूतमिद्रं७ स्वस्ति नों मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा। इदमिन्द्राय०। ॐ असियमोऽस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि स्वाहा। इदं यमाय०। अत्रोदकस्पर्शः। ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्याउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीः भिरोषधीः स्वाहा। इदं कालाय०।अत्राप्युदकस्पर्शः। ॐ इन्धानास्त्वा शत७ हिमा द्युमन्त७ समिधीमहि। वयस्वन्तो यवस्कृत७ सहस्वन्तः सहस्कृतम्।अग्नेसपत्नदम्भनम दब्धासोऽअदाभ्यम् चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा। इदं चित्र गुप्ताह०॥ इति नवग्रहादिदेवतानां होमः॥

अथ प्रत्यधिदेवतानां मन्त्रां

ॐ स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सच। स्वाः न स्वस्तये॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदं॥१॥

ॐ अपो अद्यान्वचारिष७ रसेन समसृक्ष्महि। पयस्वानग्न ऽ आगमं तं मास७ सृज वर्चसा प्रजया च धनेन च॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा। इदम्॥२॥

ॐ चिदसि तया देवतयाँगिरस्वद् ध्रूवासीद। परिचिदसी तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं० ॥३॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा७ सुरे॥ ॐ विष्णवे स्वाहा इदं॥४॥

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्ददक्षिणयज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतोयं त्वग्रम॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं॥५॥

ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन। एवमिमं यजमान दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा इदं० ॥६॥

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयः स्याम पतयो रयीणाम्॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा०॥ इदं॥७॥

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा। इदं०॥८॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चव्विवः। ॐ ब्रह्मण स्वाहा। इदं०॥ इति प्रत्यधिदेवता॥

अथ पंचलोकपाल होमः

ॐ गणानाँ त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणाँ त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ गणपतये स्वाहा इदं॥१॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमराती यतो निदहाति वेदः। स नः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा इदं०॥२॥ ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये॥ ॐ वायवे स्वाहा। इदं०॥३॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा॥ दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः॥ ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा।

इदं० ॥४॥ ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। पिपृतान्नोभरीमभि॥ ॐ अश्विभ्याँ स्वाहा इदं० ॥५॥ इति पंचलोकपालहोमः।

वास्तुहोम

१ ॐ शिखने स्वाहा।२ ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ३ ॐ जयन्ताय स्वाहा। ४ ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा ५ ॐ सूर्याय स्वाहा। ६ ॐ सत्याय स्वाहा। ७ ॐ भृशाय स्वाहा। ८ ॐ आकाशाय स्वाहा। ९ ॐ वायवे स्वाहा। १० ॐ पूष्णे स्वाहा ११ ॐ वितथाय स्वाहा १२ ॐ गृहक्षताय स्वाहा। १३ ॐ यमाय स्वाहा। १४ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। १५ ॐ भृंगराजाय स्वाहा। १६ ॐ मृगाय स्वाहा। १७ ॐ पितृभ्यः स्वाहा। १८ ॐ दौवारिकाय स्वाहा। १९ ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। २० ॐ पुष्पदंताय स्वाहा। २१ ॐ वरुणाय स्वाहा। २२ ॐ असुराय स्वाहा। २३ ॐ शोषाय स्वाहा। २४ ॐ पापाय स्वाहा। २५ ॐ रोगाय स्वाहा। २६ ॐ अहये स्वाहा। २७ ॐ मुख्याय स्वाहा। २८ ॐ भल्लाटाय स्वाहा। २९ ॐ सोमाय स्वाहा ३० ॐ सर्पाय स्वाहा। ३१ ॐ अदित्यै स्वाहा। ३२ ॐ दित्यै स्वाहा। ३३ ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ३४ ॐ सवित्राय स्वाहा। ३५ ॐ जयाय स्वाहा। ३६ ॐ रुद्राय स्वाहा। ३७ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ३८ ॐ सवित्रे स्वाहा। ३९ ॐ विवस्वते स्वाहा। ४० ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।

४१ ॐ मित्राय स्वाहा। ४२ ॐ राज्ययक्ष्मणे स्वाहा। ४३ ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ४४ ॐ आपवत्साय स्वाहा। ४५ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ४६ ॐ वरकयै स्वाह। ४७ ॐ विदार्यै स्वाहा। ४८ ॐ पूतनायै स्वाहा। ४९ ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ५० ॐ पूर्वे स्कन्दाय स्वा०। ५१ दक्षिणे अर्यम्णे स्वाहा। ५२ ॐ पश्चिमे जृम्भकाय स्वाहा। ५३ ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय स्वाहा। ५४ ॐ पूर्वे इन्द्राय स्वाहा। ५५ ॐ आग्नेय्याँ अग्नये स्वाहा। ५६ ॐ दक्षिणे यमाय स्वाहा। ५७ ॐ नैं० नैर्ऋतये स्वाहा। ५८ ॐ पश्चिमे वरुणाय स्वाहा। ५९ ॐ वाय० वायवे स्वाहा। ६० ॐ उत्तरे कुबेराय स्वाहा। ६१ ॐ ईशान्याँ ईश्वराय स्वाहा। ६२ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ६३ ॐ अनंताय स्वाहा। ६४ ॐ वास्तवे स्वाहा वास्तुपुरुषाय स्वाहा॥

१-ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य: सर्वेभ्य: सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य स्वाहा। अघोराय स्वाहा॥ इति वास्त्वंगदेवताहौम:॥

षट्पंचाशद् देवाना कृते होम:

सर्वतो भद्रे ५६

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १ ॐ सोमाय स्वाहा २ ॐ ईशानाय स्वाहा ३ ॐ इन्द्राय स्वाहा ४ ॐ अग्नयेय स्वाहा ५ ॐ यमाय स्वाहा ६ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा ७ ॐ अरुणाय स्वाहा ८ ॐ वायवे स्वाहा ९ ॐ अष्टवसुभ्य: स्वाहा १० ॐ

एकादश रुद्रेभ्य स्वाहा ११ ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा १२ ॐ अश्विभ्यां स्वाहा १३ ॐ विश्वेदेवेभ्यः स्वाहा १४ ॐ पितृभ्यः स्वाहा १५ ॐ यक्षेभ्यः स्वाहा १६ ॐ भूतनागेभ्य स्वाहा १७ ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा १८ ॐ गन्धर्वेभ्यः स्वाहा १९ ॐ अप्सरोभ्यः स्वाहा २० ॐ स्कन्दाय स्वाहा २१ ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा २२ ॐ शूलमहाकालाभ्याँ स्वाहा २३ ॐ प्रजापतिभ्यः स्वाहा २४ ॐ दुर्गायै स्वाहा २५ ॐ विष्णवे स्वाहा २६ ॐ पितृभ्यः स्वाहा २७ ॐ मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा २८ ॐ गणपतये स्वाहा २९ ॐ अद्भ्यः स्वाहा ३० ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा ३१ ॐ पृथिव्यै स्वाहा ३२ ॐ सरिद्भ्यः स्वाहा ३३ ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा ३४ ॐ मेरवे स्वाहा ३५ ॐ गदायै स्वाहा ३६ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा ३७ ॐ वज्राय स्वाहा ३८ ॐ शक्तये स्वाहा ३९ ॐ दण्डाय स्वाहा ४० ॐ खड्गाय स्वाहा ४१ ॐ पाशाय स्वाहा ४२ ॐ अंकुशाय स्वाहा ४३ ॐ गोतमाय स्वाहा ४४ ॐ भारद्वाजाय स्वाहा ४५ ॐ विश्वामित्राय स्वाहा ४६ ॐ कश्यपाय स्वाहा ४७ ॐ जमदग्नये स्वाहा ४८ ॐ वशिष्ठाय स्वाहा ४९ ॐ अत्रये स्वाहा ५० ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा ५१ ॐ ऐन्द्रयै स्वाहा ५२ ॐ कौमार्यै स्वाहा ५३ ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा ५४ ॐ वाराह्यै स्वाहा ५५ ॐ चामुण्डायै स्वाहा ५६ ॐ वैष्णयै स्वाहा।

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ वैनायिक्यै स्वाहा। ॐ इन्द्रादिलोकपालेभ्य: स्वाहा॥

इति श्रीसर्वतोभद्रहोमेन सर्वतोभद्रदेवता: प्रीयन्ताम्

लिंगतोभद्रदेवताहोम:

ॐ असितांग भैरवाय स्वाहा १ ॐ रूरू भैरवाय स्वाहा २ ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा ३ ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा ४ ॐ उन्मत्त भैरवाय स्वाहा ५ ॐ कपालभैरवाय स्वाहा ६ ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा ७ ॐ संहार भैरवाय स्वाहा ८ ॐ भवाय स्वाहा ९ ॐ शर्वाय स्वाहा १० ॐ पशुपतये स्वाहा ११ ॐ ईशानाय स्वाहा १२ ॐ रुद्राय स्वाहा १३ ॐ उग्राय स्वाहा १४ ॐ भीमाय स्वाहा १५ ॐ महते स्वाहा १६ ॐ अनन्ताय स्वाहा १७ ॐ वासुकये स्वाहा १८ ॐ तक्षकाय स्वाहा १९ ॐ कुलिशाय स्वाहा २० ॐ कर्कोटकाय स्वाहा २१ ॐ शंखपालाय स्वाहा २२ ॐ कम्बलाय स्वाहा २३ ॐ अश्वतराय स्वाहा २४ ॐ शूलाय स्वाहा २५ ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा २६ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा २७ ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा २८ ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा २९ ॐ शक्तिधराय स्वाहा ३० ॐ महेशवराय स्वाहा ३१ ॐ शूलपाणये स्वाहा ३२

अनेन लिंगतोभद्र होमेन लिंगतोभद्र देवता: प्रीयन्ताम्

चतुर्लिंगतोभद्र मे १२७ आहुतियैं होती हैं। पूजन में आये नामो से आहुतिये देवें। यहां स्पष्ट ही है।

अथ दशदिक्पालानाँ होम:

ॐ त्रातारमिंद्रम वितारमिन्द्र७ हवे हवे सुहव७ शूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र, स्वाहा। इदमिन्द्राय न०।। ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे।। देवांऽ आ सादयादिह स्वाहा। इहमग्नये०। ॐ असि यमोऽअस्यादित्यो ऽअर्वंन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि स्वाहा। इदं यमाय०। ॐ एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाग्नि नेत्रभ्यो: देवेभ्य: पुर: सद्भ्य: स्वाहा। यमनेत्रेभ्यो देवभ्यो दक्षिणा सद्भ्य: स्वाहा। विश्वदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्य: पश्चात् सद्भ्य: स्वाहा। मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरा सद्भ्य: स्वाहा। सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्य: स्वाहा। इदं निर्ऋतये०। ॐ इमं मे व्वरुणश्रुधी हवमद्या च मुडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय०। ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्री: साकं गन्मनसा यज्ञं। शिवो नियुद्भि: शिवाभि: स्वाहा। इदं वायवे०। ॐ कुविदंग यवमन्तो यवं चिद्यथा दांत्यनुपूर्व वियूय। इहेहेषां कृणुहि

भोजनानि येब्बर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति स्वाहा। इदं कुबेराय०। ॐ ईशाव्वास्यमिद७ सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धन स्वाहा। इदमीशानाय०। ॐ ब्रह्म जज्ञनंप्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरूचो वेन आवः। सबुध्न्याउपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे० ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा। इदमनन्ताय०। इति दशदिक्पालानां होमः ॥१०॥

जीर्णसंप्रदायानुसारम्

(संक्षेप में)

ॐ गणपतये स्वाहा ॥१॥ ॐ अंबिकायै स्वाहा ॥२॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥३॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥४॥ ॐ गौर्ये स्वाहा ॥५॥ ॐ पद्मायै स्वाहा ॥६॥ ॐ शच्यै स्वाहा ॥७॥ ॐ मेधायै स्वाहा ॥८॥ ॐ सावित्र्यै स्वाहा ॥९॥ ॐ विजयायै स्वाहा ॥१०॥ ॐ जयायै स्वाहा ॥११॥ ॐ देवसेनायै स्वाहा ॥१२॥ ॐ मातृभ्यः स्वाहा ॥१३॥ ॐ स्वाहायै स्वाहा ॥१४॥ ॐ मातृभ्यः स्वाहा ॥१५॥ ॐ लोकमातृभ्यः स्वाहा ॥१६॥ ॐ धैत्यै स्वाहा ॥१७॥ ॐ पुष्ट्यै स्वाहा ॥१८॥ ॐ तुष्ट्यै स्वाहा ॥१९॥ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा ॥२०॥

ॐ श्रियै स्वाहा ।।१।। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ।।२।। ॐ धृत्यै स्वाहा ।।३।। ॐ मेधायै स्वाहा ।।४।। ॐ स्वाहायै स्वाहा ।।५।। ॐ प्रज्ञायै स्वाहा ।।६।। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ।।७।।

ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ॐ नदीभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तऋषिभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ॐ पर्वतेभ्यः स्वाहा। ॐ रैवन्ताय स्वाहा। ॐ गरुड़ाय स्वाहा। ॐ पंचभूतेभ्य स्वाहा। ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ रुद्रेभ्यः स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ अष्टावसुभ्य स्वाहा। ॐ सप्तमरुद् गणेभ्य स्वाहा। ॐ षट्विनायकेभ्यः स्वाहा। ॐ द्वादशमास गणेशेभ्यः स्वाहाः।

ॐ अग्निमीले पुरोहित० ऋग्वेदाय स्वाहा।
ॐ इषे त्वोर्ज्जेत्वा० यजुर्वेदाय स्वाहा।।
ॐ अग्न आयाहि० सामवेदाय स्वाहा।।
ॐ शन्नो देवीरभिष्टय० अथर्ववेदाय स्वाहा।।

चौसठ योगनियाँ

१ दिव्ययोग, २ महायोगा, ३ सिद्धियोगा, ४ गणेश्वरी, ५ प्रेताक्षी, ६ डाकिनी, ७ काली, ८ कालरात्रि, ९ निशाचरी, १० हुंकारी, ११ रुद्रवैताली, १२ खर्परी, १३ भूतयामिनी, १४ उर्ध्वकेशी, १५ विरूपाक्षी, १६ शुष्कांगी, १७ मांसभोजनी, १८ फेत्कारी, १९ वीरभद्राक्षी, २० धूम्राक्षी, २१ कलहप्रिया, २२ रक्ता, २३ घोररक्ताक्षी, २४ विरूपाक्षी,

२५ भयंकरी, २६ चौरिका, २७ मारिका, २८ चंडी, २९ वाराही, ३० मुण्डधारिणी, ३१ भैरवी, ३२ चक्रपाणी, ३३ क्रौधा, ३४ दुर्मुखी, ३५ प्रेतवाहिनी, ३६ कंटकी, ३७ दीर्घलम्बोष्ठी, ३८ मालिनी, ३९ मंत्रयोगिनी, ४० कालाग्नी, ४१ मोहिनी, ४२ चक्री, ४३ कंकाली, ४४ भूवनेश्वरी, ४५ कुण्डलाक्षी, ४६ जुही, ४७ लक्ष्मी, ४८ यमदूती, ४९ करालिनी, ५०कौशिकी, ५१ भक्षणी, ५२ यक्षी, ५३ कौमारी, ५४ यंत्रवाहिनी, ५५ विशाला, ५६ कामुकी, ५७ व्याघ्री, ५८ यक्षिणी, ५९ प्रेतभूषणी, ६० धूर्जटा, ६१ विकटा, ६२ घोरा, ६३ कपाला, ६४ लांगली देव्यै स्वाहा॥

क्षेत्रपाल नामावली

ॐ भूर्भुवःस्वः क्षैत्रपालाय स्वाहा। प्रजराय स्वाहा। व्यापकाय०। इन्द्रचौराय०। इन्द्रमूर्तये०। उक्षाय०। कूष्मांडाय०। वरुणाय०। बटुकाय०। विमुक्ताय०। लिप्तकायाय०। लीलाकाय०। एकद्रंष्ट्राय०। एरावताय० ओषधिघ्नाय०। बन्धनाय०। दिव्यकायाय०। कम्बलाय०। भीषणाय० गवयाय०। घण्टाय०। व्यालाय०। अणवे०। चन्द्रवरुणाय०। पटाटोपाय०। जटालाय०। क्रतवे०। घण्टेशवराय०। विटंकाय०। मणिमानाय०। गणबन्धवे०। डामराय०। ढुण्डिकर्णाय०। स्थविराय०। दन्तुराय०। धनदाय०। नागकर्णाय०। महाबलाय०। फेत्काराय०। चीत्काराय०। सिंहाय०। मृगाय०। यक्षाय०। मेघवाहनाय०।

तीक्ष्णौष्ठाय०। अनलाय०। शुष्कतुण्डाय०। सुधालापाय०। बर्बरकाय०। पावनाय०। पवना० स्वाहा। इति।

इति योगिनी क्षेत्रपाल होम:

प्रधानदेवता-होम:

विष्णुयागे

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाᳯ सुरे स्वाहा॥ अथवा ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा॥

शिवयागे

ॐ नम: शंभवाय च मयोभवाय च नम: शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च स्वाहा।

दुर्गायागे

सप्तशतीस्थ मंत्रेण अथवा ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।

गणपति की स्थापना में :-

ॐ गणानां त्वेति मंत्रेण

इसी प्रकार जिस देवता की स्थापना है उसी के मन्त्र से १०८ आहुती देवें।

पुनः गायत्र्या होम कार्यः

पीछे - गायत्री मन्त्र की एक माला की आहुति देवें।

श्रीसूक्त १६ आहुतियां

(चरु की अवशिष्ट घी शक्कर युक्त खीर या मावा की आहुतियां या लघु होम में पेड़े की)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥ ताँ म आवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीम्॥। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्॥२॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्॥३॥ कांसोस्मिं तां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मे स्थिताँ पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥ चन्द्रां प्रभासाँ यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणमहं ऽप्र पद्ये, अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोभि॥५॥ आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पति स्तववृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च

बाह्याऽअलक्ष्मीः ।।६।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।। प्रादुर्भुतो सुराष्ट्रेस्मिन कीर्तिमृद्धि ददातु मे।।७।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठालक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।। अभूतिमसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात।।८।। गन्धद्वारां दुराधर्षानित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तोमिहोपह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूति वाचः सत्यमशीमहि।। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय में कुले।।१२।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१३।। आर्द्रायःकरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।। तामऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च।।१६।।

स्विष्टकृत आहुतियें

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।। ततो नवाहुतयः। ॐ भू स्वाहा, इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे। ॐ स्वः सूर्याय० इदं सूर्याय।। ततो। ॐ त्वन्नो अग्ने इति पंचवारुणीहोमवत्।। ॐ प्रजापते स्वाहा

इदं प्रजापतये॥

ततः सर्वेभ्यौ ग्रहेभ्य एकतंत्रेण बलिदानम्।

ॐ ग्रहा ऽ उर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषाँ विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्ज‌ঁ समग्रभमुपयाय गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टत्तमम्॥ सम्पृचौ स्थः सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम्॥

सूर्यादि नवग्रहेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तकेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पंचलोकपाल-वाष्तोष्पति सहितेभ्यः एतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि॥ भो भोः सूर्यादिग्रहाः सागाः सपरिवाराः सायूधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि पंचलोकपाल-वास्तोष्पति सहि मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारो वरदा भवेत्। अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहादयः प्रीयन्ताम।

अथ दशदिक्पालादीनां बलिदानम्

तद्यथा पूर्वे इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामिं। भो इन्द्र दिशंरक्षं बलिंभक्ष अस्य सकुटुम्बस्यः यजमानस्यः आयुः

कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।१।। आग्नेय्यां अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भौ अग्ने दिशंरक्ष बलिंभक्ष यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।२।। दक्षिणे यमाय साँगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो यम दिशंरक्ष बलिंभक्ष यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।३।। नैर्ऋत्या, निर्ऋतये सागांय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।४।। पश्चिमायां वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण दिशंरक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।।५।। वायव्यां, वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो दिशंरक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ।।६।। उत्तरस्यां कुबेराय साँगाय

सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भोः कुबेर दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव॥७॥ ऐशान्यामीशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव॥८॥ ईशानपूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव॥९॥ निर्ऋतिपश्चिमेयोर्मध्ये, अनंताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो अनंत दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव॥१०॥ इति दशदिक्पालबलिः।

अथ क्षेत्रपालबलि

अथ क्षेत्रपाल बलिदानम्। **एकस्मिन्** वंशादिपात्रे कुशानास्तोर्यं तदुपरि मनुश्याहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा (**तपादप्रस्थ** परिमितं मिष्टान्नं) माषभक्तदध्योदनं वा जलपात्रं

च निधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्राकुंकुमादि युतां पताकाँ कृत्वा-

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वेश्वानरात् पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानर क्षेत्रजित्याय देवाः॥ अ० ३३।६०॥

ॐ क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत बेताल पिशाचसहिताय इमं बलिं समर्पयामि। भोः क्षेत्रपाल दिशो रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्त्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।१।

'ॐ क्षेत्रपालाय नम,'' इति पँचोपचारैः संपूज्य षोडशोपचारेर्वा संपूज्य प्रार्थयेत।

ॐ नमे वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान कामांश्च देहि में।
देहि मे आयुरारौग्यं निर्विघ्नं कुरु सर्वदा नः॥

ॐहिकाराय स्वाहा, हिकृताय स्वाहा, क्रंदते स्वाहा, वक्रन्दाय स्वाहा, प्रोथते स्वाहा, प्रपोथाय स्वाहा, गंधाय स्वाहा, घ्राताय स्वाहा, निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा, संदिताय स्वाहा, वल्गते स्वाहा, आसीनाय स्वाहा, शयानाय

स्वाहा, विपते स्वाहा, जाग्रते स्वाहा, कूजते स्वाहा, प्रबुद्धाय स्वाहा, विजम्भमाणाय स्वाहा, विचृताय स्वाहा, संहानाय स्वाहा, मेपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा, प्रायणाम स्वाहा ।।१।। यते स्वाहा धावतेस्वाहोद्रावाहस्वाहा द्रुतायस्वाहा शूकारायस्वाहा, शूकृताय स्वाहा, निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा, जयाय स्वाहा, बलाय स्वाहा, विवित्तमानाय स्वाहा, विवृत्ताय स्वाहा, विधून्वानाय स्वाहा, विधूताय स्वाहा, शुश्रुषमाणाय स्वाहा, शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाक्षिताय स्वाहा, वीक्षिताय स्वाहा, निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा, यत्पिबति तस्मै स्वाहा, यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा, कुर्वंते स्वाहा, कृताय स्वाहा ।।२।। कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरिशिखरे कांत जालंधरे वा सौराष्ट्रे सिंधुदेशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे।। कर्णाटे कौंकणे वा भृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जे स्थिता वा ते सर्वे यज्ञरक्षा करणकृत धियः पांतु वः क्षेत्रपालाः ।। द्वाभ्यां मंत्राभ्यो क्षेत्रधीशायः नमः क्षेत्रधीशस्यानुचरेभ्यो नमः क्षेत्रपालाय भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी बेतालादि परिवार युताय-इमं सदीपं सतांबूलं सदक्षिणं माषभक्तबलि समर्पयामि भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहाण ममसकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेम कर्ता शांतिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता फलदो वरदो भव।। दिश० ।।

उस कूंडे आदि को यजमान के मस्तक पर घुमाकर

दीन दुर्बल ब्राह्मणादि द्वारा चौराहे पर रखवा देवे। हाथ पैर धोवे। द्वार पर्यन्त छींठा देवे। तब आगे का मन्त्र बोले।

ॐ द्यौ०

पूर्णाहूति

फिर स्रुचि बायें हाथ में लेकर स्रुवे से ४ बार उसमें घी भरकर नारियल के गोले को छेद द्वारा घृतपूर्ण करके कुंकुम लगाकर लाल वस्त्र से या मोली से लपेट कर स्रुवे पर स्रुवे को रखकर (उस पर पूंगीफल रख देवे) नारियल का मुख अपने सम्मुख करके यह पूर्णाहुति होगी।

पहले "पूर्णाहुत्यां मृडनाम्ने वैश्वानराय इदं गंधं पुष्पं धूपं नैवेद्य आचमनीयं" से पूजा करे।

पीछे **"एकोनपंचाशद् मरुद्गणेभ्यो नमः"** से उस पर मरुद्गणों की पूजा करे। फिर विनियोग करके आगे के मंत्र बोलकर पूर्णाहुति देवे।

मूर्द्धानमिति मंत्रस्य भरद्वाजऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप्छंदः पूर्णाहुति होमे विनियोगः॥ ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्॥ कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः॥१॥ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत॥ वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो॥२॥ चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवाऽइहा गमन्वीतिहोत्राऽऋतावृधः॥ पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि विश्वकर्म्मणे विश्वाहादाभ्यꣳ हविः॥३॥ सप्त ते अग्ने समिधः

सप्त जिंह्वा: सप्तऋषय: सप्त धामप्रियाणि।। सप्तहोत्रा: त्वा यजंति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।४। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यᳬस्वाहा:।५। ईदङ् चान्यादङ् च सदङ् प्रतिसदङ् च। मितश्च संमितश्च सभरा:।६। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्त्ता च विधर्त्ता च व्विधारय:।७। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गण:।८। ईदक्षास ऽएतादक्षास ऽउ षु ण: सदक्षास: प्रतिसदक्षास ऽएतन।। मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्।९। स्वतवांश्च प्रघासी च सांतपनश्च गृहेमेधी च। क्रीडी च शार्की चोज्जेषी।।१०।। उग्रश्च भीमश्च ध्वांतश्य धुनिश्च।। सासह्वांश्चाभि युग्वा च विक्षिप: स्वाहा।।११।। पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसव: समिंधतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञै:। घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्वसत्या: संतु यजमानस्य कामा:।१२। इति पठित्वा यजमानस्य कामा: सत्या: संतु इति श्रीफलं यजमानाभिमुखं जुहुयात्। अर्थात् पूर्णाहुतिं कुर्यात्।

इस प्रकार पूर्णाहुति करके आगे के मंत्र से घृत धारा देवे।

ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सह स्त्रधारं। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष: स्वाहा।।

स्त्रवशेषं रुद्रकलशे त्यजेत्। इदमिन्द्राय न ममेति वदेत्।

स्त्रुवशेष को रुद्रकलश मे त्यागे तब "इदमिन्द्राय न मम" ऐसा बोले।

फिर स्त्रुवे से यज्ञविभूति लेके लगावें
"ॐ त्र्यायुष जमदग्ने" से ललाट पर-
"यद्देवेषु त्र्यायुषम्" से दक्षिण बाहूमूल पर-
"तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्" से हृदय प लगावे।

ततोऽग्न्युपस्थानम्

ॐ इद्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्यथेन्द्रं देवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्॥ एवमिमं यजमानं दैवीश्च व्विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवंतु॥१॥ ॐ इम७ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रवीनमग्ने सरिरस्य मध्ये॥ उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रिय७ सदंनमाविशस्व॥२॥ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिघृतेश्रितो घृतम्वस्य धाम॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्वम्॥३॥ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमांर२ऽ उदारदूपा७ शुना सममृतत्व मानट॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥४॥ वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन यज्ञे धारयामा नमोभिः॥ उप ब्रह्मा श्रणवच्छस्यमानं चतुः श्रृंगो ऽवमीद् गौर एतत्॥५॥ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽमस्य॥

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो ऽमर्त्यांर ऽआविवेश ।।६।।
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविंदन्।
इंद्रऽएकƆ सूर्य्यएकं जजान वेनादेकƆ स्वधया निष्टतक्षु ।।७।।
एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ।।८।।
सम्यक् स्त्रवति सरितो न धेनाऽअंतर्हृदा मनसा पूयमानाः।
ऐते अर्षन्त्यमूयो घृतस्य मृगाइव क्षिपणोरीषमाणाः ।।९।।
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयंति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिंदन्नूर्मिभिः पिंवमानः ।।१०।। अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम। धृतस्य धाराः समिधो नसंतता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः ।।११। कऱ्यां इव वहतुमेतवा ऽउऽअं ज्यंजाना अभि चाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत्पवंते ।।१२।। अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवंते ।।१३।। धामंते विश्वं भुवनमधि श्रितमंतः समुद्रे हृद्यंतरायुषि। अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्त तऽउर्मिमं ।।१४।। चतुर्भिश्च चतुभिश्च द्वाभ्या पंचभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ।।१५।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि मंत्र कर्म क्रियाविधिः। संपूर्णं करुं यज्ञेशगार्हपत्य नमोऽस्तुते ।।१६।। यथा यस्त्रप्रहाराणां कवचं

भवति वारणम्। तद्देवाप घातानां शांतिर्भवति वारणम्।।१७।। स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां बुद्धिं श्रियं बलम्। आयुष्यं चैवमारोग्यं देही में वांछितं फलम्।।१८।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु। न्यूनं सश्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।१९।। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानुसृतस्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।।२०।। प्रमादात कुर्वतां कर्मं प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणा देव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रूत्तिः।।२१।। ॐ यज्ञपुरुषाय नमः।।

पांच रुपये : श्रीफल यज्ञपुरुष को भेंट करे।

।। आरती जगदीश हरे की ।।

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे।।टेर।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का।
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।१।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुमबिन और नादूजा आस करूंजिसकी।।२।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।३।।
तुम करुणा के सागर, तु पालन कर्ता।

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता।।४।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।।५।।
दीनबन्धु दुखःहर्त्ताः तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे।६।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।७।।

जिन २ की आरती हो वह बोले।

"द्यौः शान्ति०"

से शंखोदक का छींटा सबके देवें फिर पुष्पाक्षत हाथ में लेके-

पुष्पांजलि के मन्त्र

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्या सन्। ते ह नांक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।१।। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। सम कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरा वैश्रणवो ददातु कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।२।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमय समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभोमसार्वानुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रर्पन्तायाः एकराडिति। तदप्येषु श्लोकोऽअभिगीतो। मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् घृहे

आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवा सभासदः ।।३।। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्धावाभूमी जनयन् देव एकः ।।४।।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।

(ॐ दाशरथये विद्महे सीतावराय धीमहि। तन्नोरामः प्रचोदयात्।) (ॐ भागीरथ्यै व विद्महे। विष्णुपद्यै च धीमहि। तन्नो गङ्गा प्रचोदयात्) ॐ वक्रतुंडाय विद्महे। भाल चंद्राय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। (ॐ तत्पुरुषाय विद्महे माहदेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्) ।।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणः पदे-पदे ।।

नमस्कार

नमः सर्वं हितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ।।
मन्त्र हीनं क्रियाहीनं सुरेश्वर।
यन्मया पूजितो देव प्रसीद परमेश्वर ।।
पापोऽहं पापकर्माह पापात्मा पाप सम्भवः।
पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव ।।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत।
तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

स्त्रवप्रशनम्। वह घी जो प्रोक्षणी में त्याग किया गया था उसको भक्षण करें अथवा सूघें।

॥ पूर्णपात्रदानम् ॥

फिर चार पूर्णपात्र एक घी की कटोरी, दूसरी शक्कर की, तीसरी चांवल की और चौथी तिल की कटोरी इन सब में दक्षिणा रखे और यज्ञोपवीत भी। एक पूर्णपात्र श्री ब्रह्माजी को भेंट करें, दूसरा आचार्य को, तीसरा चौथा अन्य दो ब्राह्मणों को देने के लिए संकल्प बोलें।

पूर्वोक्त गुणविशेषण विशिष्टायां तिथौ वासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामहं अमुक-शांति (उद्यापन देव प्रतिष्ठा) कमर्णासफलता प्राप्त्यर्थ पूर्णपात्र चतुष्टयं ब्रह्मणं आचार्याय ब्राह्मण द्वयाय च समर्पये। ततः सर्वेषामुत्तरपूजनं कुर्यात।

सब देवताओ का उत्तर पूजन करें।

ततो ब्रह्मग्रन्थिका-विमोकः तया दर्भया प्रणितापात्रजलेन निम्नमन्त्रे शिरोमार्जनम्।

फिर ब्रह्माजी की गांठ खोल देवें। उसी दर्भा के नीचे के मन्त्र से प्रणितापात्र के जल से शिर मार्जन करें,--

यथा--"ॐ सुम्त्रिया न आप ओषधयः सन्तु"

प्रणिता को ओंधा करने का मन्त्र :-

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं यं च वयं द्विष्मः॥ ईशान्यां प्रणीतायां न्युब्जीकरणम्॥ पवित्रेऽग्नौ क्षिपेत्॥ अग्नेऽर्घ्यत्रयं तेन नयनस्पर्शः।

यह मन्त्र बोलकर ईशान कोण में प्रणितापात्र को ओंधा कर दें और पवित्रियों को अग्नि मे डाल दें। अग्नि को तीन बार अर्घ्य देकर उस जल से नेत्र स्पर्श करें।

बर्हिहोमः

तत आस्तरण क्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्ययुक्तं कृत्वा हस्तेनैव निम्न मन्त्रेण जुहूयात्।

जिस प्रकार वेदी के चारों ओर बर्हि (कुशाए) बिछाई थी उन्हें उस क्रम से उठाकर धृत मे भिगोकर आगे के मन्त्र से हाथ से ही होम देवें।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञ स्वाहा वातेधाः स्वाहा॥

पश्चात् आचार्यादि ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे ऐतदर्थं संकल्प पढ़े--

पूर्वोक्त गुणविशेषण विशिष्टे अमुक संवत्सरेऽमुकमासे ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथौ च ऽमुकगोत्रोत्पन्नो ऽमुकनामाहं अमुक शान्ति (उद्यापन गृहप्रतिष्ठा) कर्मंणि सफलताप्राप्त्यर्थं आचार्याय, ब्रह्मकर्म कर्त्रे अन्येभ्यश्चापि विप्रेभ्यः ससम्मान दक्षिणां भूयसीं दक्षिणां (भूरसीं) च सम्प्रददे॥

पूर्वोक्तसंवत्सरे मासे पक्षे तिथौ च अमुकगोत्रोत्पन्नो ऽमुकनामाहं यथाशक्ति ब्रह्मणान् भोजयिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके सब की मनसंतुष्टि कर भोजन तथा दक्षिणा देवें।

अवभृथस्नानार्थ मंत्र

यज्ञभस्मी एक पात्र में तथा वहाँ बिखरे हुए शाकल्यादि को तथा मणिक कलश तथा शालग्रामजी की मूर्ति को कलश पर स्थापित करके तड़ागादि स्थान पर जावें।

वहां कलश तथा भगवत्पूजा करके कलशादि का जल भस्म शाकल्यादि तीर्थ में डाल दे। फिर जल में घी की आहुति पृष्ठ ७० मे छपे मंत्रों से दें। वहां बलि रख देवें। वहां स्नान करें।

शेष भस्मी को यजमान शरीर पर लगावे कुछ लाके यज्ञ में डाल दे। फिर स्नान करे। मणिक के जल से भी छींटे लगा देवें। फिर भगवन्नाम कीर्तन करते हुए यज्ञस्थल में आवे। मणिक का जल तथा सब कलशों का जल एकत्रित करके यजमान का अभिषेक करें।

अवभृथस्नान मंत्र

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिणे दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि षिंचाम्यसौ।१। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णों हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।२।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि। सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि ॥३॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥४॥

ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्। यच्चाभि दुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥५॥

पश्चात् यजमानस्य पत्नी तस्य वामांगे उपविशेत् प्रधानकलश-रुद्रकलश एवं सर्व कलशीयजलेन तयोरभिषेकं कुर्यात्।

पीछे यजमान अपनी पत्नी को वाम भाग में बिठावे और आचार्य प्रधानकलश तथा रुद्रकलश के जल से उनका अभिषेक करे। यथा --

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वती प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ विष्णों रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता। वसवो देवता रुद्रा

देवता ऽऽ दित्या देवता मरूतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष৩ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशांति सर्व৩ शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि।५।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न उर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ॥ आपो जनयथा च नः।। शान्तिरस्तु। पुष्टिरस्तु। तुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्मस्तु। शिवमस्तु। शिवंकर्मास्तु। कर्मसमृद्धिरस्तु। धर्मसमृद्धिरस्तु। वेदसमृद्धिरस्तु। शास्त्रसमृद्धिरस्तु। पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। धनधान्य समृद्धिरस्तु। (अब जमीन पर त्याग करें) अनिष्ट निरसनमस्तु यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तत्प्रतिहतमस्तु (फिर दोनों के हाथों पर छींटे दें) राज्यद्वारे गृहे सुख शान्तिर्भवतु, श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। ॐ शांतिः २ शांतिः॥

फिर यजमान दम्पत्ती के तिलक कर राखी बांधे।

पीछे निम्न मन्त्रों से यजमान को सुपारी सहित आशिका झिलावे, आशीर्वाद देवें।

आशिका

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तथा॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोप्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिंता नित्यं निघ्नन्तु तव शात्रवान्॥
अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्द्धन्त आयुः कीर्तिर्यशो बलम्॥
धनवान्, पुत्रवान् लक्ष्मीवान् सदादीर्घायुर्भव।

अब अक्षत हाथ में लेके देव विसर्जन करें --

अथाग्निप्रार्थना विसर्जनं च

गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने कुंडमध्यतः। हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देही प्रसीद मे।।१।। ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरः। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

अथ नवग्रहादीन् विसर्जयेत्

अक्षतानाय--भूमिध्ये गच्छ सिद्ध गोलोके त्वं प्रजापते।। वरुण त्वं जले गच्छ सागरे कलश व्रज।।१।। होमांते गच्छ गणप ब्रह्मांडे त्वं पितामह। विष्णो त्वं गच्छ वैकुंठ कैलाशे त्वं महेश्वर।२। लक्ष्मी त्वं हि महाविष्णु स्वमतारमनुव्रज।। रवे गच्छ कलिंगे त्वं चंद्रं त्वं यमुनातटे।।३।। अवन्तीं गच्छ भौम त्वं बुध त्वं मगधे व्रज। सिंधुदेशे जीव गच्छ, कवे भोजकटे व्रज।।४।। शनै त्वं गच्छ सौराष्ट्रे राहोराठीनकं व्रज। अवंतीं गच्छ केतो त्वं स्व स्व स्थानं नवग्रहाः।।५।। इन्द्रामरावर्तीं गच्छ तथाऽऽग्नेर्यीं च पावक, ब्रज संयमनीं धर्म नैर्ऋर्तीं ब्रज निर्ऋते।।६।। वरुणाँभौनिधौ गच्छ सर्वज्ञ ब्रजमारुत। गच्छालकां कुबेरत्वमोशैशानीं दिशं ब्रज।।७।। महेन्द्रे त्वं ब्रजागस्त्य ध्रुव त्वं मेरुपर्वते। तथाभवद्भिर्ऋषयो गंतव्यमृषिमंडले।।८।। वसवोष्टो तु गंगायां रुद्र रुद्रपुरी ब्रज। गंधर्वाः किन्नराः सर्वेस्व स्व स्थानं च गच्छत।।९।। यांतु देवगणां सर्वे पूजामादय मामकीय।

इष्टाकायसमृध्यर्थ पुनरागमनायच॥१०॥ रुपं देहि जयं देहि यशे देहि द्विषो जहि। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥११॥ यस्य स्मृत्या च नामो क्त्या तपः पूजाक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥१२॥

फिर सुवासणी द्वारा यजमान की आरती करा देवें। नये वस्त्र आयें तो पहना देवें। यदि भगवान् का मन्दिर यज्ञस्थल से दूर हो तो सारे अधिवासानंतर भगवान् को श्रृंगार करा कर फिर वहां भी आरती करे तथा मंत्र पुष्पांजलि प्रदक्षिणानंतर सबको प्रसाद वितरण करे और भगवान् का कीर्तन करे। ब्राह्मण तथा साधुओं को भोजन दक्षिणादि से संतुष्ट करे।

मंगल भगवान् विष्णु मंगल गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षौ मंगलायतनो हरिः॥
इति श्री-दाधीचवंशोत्पन्न धरणीधर शास्त्रिकृता।
सरला सर्वदेव प्रतिष्ठा पूर्णातामगात्॥

मार्कण्डेय पुराणोक्त जलाधिवास

सपत्नीक यजमान कारुशाला मे जाकर, कुशासन पर बैठकर, आचमन प्राणायाम करके ब्राह्मणों द्वारा शांति पाठ करवा कर संकल्प करें। यथा --

आसां मूर्तीनां देवतायोग्यताधिष्ठानसिद्ध्यर्थ जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करे "यदत्रसंस्थित०" आदिसे या "अपक्रामन्तु भूतानि०" से भूतोत्सारण करके पीठोपरि भगवान्

को पूर्वमुख या उत्तरमुख बिठाकर ये ये समान जमा देवें।

सप्तमृत्तिका, पंचवृक्षीय कषाय (या पत्ते), पंचामृत भस्म, गौमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, इनको जल में भी गेर देवे और अलग-अलग भी रख देवे।

"पश्चात् मधु और धृत के अभ्यंग (स्नान से व्रणभंग करके मोम से नेत्रावरण कर देवे) सब जलों से स्नान करावे फिर गुरु से प्रार्थना करे यथा --

"देवस्य अवयवान् सम्यक् निरीक्षस्व गुरो" इस प्रकार गुरु तथा ब्राह्मणवृन्द निरीक्षण कर लेवे।

पीछे फिर संकल्प करे--

देशकालौ संकीर्त्य सपरिवाराणां विष्णवादि-मूर्तीनां अङ्ग प्रत्यङ्ग सन्धिमुत्पन्न वासाग्निकष्टकान्यातपोग्नि निरा सार्थ च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके 'अश्मन्नूर्ज' अनुवाक से अथवा 'पुरुषसूक्त' से, शिवजी हो तो "नमस्ते" इत्यादि सोलह (१६) मंत्रों से देवी हो तो श्रीसूक्त के मंत्रो से जल और दूध से मूर्तियां पर सन्तत धारायें देवें।

यह अग्न्युत्तारण संस्कार हुआ। फिर प्रार्थना करे--

ॐ त्वयि संपूजयामीशं नारायण मनोमयम्।
रहिताऽशेषदोषैस्त्वमृद्धियुक्तो सदा भव॥१॥
सर्व सत्वमयं शांन्त परं ब्रह्म सनातनम्।

त्वामेवालं करिष्यामि त्वं वंद्यो भवते नमः ॥२॥

इस प्रकार नमस्कार करके कुशा और वस्त्र से वेष्टित प्रतिमा को जलद्रोणी में सुला देवें (याने जलाधिवास करा देवे) तब विप्रवन्द शांति अध्याय का पाठ करें।

इसका प्रमाण रात्रि भर, पहरपर्यन्त अथवा गोदोहन संमित काल भी कहा है जैसी सुविधा हो करें। कहा भी हैं--

जलाधिवासनं रात्रौ यामं गोदोहनमात्रं व कुर्यात् (प्रतिष्ठारत्नावली) पीछे भगवत् प्रतिमाओं के दक्षिण हाथ पर देवी हो तो वाम हस्त मे श्वेत ऊन मे सर्वौषधि ओर मैनसिल बाधकर डोरा (रक्षासूत्र) बांध दें।

(कुछ चतुर्थीलाल जी की प्र० प्र० से विशेष)

पर यदि तीर्थ स्थान पर जाना हो तो भगवान् को रथ में बिठाकर ले जावे। गणेशादि की पूजा करें वहां भगवान को विराजमान करके स्थंडिल पर कुशकांडिकापूर्वक कुछ भी वहां कर ले। मंत्र ये हैं--

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते ऽ अन्य ऽ इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाᳬ रीरिषो मोतवीरान् स्वाहा॥

अथवा अघोरेभ्योथ घोरेभ्य० तथा ॐ यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्चकृमा वयमिदं तदेव यजामहे स्वाहा।

इनकी १०८ आहुति देकर पूर्णाहूति करके संकल्पपूर्वक

वरुणदेवता प्रीत्यर्थं गणेश जलमातृका जीवमातृकां, क्षेत्रपाल वरुणपूजन करें। गणेश। मंत्र से गणेशजी की पूजा करके सदीप दधिमाषभक्तबलि देवें।

अब जलमातृ पूजा:, ॐ मत्स्यै नमः। ॐ कच्छप्यै नमः। ॐ कूर्म्यै नमः। ॐवाराह्यै नमः। ॐददुर्य्यै नमः। ॐ शिशुमार्यै नमः। ॐ ईश्वर्यै नमः।।७।। नाममंत्रेण षोडशोपचारैः पूजनम्।

अब जीवमातृ पूजन, अक्षतों पर वा दीवार पर सात रेखाओं पर ॐ मत्स्यै नमः। ॐ हृद्यै नमः। ॐ गोधायै नमः। ॐ मकर्यै नमः। ॐ डुण्डुभ्यै नमः। ॐ दर्दुर्यै नमः। ॐ जल्यै नमः।।७।।

प्रत्येक की गंधाधि से पूजा करे। फिर

"ॐ चतुषष्टियोगिनीभ्यो नमः।"

मंत्र से कुंकुमादि से जल मे योगिनी पूजा करें।

पर यदि तीर्थ स्थान पर जाना हो तो भगवान् को रथ में बिठाकर ले जावें वहाँ पर फिर जलमातृकादि का भी पूजन करावे यथा --

पश्चात् वायव्यकोण में क्षेत्रपाल को पुरुषाकार लिख कर-"ॐ क्षेत्रपालेइहागच्छ इहतिष्ठ से आह्वान करें।

"ॐ क्षेत्रपालाय नमः" से पूजा करके

दधिमाषभक्तबलिं देवें।

फिर आचमन करके जल पूजन करें।

ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः। ॐ मानसादि सरोभ्यो नमः। ॐ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः। ॐ गंगादिमहानदीभ्यो नमः।

गन्धाक्षत जल में डालता जावे। तब वरुण पूजा करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश७ समान आयुः प्रमोषीः। ॐ भूर्भुव स्वः इहागच्छ इह तिष्ठत अपामधिपति-वरुणाय नमः।

गन्धादि से पूजा करके मासभक्तबलिदेवें। फिर पंचामृत को हाथ में लेकर "ॐ पयः पृथिव्याम्" मंत्र से जल में डालें।

पीछे कलश स्थापन विधि से चारों दिशाओं में और मध्य में एक कलश स्थापित करके। उसमे --

"ॐ तत्वायमि ब्रह्मणा वन्दमानः० "

इस मंत्र से वरुण का आवाहन पूजन करके आम्रपल्लव और पुष्पमालाओं के कलशों को सुभूषित करदें परश्चात् गणेशादि की थाली में पूजा करके जल स्थित देव की प्रार्थना करें। यथा--

"ॐ त्वदधिष्ठानयोग्यं च त्वत्प्रसादात् सुरेश्वर"

ऐसा बोलकर धूपादि करें। इस प्रकार करके कम से कम मुहूर्त भर भगवान् को जल मे सुला देवें।

ॐ सहस्त्रशीर्षा इत्यादि पुरुषसूक्त का पाठ सुनावें।

भगवान् को मूहूर्त भर जल में सुलाकर--

पीछे जल से निकालकर तीर पर वस्त्र बिछाकर स्नान गंधादि से फिर पूजन करके पूर्व स्थापित चार कलशों के साथ देवता को उठावें: तब बोले --

ॐ उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकांत त्रैलोक्यं मंगलं करु॥

इस प्रकार उत्थापन करके आचार्य भगवान् को रथ या विमान में बिठाकर सर्वाभरण भूषित मूर्तियो को मार्ग में धीरे-धीरे ले चलें। इस प्रकार भगवान को महामण्डप की प्रदक्षिणा कराते हुये स्नान मंडप में ले आवें। वहाँ मध्यम वेदिका पर भद्रासन पर प्रत्यङ्मुखदेव को विराजमान करें उनके आगे कलशों को भी:-

''ॐ भद्रं कर्णेभिः'' इत्यादि मंत्रों से विराजमान करें।

नोटः- जहाँ नदी कुंड आदि न हो तो टब में भी साधारण प्रक्रिया की जा सकती है। जैसा कि पहले लिख दिया है।

इति जलाधिवासन विधिः

आग्नेय पुराणोक्त देवस्नपन प्रयोग

आचार्य स्नान मंडप मे **(ॐ नमोनारायणाय अथवा ॐ नमः शिवाय** इत्यादि प्रधान स्थापनीय देव मंत्र से पंचगव्य को अभिमंत्रित करके उससे सारे स्नान मंडप का प्रोक्षण करदे फिर बालू रेत की तीन वेदियां बनावें। उस पर चांवलों से स्वस्तिक मांडे। उन पर तीन भद्रपीठ रखकर आगे के मंत्र से विश्वकर्माजी का ध्यान करें।

ॐ विश्वकर्मा तु स्मर्तव्यः श्मश्रुलो मांसलाधरः।
सन्दंशपाणिर्द्विजस्तेजोमूर्तिः प्रतापवान्॥

पीछे सप्तधान्यों पर जलपूर्ण कलश रखकर उन्हें त्रिसूत्री से वेष्टित कर दे और उसमें पल्लव रख देवें।

फिर दक्षिण वेदी के पीछे द्वादश कलश रख देवें उनको पूर्व या उत्तर की ओर रखें। और वहीं बारहवां स्थपति नामक कलश रख दें।

पीछे क्रम से पाँच कलशों में मृतिका (१) पंचपल्लव वृक्ष का कषाय, (२) गोमूत्र, (३) गोमय, (४) भस्म, (५) वें मे डाले शेष सात कलशों मे गंधोदक (गुलाब जल) भर दें।

इसी प्रकार मध्यवेदी के पीछे ११ (एकादश) कलश रखें उनमें भी पूर्वोक्त सामग्री डाल दें। यहाँ स्थपित कलश बारहवां नहीं होगा।

उत्तर वेदी के पीछे प्रथम पंक्ति मे पांच शुद्ध-दल के कलश। द्वितीय पंक्ति मे २० कलश।

उनमें विषम कलशों मे एक (१) में अष्टपल मृत्तिका, दूसरे में सप्तपल गोमय, तीसरे मे द्वादशपल गोमूत्र, चौथे में एक मुट्ठी भस्म, पाँचवें में त्रिपल्लव तथा पंचगव्य, छठे में सोलह पल दूध, सातवें में बीस पल

दधि, आठवें में सप्तपल गोघृत, नवमें मे त्रिपल मधु, दसवें में त्रिपल शर्करा डाल देवे।

सम कलशों में तो शुद्धोदक ही भरें।

अब तृतीय पंक्ति में दो कलश शुद्ध जल के रखें।

चतुर्थ पंक्ति मे (६) कलश होंगे। उनमें पहले मे पंचामृत। बाकी सब में शुद्ध जल।

पंचम पंक्ति में चतुर्दश कलश रखें उनमें क्रम से एक (१) में गंध, दूसरे में पंचपल्लव कषाय, तीसरे मे सर्वोषधि। चौथे में श्वेत पुष्प, पांचवें में शांत्युदक, छठे में आठ फल, सातवें में सुवर्ण, आठवें में गोश्रृंगोदक, नवमें मे सप्तधान्य, दशवें में सहस्त्रछिद्र कलश तथा तत्सहायक एक और ग्याहरवें में दिव्य सर्वोषधियें बारहवें में पंचपल्लव, तेहरवें में नवरत्न, तथा चौदहवें में तीर्थोदक भरे।

फिर पूर्वादि आठों दिशाओं में समुद्र संज्ञक कलश स्थापित करें। इन कलशों को नीचे लिखे मंत्रों में रखे।

१. हिरण्यगर्भ समवर्त ताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक०

२. य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो०

३. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रँ रसया०

४. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं०

५. अयोहयद्ध०

६. यश्चिदापो महिना पर्य पश्य द्दक्षं दधाना०

७. येन द्यौ रूग्रा पृथवी च द्दढ़ा ये न स्वस्तभितं०

८. वेनस्तत्पश्य त्रिहितं गुहा सद्यत्र विश्वं०

इनमें क्रम से उदक भरें

(१) क्षारोदक, (२) क्षीर, (३) दधि, (४) घृत, (५) इक्षुरस, (६) आसवोदक या फलासव, (७)स्वादुदक और (८) नारिकेलोदक।

षष्ठ पंक्ति मे १० दस कलश हो इनमें क्रम से --

कदम्ब, शाल्मली, जम्बू, अशोक, प्लक्ष (पीपल) आम, वट बिल्ब नाग और पलाश के पत्ते रखें।

इन दस कलशों में लोकपालों (इन्द्रादि) का आवाहन करें।

सप्तम पंक्ति में चार बड़े कलश रखें। उनमें :-

बारीक असितवस्त्र, सुगन्धित तेल, यव, शालि (चांवल) गोधूम, मसूरिका, बिल्व तथा आंवलों का चूर्ण (उद्वर्तन के लिये) रखे। अन्य भी सुगन्धित वस्तुएं हों।

कस्तूरिकायां द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुंकुमस्य च।
चन्दनस्य त्रयो भागाः शशिनस्त्वेक एव च॥

इन वस्तुओं से युक्त यज्ञकर्दम को और जटामांसी को रखें। पश्चात् पंचम पंक्तिस्थ अन्तिम चतुर्दशम कलश में जिसमें तीर्थोदक है, तीर्थों का आवाहन करें।

यथा--

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः॥
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः॥

इति देवस्नपनद्रव्य प्रकारः॥

अथ देवस्नपन की समंत्र विधि

जल देवता को निकाल कर यह प्रार्थना करें।

ॐ स्वागतं देवदेवेश विश्वरुप नमोस्तु ते।

शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्व तम्॥

पश्चात्-ॐ उतिष्ठ ब्रह्मण० इत्यादि--

इस मंत्र से उत्थापन करके अग्न्युत्तारण करके प्रतिमा को कुशाओं से समार्जित करके मधु और घृत के (अभ्यंग) से देव का व्रणभंग करके फिर पूजा करें। पंचगव्य से पृथक-पृथक स्नान करावे फिर जल स्नान करावें। इस प्रकार पूर्ण पूजा करके महा-मण्डप को दक्षिण में रखते हुए स्नान मण्डप में ले आवें।

फिर आचार्य दक्षिणवेदी पर कुशास्तरण कर आगे के दो मंत्र बोलें।

ॐस्तीर्ण बर्हिं, सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु।१। ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम०।२।

इन मंत्रों से पूर्वाभिमुख देव को (प्रत्यङ्मुख) विराजमान करके स्थपति संज्ञक कलश को वस्त्र सुवर्ण रत्नादि युक्त करके देवता के सन्मुख रखकर आगे के मन्त्रों से उसमें तीर्थों का आवाहन करे। यथा--

ॐ काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्यऽयोध्याः मधोः पुरी।
शालीग्रामं च गोकर्ण नर्मदा च सरस्वती॥१॥
तीर्थान्येतानि कुंभेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्।
झषारूढ़ा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा॥२॥
आगच्छन्तु सुरज्येष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदल शामा पद्महस्तां बुजेक्षणा॥३॥
आयातु यमुना देवी कूर्मया न स्थिता सदा।

प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥४॥
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
जम्बुका च शतद्रुश्च कलिका सुषमा तथा॥५॥
वितृस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः।
गोदावरी महावर्ता शर्करावर्तमार्जनी॥६॥
कावेरी कौशिका चैव तृतीया च महानदी।
विटंका प्रतिकूला च सोमनंदा च विश्रुता।७।
करतोया वेत्रवती देविका वेणुका च या।
आत्रेयगंगा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या॥८॥
प्लाविनी च शवित्रा सा कल्माषा संशिनी तथा।
वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा॥९॥
तामा चैव त्रिसंध्या च तथा मन्दाकिनी परा।
तैलकाह्नी च पारा च दुन्दुभीर्नकुली तथा॥१०॥
नीलगंधा च बोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा।
अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा॥११॥
आषाढी डिण्डिभारत्नं भारभूतं वसाकुलम्।
हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यमकेश्वरम्॥१२॥
श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम्।
आम्रातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च॥१३॥
केदारमुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च।
तया चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा।१४॥

विमलं चंद्रहासं च माहेन्द्र भीममष्टकम्।
वस्त्रापदं रुद्रकोटिम विमुक्तं महालयम्॥
गोकर्ण भद्रकर्ण च हेमासं स्थानमष्टमम्।
छगलाह्वं दिरण्डं च कर्कोट मण्डलेश्वरम्।
कालंजर वनं चैव देवदारुं वन तथा।
शंकुकर्ण तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम्॥
एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुंभेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥

इति तीर्थान्यावाह्य "**कलशस्य मुखे विष्णु**" इत्यादि अभिमंत्रण करके "**देवदानव संवादे०**" से प्रार्थना करके गीतवादित्र शब्दों से देव को स्नान करावे।

(शिल्पि वर्ग वहां हों तो उनको भी संतुष्ट कर देवें)

पश्चात् आचार्य "**ॐ त्र्यबकं यजामहे**" मंत्र से प्रागादि दिशाओं में दशों दिकपालों की बलि देवे यथा --

पूर्वे इन्द्राय। भो इन्द्र दिशंरक्ष बलिंभक्ष यजमानस्याभदयं कुरु। आग्नेय्यमग्नये नमः। भो अग्ने०॥ दक्षिणे यमाय नमः। भो यम०। नैर्ऋत्यांनैऋतये नमः॥ भो नैर्ऋत०। पश्चिमे वरुणाय नमः। भो वरूण०। वायव्यां वायवे नमः। भो वायो०॥ उत्तरे कुबेराय नमः। भो कुबेर०। ऐशान्यामीशानाय नमो। भो ईशान०॥ इस प्रकार सब को बलि देकर, आचमन करके देव के पास आकर-

ॐ त्रातारमिन्द्रं० इत्यादि १० मंत्रों से मण्डपान्तर रक्षा करके चार ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन करावे।

फिर देवता के सम्मुख चार ब्राह्मणों को बैठाकर स्वस्तिवाचन करावे। उनमें मुख्य-मुख्य बोलने योग्य ये हैं-

भो ब्राह्मणाः अमुकदेवार्चा बुद्धिस्नपन नेत्रोन्मीलन कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३। पुण्याहम् ॥३॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु० ॥१॥ भो ब्राह्मणाः अमुकदेवाचार्या शुद्धिस्नपन नेत्रोन्मीलन कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ३॥ ॐ कल्याणम् ३ ॥ ॐ यथेमांवाचं ॥२॥

भो ब्राह्मणाः अमुकदेवार्चा शुद्धिस्नपन नेत्रोन्मीलनकर्मणः ऋध्दि भवन्तो ब्रुवन्तु ३ ॥ ॐ ऋध्दियताम् ३ ॥ ॐ सत्रस्यऋध्दि ॥३॥

भो ब्राह्मणा अमुकदेवा० कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ३॥ ते च स्वस्ति स्वस्ति वदेयुः। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो० ॥३॥ चाहें तो पूरा पुण्याहवाचन करें।

ततः कृतस्य पुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिध्दयर्थ दक्षिणाद्रव्यं नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातु महमुत्सृजे ॥

ऐसे संकल्प करके ब्राह्मणों का चन्दन तथा दक्षिणा से सत्कार करें और आशीष लेवें। फिर

ॐ अग्नर्मूर्धा दिव० इत्यादि मंत्र बोल कर मृत्तिका के कलश से। (फिर शुद्धोदक स्नान) करावें।

ॐ यज्ञा यज्ञावो ऽ अग्नये गिरागिरा च दशसे।

प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं नशृ॑ सिषम्॥

इस मंत्र से कषायोदक से (फिर शुद्धोदक स्नान) करावें।

"**ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम०**" गायत्री मंत्र से गोमूत्र से ओर "**गंधद्वारां दुराधर्षाम०**" इसे बोलकर गोमये से। "**ॐ मानस्ताके०**" मंत्र से भस्मोदक से (शुद्धोदक से स्नान)

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्० इस मंत्र से गंधोदक से फिर पंचकलशो से (शुद्धोदक से)

ॐ नमः शंभवाय च मनोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ (फिर गंधोदक से १) ॐ हॅ॑ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसद्दतसद्व्योम सदब्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऋतं बृहत् (इससे भी गंधोदक से २)

ॐ याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि। इससे भी (गंधोदक से ३) ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो० (गंधोदक से ४) ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं. गंधोदक से ५ (स्नान कराके)-

ततः शुद्धोदकस्नानम् (इस प्रकार देव को स्नान

कराके) ॐ शतंजीवेति मंत्रेण दूर्वाक्षत-सितपुष्पैः पूजयेत यथा,- ॐ शतं जीव शरदो वर्धमानः शतहेमन्ताञ्छतमुवसन्तान्। शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः॥

अब पीतवस्त्र से आच्छादन करके द्वितीय वेदी पर आवे।

द्वितीय वेदी

वहाँ "भद्रं कर्णेभिः" मंत्र से भद्रासन बिछाये। और
ॐ स्तीर्ण बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरू पृथुः प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु॥

यह मंत्र बोलकर प्रागग्र कुशाओं को बिछाकर उन पर प्रणव से देव को विराजमान करके आचार्य उत्तर में मुख करके कुंकुम के रंगे सूत्र से लिंग या देवमूर्ति को वेष्टित करके नेत्रोन्मीलन संस्कार करें।

नेत्रोन्मीलन संस्कार

भगवान् को शुद्धोदक से स्नान करा के फिर पीतवस्त्र से आच्छादित करके भद्रासन पर विराजमान करके-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे० इस मंत्र से सुवर्णपात्र वा ताम्रपात्र में मधु और घृत मिलाकर निम्न दो मंत्रो से उसको अभिमंत्रित करें--

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥१॥ घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी

पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥२॥

पश्चात् सुवर्ण शलाका को मधुघृत में डुबो कर प्रतिमा के मुख पर या शिवलिंगादि पर नेत्रों की कल्पना करें ये मन्त्र बोले--

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने। (इस आधी ऋचा से और) अग्निज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चों ज्योतिर्वर्च स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा॥

मंत्रो से नेत्रों की कल्पना करें।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

इस मंत्र से उपर नीचे कमलपुटों की कल्पना करके नेत्र के मध्य में वर्तुल कनीनिका बना देवें।

नेत्रोन्मीलन के समय नेत्रों के समाने कुमारी ब्राह्मण की कन्या कांच (दर्पण) दिखाती रहे।

उस कन्या को विशेष दक्षिणा तथा वस्त्रादि प्रदान करने से शुभ फल होता है।

पीछे भगवान् के सम्मुख मावे की मिठाई तथा फलादि चढ़ावे।

शिल्पी लोहे उसे उल्लिखित करें। फिर आचार्य मधु और दही से अभ्यंजन करें और--

यह नेत्रोन्मीलन संस्कार बाण रत्नादि लिंगो में आवश्यक नहीं परन्तु अन्य शिवलिंगों मे तो होता है।

ॐ इमं में वरुणश्रुधि हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

इस मंत्र से शुद्ध जल से तथा स्थापित एकादश कलशों से पूर्ववत् स्नान करावें। तथा अग्निमूर्द्धा-आदि मृत्तिका कलशादि से स्नान करावें। "**ॐशतं वो०**" इत्यादि से दुर्वाक्षत पुष्प चढ़ावे इनके मन्त्र पहले लिखे जा चुके हैं।

फिर "**ॐ सुजातो०**" इस मन्त्र से देव को आच्छदान करके सुवर्ण शलाका आचार्य को दे देवें। तब संकल्प बोलना चाहिये।

इसके पीछे कुंड के पास आकर "**ॐ त्र्यंबकं यजामहे०**" इत्यादि मंत्रों से १०८ आहुति देकर दिक्पालो को संक्षिप्त बलि देवें। फिर आचमन करें। फिर मण्डप में चार ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा से संतुष्ट करके "**नेत्रांजन**" करें।

इति द्वितीयवेदी (मध्य वेदी) विधिः।

इसके पश्चात् आचार्य उत्तरवेदी पर पूर्ववत् देव का स्नान करा के आद्यपंक्ति के आद्य कलश से--

अथ महास्नानन्

इसके बाद आचार्य संकल्प करावें।

अस्यां मूर्तो लिंगे वा एतद्देवता-प्रतिष्ठान-योग्यता सिद्ध्यर्थं नाना द्रव्योदक कलशैः महास्नान शुद्धिमहं करिष्ये।

अब भद्रासन से देव का उत्थापन करें। यथा मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

इससे उत्थापन करके

ॐ भद्रं कर्णेभि०, इत्यादि मंत्र से उत्तर वेदी पर भद्रासनं पर विराजमान करके-

ॐ त्रिपादूर्ध्व० इत्यादि मंत्र से स्नानार्थ पादपीठ की कल्पना करे।

फिर "ॐ पुरुष एवेदं" ए इत्यादि मंत्र से निवेदन करें।

फिर "जीवितपुत्रादि सुवासिनियो के गीतों से -समुद्रज्येष्ठादि०" चार मंत्रों से चार कलशों से स्नान करावें--

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायंत्यनि विशमानाः। इन्द्रो या वज्रीवृषमो ररादता अपोदेवीरिह मामवंतु॥११॥ ॐ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवंति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः। समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥२। ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्य जनानाम्। मधुश्च्युतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥३॥ ॐ यासु राजा वरुणो यासु सौमो विश्वेदेवा यासूर्ज मदन्ति वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥४॥

इन चारों मन्त्रों से स्नान करा के फिर दधि दूर्वा हरिद्रा कुंकुम से अक्षतों को रंग कर चढ़ावें।

"ॐ अन्नात्परिस्रुतो०" मंत्र से अक्षत चढ़ावें "ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च०" मंत्र से पुष्प, "ॐ धूरसि धूर्व, धूर्वन्तं" से धूप देकर प्रार्थना करें।

ॐ नमस्ते सुरेशानि प्रकृते विश्वकर्मणेः।
प्रभाविताशेषजगद्धात्रि तुभ्यं नमो नमः॥
त्वयि संपूजयामीशं नारायणमनामयम्।
रहिता शेष दोषैश्च ऋद्धियुक्ता सदा भव॥

पश्चात् देव के दक्षिण हाथ में तथा देवी के वाम हाथ में श्वेत ऊन का डोरा आचार्य के वितस्ति जतिना अथवा मूर्ति के वितस्ति जितना आगे के मन्त्र से बांधे-

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यᳲ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायुष्मांजरदष्टिर्य्यथासम॥

पीछे आगे का मन्त्र बोले--

सर्व सत्व मयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।
त्वामेवालं करिष्यामि त्वं वंद्यो भवते नमः॥

फिर अवशिष्ट चार शुद्धोदक कलशों से इन मंत्रों से स्नान करावें।

ॐ इदमापः प्रवहतावद्यंच मलं चयत्। यच्चाभिदुद्रोहानृ यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥ (१ शुद्धोदक से)

ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वᳲ

सुरभाऽ उ लोके। तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥ (२ शुद्धोदक से)

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवामद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ (३ शुद्धोदक से)

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा० इत्यादि से (४ शुद्धकलश से) स्नान करावें।

(पीछे द्वितीय पंक्ति से इक्कीस २१ कलशों में यथाक्रम स्नान करावे यथा--

ॐ अग्निमूर्धा० (मृत्तिका कलश जल से १) ॐ वरूणस्योत्तंभनमसि० (शुद्धोदक से २) गंधद्वारां दुराधर्षा० (गोमय से ३) ॐ देवीरापो अपान्नपाद्यो व उर्म्मिर्हविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा। (शुद्धोदक से ४) ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् (गोमूत्र से ५) ॐ आपोहिष्ठामयोभुव० (शुद्धोदक से ६) ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। स्ɒ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः (भस्मोदक ७ से) ॐ शन्नो देवी० (शुद्धोदक से ८) ॐ पयः पृथिव्यां (पंचगव्य से ९) ॐ यो वः शिवतमो रसः (शुद्धोदक से १०) ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णम्। भवा वाजस्य संगथे (क्षीरजल से ११) ॐ तस्मा अरंगमामवो० (शुद्धोदक से १२) ॐ दधि क्राव्णो अकारिषम्० (दधिजल से १३) ॐ युञ्जानः

प्रथमं मनस्तत्वाय सविताधियः। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्। (शुद्धोदक से १४) ॐ घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽ अजरे भूरिरेतसा। (घृत से १५) ॐ देवस्य त्वा सवितुः० (शुद्धोदक १६) ॐ मधु वाता ऋता०। (मधु से १७) ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्व्ँ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीँरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि। (शुद्धोदक से १८) ॐ आयं गौः पृश्नि० (शर्करा से १९) ॐ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयंतीरग्निम्। ततो देवानॉँ समवर्त्तता सुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (शुद्धोदक से २०) ॐ यज्ञायज्ञा वो अग्रये गिरागिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृत जातवेदसं प्रिय मित्र न श्ँ सिषम्। (२१) (इसी से वस्त्र से पूंछकर उसी से सुगंधी तैल से अभ्यञ्जन करें।

पश्चात् "द्रुपदादिव मुमुचान०" (मन्त्र से यव चांवल गोधूम मसूरादि आमलक चूर्ण से उबटन करें। पीछे "ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी"। तया नस्तवन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। (इस मन्त्र से यक्ष्य कर्दम से जटामांसी का अनुलेपन करें।।

पश्चात् तृतीय पंक्तिस्थ दो कलशों से--

ॐ मानस्तोके तनये० तथा ॐ प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरूषुत् त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा (इन दो मन्त्रों से स्नान करावे।

अब चतुर्थ पंक्ति के छह (६) मंत्रों से क्रम से स्नान करावें। यथा--

ॐ आप्यायस्व स मे० (से पंचामृत से १) पृथक्-पृथक् पंचामृत के पांच मन्त्रों से २)।

ॐ उरूँ हि राजा० तथा ॐ सन्ते पयाᳫ सि समुयन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिविश्रवाᳫ स्युत्तमानि धिष्व॥ (शुद्धोदक से ३) ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिर ᳫ शुभिः। भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे (शुद्धोदक से ४) ॐ अपस्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रूध्यसे। गर्भे सं जायसे पुनः। (शुद्धोदक से ५) ॐ अषाᳫ रसमुद्वयस्ᳫ सूर्ये सन्तᳫ समाहितम। अपाᳫ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् (शुद्धोदक से ६)।

अब पंचम पंक्तिस्थ १४ कलशों से क्रम से

ॐ गन्धद्वारां (गंध्दोदक से १) : यज्ञायज्ञावो (कषायोदक से २) ॐ या ओषधी० (सर्वोषधि जल से ३) ॐ ओषधीः प्रतिमो० (पुष्पोदक से ४) ॐ द्यौः शांति० (शन्त्युदक से ५) ॐ याः फलिनीर्या०। (फलोदक से ६)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तता० (सुवर्णोदक से ७)

ॐ हविष्मतीरिमा ऽआपो हविष्माँ ऽ आविवासति। हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्माँ२अस्तु सूर्यः॥ इससे (गोश्रृङ्गोदक से ८) ॐ धान्यमसि धिनुहि० (सप्त धान्योदक से ९) ॐ अग्ने हस्व पृतना अभिमातीरपास्य दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसि। (सहस्त्र छिद्र कलश से स्नान करावें १०)

ॐ या ओषधिः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु। बृहस्पति प्रसूता अस्यै सन्दत्त वीर्यम्। (पुनः सर्वोषधि कलश के जल से ११) ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० (पंचपल्ववोदक से १२) ॐ अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून। हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वर्याणि। (नवरत्नौदक से १३) ॐ इमं में वरुण० (तीर्थोदक से १४)॥

अब वेदी के चारों तरफ आठ समुद्री जलों से--

ॐ कया नश्चित्र आभूवदूती सदा वृधः सखा।कया शचिष्ठया वृता॥ (क्षारोदधि जल से १)

ॐ आप्यायस्व०। (क्षीरोदधि जल से २)

ॐ दधि क्राव्ण० (दध्युदधि जल से ३)

ॐ घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे

भूरिरेतसा। (घृतोदधि कलश के जल से ४) ॐ पयः पृथिव्याम्० (इक्षुरसोदक से ५)

ॐ देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र से सदः। इशायै मन्युꣳ राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज। (सुरोदधि कलश से ६)

ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः। (स्वादूदधिकलशस्थित जल से ७) ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतंविभर्ति। अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रꣳ श्रिये जनयन्नप्सु राजा।। (गर्भोदधि जल से ८) स्नान करावे।।

अथ षष्ठ पंक्तिस्थ दश कलशों से स्नान करावे। यथा--

ॐ त्रातारमिंन्द्र० (इससे कदम्ब जल से १)
ॐ त्वन्नो० (शाल्मलि जल से २)
ॐ यमाय त्वा गिर० (जम्बू जल से ३)
ॐ अशुन्वंतम० (अशोक जल से ४)
ॐ तत्वायामि० (प्लक्ष-पीपल जल से ५)
ॐ आनो नियुद्भिः० (आम्रजल से ६)
ॐ वयꣳ सोम व्रते (वट जल से ७)
ॐ तमीशानम् जग० (विल्व जल से ८)

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० (नागवल्ली जल से ९)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं० (पलाश जल से १०)

शिवजी पर त्र्यंबकं० (रुद्राक्षपत्र से ११) स्नान करावे।

अब सप्तमपंक्ति के चार वा एक मंत्र से--

ॐ आनो भद्रा० (इस अनुवाक से स्नान करावे)

पश्चात् सूक्ष्म वस्त्र से पोछ कर पीछे भगवान् को पुरुष सूक्त से और शिवजी को रुद्रसूक्त से अभिषेक करे।

पश्चात्-- ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुं। ॐ नेत्रत्रयाय वोषट्। ॐ अस्त्राय फट्।। इन षडंगन्यासो को सकली करके याने बोलकर--

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो०''

इस मंत्र से भगवान् की विराटता को ध्यान करे। फिर आवाहन करे--

एह्येहि भगवन्देव लोकानुग्रह काम्यया।
यज्ञमार्ग गृहाणेमं स्थाप्य देव नमोस्तु ते।।

ॐ आकृष्णेन रजसा० मंत्र से भगवते नमः (पादयोः पाद्यम्) ॐ हिरण्यगर्भे० (हस्तयोरर्ध्यम्।

ॐ विभ्राट (अर्घाङ्गाचमनीयम्)

ॐ पंचनद्यः० (पंचामृतस्नानम्)

ॐ देवस्य त्वा (शुद्धोदकस्नानम्)

वस्त्रमुपवस्त्रं (पुनराचमनीयम्) यज्ञोपवीतम्० गन्धं चन्दनं अक्षतान्, पुष्पमालां, दुर्वांकुराणि। धूपं दीपं नैवेद्यं (नैवेद्यामुद्रा दिखाकर) आचमनींय तांबूलत्रयं पूगींफलं दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि। आर्तिकां पुष्पांजलि प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रसादवितरण

यह भगवान् की सांगोपांग विधि लिखी गई है। फिर आचार्य जैसा और जितना उचित समझें, करा लेवें। परन्तु उपर्युक्त सम्पूर्ण मंत्रों से औषधि स्थानों से ही मूर्ति में चमत्कार आता हैं शुद्ध मन्त्रो के लिये श्रेष्ठ पुस्तके **श्री सरस्वती प्रकाशन**, सैन्ट्रल बैक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर से ही बी.पी. द्वारा मंगावे।--

अन्नाधिवासन शय्याधिवासन

अब मण्डप के यथोक्त कोण में सात धान्यराशियों पर भगवत प्रतिमाओं को विराजमान करके चावलों पर वा यवों से देवताओं को ढ़क देवे। जब तक धान्यराशि मूर्तियां रहे तब तक पुरुष सूक्त का पाठ ब्राह्मण करते रहें। इस अवसर पर १२ ब्राह्मणों को पायसान्न जिमावे।

पश्चात् सुन्दर शय्या पर सुन्दर गलीचे या पथरणा आदि बिछाकर पुष्पों की पंखुड़ियां और इत्र आदि छिड़क कर शयन का आयोजन करे। दुग्ध पिलावे, पायसान्न और फलों का भोग लगावे और :-

अनेन पायसान्न भोजनेन फलैश्च देवो नः प्रीयताम्।

पीछे (४) चार गोदान आचार्यादि को देकर भगवान् को एक पहर

तक या कम सुलावे। पूर्वमुखी मन्दिर हो तो अग्निकोण में शय्या। पश्चिममुखी हो वायव्य कोण में। उत्तरमुखी हो तो ईशान कोण में। (दक्षिणमुखी प्रासाद हो तो नैर्ऋत्य कोण में शय्या हो)।

फिर पुरुषसूक्त के पाठों से और निम्न पद्यों से उन्हें उठाकर रथ पर या पालकी में विराजमान करे यथा

ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणेस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुत: सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा।। तथा :-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज:।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ: संसारे त्यज निद्रां जगत्पते।।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।।
साधव: संप्रतीक्षन्ते त्वद्दर्शन महोत्सवा।।
त्वयि सुप्ते जगत् सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत्।

इससे उठाकर रथ पर पूर्व लिखित मन्त्र से विराजमान करके लावे-

पीछे जयध्वनि वेदध्वनि गीतादि से प्रासाद की प्रदक्षिणा से लाकर यज्ञ मण्डप के पश्चिम द्वार पर--

"ॐ आकृष्णेन रजसा०" इस मंत्र से प्रवेश कराके-

मध्यवेदी के पश्चिम भाग स्थित पीठ पर देवता को पूर्वाभिमुख-विराजमान करके मधुपर्क करें। (फिर पूजन करे--)

ॐ पुरुष एवेदं० मन्त्र से पाद्य अर्पण करे।

ॐ एतावानस्य०, अर्घ्यं प्रदान करे। फिर-

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण:।

प्रप्र दातारं तारिष ऽउर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

इससे मधुपर्क देवे

पश्चात् मण्डप की मध्यवेदी पर सर्वतोभद्र पर धाण्यपुंज पर सुन्दर शय्या बिछाकर उस पर स्वच्छ गद्दी तकिये लगाकर अक्षतो से स्वस्तिक मांडकर प्रागग्र कुशा रखकर उपर पुष्प बिछाकर सुगन्धित जल के छींटि देकर धूप लेकर पुष्पमालाओं से सुशोभित शय्या को कर दें।

शय्या के पूर्व में ॐ विष्णवे नमः (१) दक्षिणे ॐ मधुसूदनाय नमः (२) पश्चिमेॐत्रिविक्रमाय नमः (३) उत्तरे ॐ वामनाय नमः (४) आग्नेय्याम् श्रीधराय नमः (१) निर्ऋतौ ॐ हृषीकेशाय नमः (२) वायव्ये ॐ पद्मनाभाय नमः (३) एशान्याम् ॐ दामोदराय नमः (४)

इन मन्त्रों से पूंजा करे। परन्तु शिव प्रतिष्ठा मे--

पूर्वं ॐ सर्वाय नमः। दक्षिणे ॐ पशुपतये नमः। पश्चिमेः उग्राय नमः। उत्तरे ॐ रुद्राय नमः। आग्नेय्याम् ॐ भवाय नमः। निर्ऋतौ ॐ ईश्वराय नमः। वायव्याम् ॐ महादेवाय नमः। ऐशान्याम् ॐ भीमाय नमः ।।

से पूजाकर शय्या पर मूल मंत्र से--

शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।

इस मंत्र से देव को तिल और सरसों के चूर्ण में लेपन करें-- फिर गन्ध पुष्पादि से देव को अर्चना करके--

ॐ बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहा मित्रांऽऽर

अपबाधमानः प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम्।

इस मंत्र से सफेद वस्त्र का परिधान भट करे। फिर चित्र विचित्र रेशमी या सूती वस्त्रों से देव का आच्छादन करके रेशमी वस्त्र फिर भेंट करे और चार दीपक प्रज्वलित करे।

फिर आगे मंत्र बोले--

ॐ सर्व सत्वमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।
त्वामेवालंकरिष्यामि त्वं वंद्यो भवते नमः ।।

पश्चात् चार कलशों से फिर देव को स्नान करावे।

शय्याधिवासन

पश्चात् मूलमंत्र वा 'ॐ नमः शंभवाय०' इस मंत्र से भगवान् को शय्या पर लिटा कर बोले--

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽ एकः॥

इस मन्त्र से भगवान् को सुन्दर वस्त्र से ओढ़ा देवे और मस्तक की तरफ सर्वत्र सहिरण्य निद्रा कलश रख दे।

तब मन्त्र बोले - **ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वꣳ सुरभा ऽ उ लोके। तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥अ० १२।३५**

इस मन्त्र से स्थापित करके - **ॐ आपो ऽ अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वꣳ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि। दीक्षातपसोः स्तनूरसि तान्त्वा शिवाꣳ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन॥** (इससे प्रतिष्ठपना करें) फिर "**आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरꣳ शुभिः। भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे॥** इस मन्त्र से अभ्यंजन करे। फिर "**या ते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी तया नस्तन्वा०।**"

पश्चात् **ॐ विश्वतश्चक्षु०** इत्यादि मंत्र से देव के पैर, नाभि, वक्ष, शिर पर आलभन करे याने हाथ रखे।

पीछे उत्थापन किये बाद चार दीपक प्रज्वलित कर दे। देवता के सम्मुख पादुकायें, पार्श्व में शाँतिकुंभ दक्षिण पार्श्व मे छत्र, व्यंजन चंवर

तथा आसन दर्पण घण्टा। भक्ष्य भोज्य जल पात्रादि रख देवे।

पीछे दर्भ तिल या भस्म रक्षा के लिये प्राकार त्रय करके इन्द्रादि लोकपालों को पूर्ववत् बलि देवे और लघु होम कर देवें।

ॐ पराय विष्णवात्मने स्वाहा। इदं विष्णवे ॥

शिव प्रतिष्ठा मे ''ॐ पराय शिवात्मने स्वाहा।। इदं शिवाय।

इससे १०८ आहुति देकर प्रतिमाओ पर न्यास करें--

त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तं उत्थिते चोत्थितं जगत्। बोले।

पश्चात् जय ध्वनि और सुवासिनीगण के मंगल गीतों से प्रासाद के दक्षिण से लाकर यज्ञ मण्डप के पश्चिम में विराजमान करके-- सांगोपांग पूजा करे। वहां भी चार दीपक प्रदीप्त करे।

कई विद्वान् न्यास पहले करते है पर हमने बाद में लिखे है जैसी आचार्य की आज्ञा हो, करें।

नूतनमूर्तीनां प्रतिष्ठापनम्

अथ प्राण प्रतिष्ठा

यदि आचार्य भी अपनी भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा पहले कर ले तो उत्तम है। एतदर्थ मेरी बनाई नित्य कर्म पाठ संग्रह में देखें। मंगवाने का पता **श्री सरस्वती प्रकाशन** सैन्ट्रल बैक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

सुवर्ण रौप्य ताम्रादि धातु मूर्तीनाँ पाषाणादि मूर्तीनां पार्थिव मूर्तीनां वा प्राणप्रतिष्ठां कारयेत्।

आचमनं प्राणायामं कृत्वा संकल्पः कार्यः।

आचमन प्राणायाम करके संकल्प करे। यथा

अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषण विशिष्टाया शुभ पुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ मम सकलकुटुम्बानां क्षैमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध यर्थं ममात्नः अक्षय्य सुखप्राप्त्यर्थ पितृतो मातृतश्च दशपूर्वान् दशापरान् एकविंशतिपुरुशानुद्धर्तु धर्मार्थ काम मोक्ष-चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थ परमपद प्राप्तये आसाममुकमूर्तीनाँ टङ्कघनादि दोष परिहार्थ मृत्तिका संघट्टनादि दोषपरिहारार्थ वा अग्न्युत्तारण पूर्वक देवकलासान्निध्यार्थ प्राणाप्रतिष्ठां करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके नूतन मूर्तियों का ताम्रपात्र मे यथोचि स्थान पर स्थापित करके पुष्प से घृत लगाकर आगे लिखे मन्त्रों मे जलधा देवे। यथा--

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्य्ँ शिवो भव॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्य्ँ शिवो भव-॥२॥ उपज्मन्नुपवेतसे ऽवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमंन्नो यज्ञं पावकवर्णँ शिवं कृधि॥३॥ अपामिदं न्ययन्ँ समुद्रस्य निवेशनम्॥ अन्यांस्ते अस्मतपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यँ शिवो भव॥४॥ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥५॥ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवांरऽइहावह। उप यज्ञँ हविश्च नः॥ पावकया यश्चितयन्त्यां कृपा क्षोमन् रूरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥७॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यंᳫं शिवो भव॥८॥ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड्वनसदे वेटस्वर्विदे वेट्॥९॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाᳫं संवत्सरीणमुप भागमासते। आहुतादो हविषो यज्ञेअस्मिनत्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥१०॥ ये देवा देवेष्वधि देवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पवते घाम किञ्चन न ते दिवों न पृथिव्या अधि स्नुषु॥११॥ प्राणदा आपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यᳫं शिवो भव॥१२॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा

पहले विनियोग करें--

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः। ऋषयः। ऋग्यजुः सामाथर्वाणि छन्दांसि। क्रियामयवपुः। प्राणाख्या देवता। आँ बीजम्। ह्री शक्तिः। क्रौं कीलकम अस्याँ नूतनमूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

अब आगे मन्त्र बोलते हुए पुष्प से मूर्ति के अंगो को स्पर्श करता जावे।

ॐ आ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ हं सः सोऽहम् आसाँ नूतनमूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः तिष्ठन्तु। पुनः।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ हं सः सोऽहम् आसाँ

नूतनमूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः तिष्ठन्तु। पुनः।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ हं सः सोऽहम् आसाँ नूतनमूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः- श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहै वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

प्रतिमा के हृदय पर अंगुष्ठ लगाकर बोले:-

अस्यै प्राणाः प्रठिष्ठान्तु अस्य प्राणाश्चरंतु चं।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

अब प्रतिष्ठा के निम्न मंत्र बोले--

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमंदधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामों३ म्प्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठित भवति॥

"सुप्रतिष्ठितो भव" ऐसा बोलकर देवता के सव्य कर्ण में गायत्री जपे॥

अब नूतन मूर्ति की पंचोपचार पूजा करके संस्कार सिद्धि के लिये पन्द्रह बार--ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करके
ॐ बोलकर 'मूर्तीनां जातकर्मादि पंचदश संस्कारान् सपादये" इस प्रकार बोल देवे।

फिर प्रार्थना निम्न श्लोकों से करे।

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः।

प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा माँ बालवत्परिपालय॥
धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थ स्थिरोभव शुभाय नः।
सान्निध्यं तु सदा देव स्वार्चायाँ परिकल्पय॥
भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम्।
येन रूपेण भगवन त्वया व्याप्तं चराचरम्॥
ज्ञानोऽज्ञानतो वापि यावद्विधिरनुष्ठितः।
स सर्वस्त्व प्रसादेन सामग्री भवतान्मम्॥

अब जल हाथ मे लेकर बोले--

अनेन अमुक नूतन मूर्तौ मुर्तिषु वा प्राणप्रतिष्ठा कर्मकृतेन अमुकदेवता प्रीयन्ताँ न मम॥ : तत्सत ब्रह्माऽर्पणमस्तु॥

॥ इति नूतनमूर्ति प्राणप्रतिष्ठा ॥

पश्चात् षोडशोपचार से पूजा करे तथा शिव प्रतिमा हो तो रुद्राभिषेक करे॥ सरल टीका में रूद्री अष्टाध्यायी भाषा टीका पढ़े मंगवाने का पताः **श्री सरस्वती प्रकाशन**, सैन्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

पूजा में ज्ञातव्य बातें

दीपक दक्षिण भाग में तथा धूप वामभाग में रखे

पश्चात् **''देवो भूत्वा देवं यजेत्''** वाक्यानुसार अपने शरीर पर न्यास करे। पीछे उन्हीं मन्त्रों से देवप्रतिमाओं पर पुष्प द्वारा अङ्गन्यासादि करे। यथा--

षङ्गन्यासा

आचम्य प्राणानायम्य संकल्पः-

अद्य पूर्वोच्चारितायाम् एवं गुण विशेषण-विशिष्टायाँ शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्य अमुककर्माङ्गत्वेन षडङ्गन्यासानहं करिष्ये।

मनोजूतिरिति मंत्रस्य बृहस्पतिऋर्षिः बृहस्पतिर्देवता वृहतीछन्दः हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ म्प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।।

ॐ अबोध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिर ऋषिः अग्निर्देवता, त्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायति मुषासम। यह्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छः।। ॐ शिरसे स्वाहा।

ॐ मूर्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाजऋषि :, अग्निर्देवता, त्रिष्टुप्छन्दः, शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कवि७ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। ॐ शिखायै वषट्।।

ॐ मर्माणि ते इति मन्त्रस्य अप्रतिरथर्ऋषिः। मर्माणि देवता विराट् छन्दः। कवचन्यासे जपे। विनियोगः।

ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु। ॐ कवचाय हुम।

ॐ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भगवान ऋषिः। स एव देवता त्रिष्टुपछन्द नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्याँ धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।। ॐ नेत्रक्षयाय वौषट्।

ॐ मानस्तोके तनये मॉ न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।। अस्त्राय फट्। अनेन यथा शक्त्याऽमुककर्माङ्गत्वे कृतेन षडङ्गन्यासाख्येन कर्मणा श्री भगवान प्रीयन्तां न मम।।

अथ पूर्व स्वस्य पश्चाद मूर्तिषु

षोडशोङ्गन्यासाः

आचम्य प्राणानायम्य संकल्पः। अद्य पूर्वोच्चारितगुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्रात्यर्थ अमुक कर्मांगत्वेन मूर्तिषु

षोडशांगन्यासान् करिष्ये।

ॐ सहस्त्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुष सूक्तस्य नारायणः पुरुषः ऋषिः। जगद्बीजं पुरुषो देवता आद्यानां पंचानामनुष्टुप् अंत्यायास्त्रिष्टुप्। न्यासपुजनाभिषेकेषु विनियोगः ।।

ॐ सहस्त्रशीर्षा ० १।। वामकरे। ॐ पुरुष एवेद० २।। इति दक्षिण करे। ॐ एतावानस्य० ३।। वामपदे।। ॐ त्रिपादूर्ध्व० ४।। अति दक्षिणपादे।। ॐ ततो विराड्० ५।। अति वामजानौ। ॐ तस्माद्यज्ञात सर्व० ६।। इति दक्षिण जानौ।। ॐ तस्माद्यज्ञात सर्वंहुतः ऋचः सामानि० ७।। इति वामकट्यां।। ॐ तस्मादश्वा० ८।। इति दक्षिणकटयाम्।। ॐ तं यज्ञं बर्हिषि० ९।। इति नाभौ। ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः १०।। इति हृदये।। ब्राह्मणोऽस्य० ११।। इति मुखं।। ॐ चंद्रमा मनसो जात० १२।। इति दक्षिण कुक्षौ।। ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष० १३।। इति कण्ठे।। ॐ यत्पुरुषेण १४।। इति वक्त्रे।। ॐ सप्ता स्यासन्० १५।। इति अक्ष्णोः।। ॐ यज्ञेन यज्ञ० ।१६।। इति मूर्धनि।।

अनेन षोडशांगन्यासाख्येनकर्मणा कृतेन अमुक देवः प्रीयताम्।। मम।। इतिषोडशांगन्यासः ।।

पुरुषसूक्त न्यासान्ते

मूर्तिषु

ॐ अंपादयोः। ॐ उंहृदये। ॐ मं ललाटे। (प्रणवन्यास) ॐ भूः पादयोः। ॐ भुव हृदये। ॐ स्वः ललाटे (व्याहृतिन्यास) अं तालुके। आं मुखे। इंदक्षिणनेत्रे। ईं वाममेत्रे। उंदक्षिण कर्णौं। ऊँ वामकर्णौं। ऋं दक्षिणगंडे। ॠं वामगंडे लृं दक्षिण नासापुटे। ॡ वाम नासापुटे। एंऊर्ध्वोष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ॐ ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ अधरदन्तपंक्तौ। अं ललाटे। अः जिह्वायाम्। यं त्वचि। रं चक्षुषीः। लं नासिकायां। वं दशनेषु। शं श्रोत्रयोः। षं उदरे। सं कटौ। हं हृदये। क्षं नाभ्याम् लं लिंगे। पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ। तं थं दं धं नं वामबाहौ। टं ठं डं ढं णं दक्षिण जंघायां। चं छं जं झं ञं वामजंघायाम्। कं खं गं घं ङं सर्वांगुलिषु। (इति मातृकान्यासः)

ॐ सूर्यचन्द्राभ्यां नमः नेत्रयोः। भौमाय नमो हृदये। बुधाय नमः स्कधे। बृहस्पतये नमः जिह्वायाम्। शुक्राय नमः लिंगे। शनैश्चराय नमः ललाटे।राहवे नमः पादयोः। केतवे नमः केशेषु॥

(इसी प्रकार विद्यालन्यास, वैराजन्यास, देवयोनिन्यास आदि अनेक हैं- पर मूर्तिन्यास तथा आयुर्न्यास आवश्यक है वह लिख रहे हैं-

विष्णु प्रतिष्ठायाम्

मत्स्याय नमो'मूर्घ्नि। कूर्माय नमः पादयोः। नृसिंहाय नमो ललाटे। वराहाय नमो जंघयोः। वामनाय नमो मुखे। परशरामाय नमो हृदि। रामाय नमो बाहुषु। कृष्णाय नमः नाभ्याम्। बुद्धाय नमो बुद्धौ। कल्किने नमो जान्वोः। केशवाय नमः शिरसिं। नारायणाय नमोः मुखे। माधवाय नमों ग्रीवायाम्। गोविंदाय नमो बाव्होः। विष्णवे नमो हृदये। मधुसूदनाय नमः षृष्ठे। त्रिविक्रमाय नमः कटयाम्। वामनाय नमः जठरे। श्रीधरहृषीकेशाभ्यां नमो जंघयोः। पद्मनाभाय नमो गुल्फयोः। दामोदराय नमः पादयोः। इति मूर्तिन्यासः॥ विष्णु तिष्ठायां विशेषः-

ॐ धर्माय० मूर्घ्नि। ज्ञानाय० हृदये। वैराग्याय० गुह्ये। ऐश्वर्याय० पादयोः। खड्गाय० शिरसि। शाङ्गार्य० मस्तके। मरुलाय० दक्षिणभुजे। हलाय० वामभुजे। चक्राय० नाव्याम्। जठरे, पृष्ठे च। शखाय नमः लिंगे। वृष्णे च। गदायै० जंघयोः जान्वोश्च। पद्माय० गुल्फयोः पादयोः।

शिव प्रतिष्ठायाम्

वज्राय० शिरसि। दण्डाय० मस्तके। खडगाय० दक्षिणभुजे। पाशाय० वामभुजे। ध्वजाय०नाभ्याम्। अकुशाय० लिंगे वृषणे च। त्रिशूलाय० जंघयोर्जान्वोः। पद्माय० गुल्फपादयोः।

सूर्यस्त तु शिववत्

दुर्गाया:-ॐ त्रिशूलाय नमः शिरसि। खडगाय० मस्तके। चक्राय० दक्षिणभुजे। बाणाय वामभुजे। ॐ शक्तयै नाभौ। खेटकाय० नमः गुह्ये। चापाय० जंघयोः। पाशय० जानुनो। अंकुशाय० गुल्फयोः। परशवं नमः पादयोः।

गणेशस्य:-बीजपूराय० शि [illegible]। गदायै मस्तके। धनुषाय वामभुजे। त्रिशूलाय० दक्षिणभुजे। चक्राय० नाभ्याम्। कमलाय० जठरे। पाशाय पृष्ठे। उत्पालाय० लिंगे वृष्णे च। वाणाय जंघयोः अंकुशाय० जानुनोः। विशाणाय० गुल्फयोः। रत्नकलाय० पादयोः।

इति गणेस्य आयुधन्यासः।

देवी प्रतिष्ठा में न्यास

पहले श्रीसूक्त के (१६) सोलह मंत्रों से अपने शरीर में न्यास करे। इसी प्रकार भगवती की मूर्ति से पुष्प लगाकर मूर्ति में भी इन्हीं मन्त्रों से सब अङ्गो का ध्यान से न्यास करना चाहिये।

ॐ हिरण्यवर्णा हरणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह॥१॥ शिरसि॥

ॐ तांम ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप गामिनीम्। यस्यां हिरण्य विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ नेत्रयोंः॥

ॐ अश्वपूर्णा (पूर्वा) रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। क..यो:।।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम्।।४।। घ्राणयो:।।

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनीं (पद्मनेमीं) शरणमहं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।। मुखे।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी:।।६।। ग्रीवायाम्।।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।। प्रादुर्भूतोस्मिन् राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।। करयो:।।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठालक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिम समृद्धिं च सर्वान्निर्णुद में गृहात्।।८।। हृदि।।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। नाभो।।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रुपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यश।। गुह्ये।।१०।।

ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव (संभ्रम) कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। गुदे।।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस में गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥ उर्वोः ॥

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्राँ हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ जानुनोः ॥

ॐ आर्द्रां य करिणीं यष्टी सुवर्णां हेमामालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ जंघयोः ॥

ॐ ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गांवो दास्याऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ चरणयोः ॥

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ सर्वांगे ॥

ततः कलशोपरि स्वर्णमयी श्रीदुर्गा प्रतिमां अग्न्युत्ता-

रणपूर्वक सन्निधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य पुरुषसूक्ततेन श्रीसूक्तेन पुराणोक्त मार्गेणं वा षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् ।।

शिवप्रतिमाप्रतिष्ठायाम्

षडंगन्यास

ॐ मनोजुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ म्प्रतिष्ठ। ॐ हृदयाय नमः।

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धैनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ।। ॐ शिरसे स्वाहा ।।

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथित्वा वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कवि७ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।। ॐ शिखायै वषट् ।।

ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु। ॐ कवचायहुम् ।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ।।

ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा ना गोषु मानो

अश्वेषुः रीरिषः मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥६॥ ॐ अस्त्राय फट् ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्वय उतोऽत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥ वामकरे ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥ दक्षिणकरे ॥

ॐ यमिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिᳪ सीः पुरुषं जगत् ॥३॥ वामपादे।

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मᳪ सुमना ऽअसत् ॥४॥ दक्षिणपादे ॥

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परा सुव।५। वामजानौं ॥

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनᳪ रुद्रा ऽ अमितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाᳪ हेड ईमहे ॥६॥ दक्षिणजानौ।

ॐ असौ यौ वसर्पति नीलग्रीवो विलोहितऽ। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नु दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ वाम कट्याम ॥

ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये

अस्य सत्वानोऽहं तेभ्यो ऽकरंनमः ॥८॥ दक्षिणकट्याम्।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योंर्ज्याम। याश्च ते हस्तऽ इषवः परा तो भगवो वप॥९॥ नाभौ॥

ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवांर ऽउत अनेशन्नस्य यऽइषवआभुरस्य निषगधिः॥१०॥ हृदये॥

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥११। वामकुक्षौ॥

ॐ परि ते धंवनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः॥ अथो य ऽइषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥ दक्षिणकुक्षौ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व्ँ सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥ कण्ठे॥

ॐ नमस्ते आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥ मुखे॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्भकं मानः उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥ अक्ष्णो॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोष मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा ना वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥१६॥ मूर्ध्नि॥

अथ विशेष अंगन्यासाः

शिवस्य पंचाक्षरी मंत्रान्यासः।

ॐ नमोः हृदये। नं नमः शिरसि।। मं नमः शिखायै वषट्।। शिं नमः कवचाय हुम्। वां नमो नेत्रत्रयाय वौषट्। यं नमः अस्त्राय फट्।।

सूर्यस्य अंगन्यासः।

ॐ सत्याय नमो घृणाये सूर्याय दिव्याय ब्रह्मणे शिरसे स्वाहा।। ॐ नमः सूर्यायादित्याय विष्णवे शिखायै वषट्। ॐ नमो घृणये सुर्यायादित्याय रुद्राय कवचाय हुम्। ॐ नमो घृणये सुर्यार्यादित्याय अग्नये नेत्रत्रयाय वषट्। ॐ नमो घृणये सुर्यायादित्याय सर्वाङ्गें अस्त्राय फट्।

देव्या अंगन्यास

ॐ ह्रां दुर्गायै हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं दुर्गायै शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रुं दुर्गायै शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं दुर्गायै कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं दुर्गायै नेत्रत्रयाय वोषट्। ॐ ह्रः दुर्गायै अस्त्राय फट्।।

गणपते

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लों गं षड्बीजस्यागां हृदयाय नमः। ॐ षड्बीजस्य गीं शिरसे स्वाहा। ॐ षड्बीजस्य गूं शिखायै वषट्। ॐ षड्बीजस्य गैं कवचाय हुम्।। ॐ षड्बीजस्य गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ षड्बीजस्य गः अस्त्राय फट्।।

हनुमन्नयासः

ॐ हं हनुमते नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐवं वायुपुत्राय तर्जनीभ्याँ नमः। ॐ अं अंजनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रूं रुद्रमूर्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। ॐ सं सीताशोकनिवारणाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

अथवा

ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्याँ नमः। ॐ ह्रं मध्यमाभ्या नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्याँ नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ अंजनीसूनवे हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुसुतात्मने शिखायै वषट्। ॐ वज्रदेहायकवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वोषट। ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय अस्त्राय फट। रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमान प्रचोदयात् ॐ हुं फट्।।

ध्यानम्

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

हनुमत्प्रतिष्ठा

संकल्प-देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं मम समस्त ताप पाप क्षय पूर्वकं ऐश्वर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थ

श्रीरामभक्ति प्रासर्थञ्च अस्यां हनुमन्मूर्तो देवत्व सं सिद्धये सप्रासाद वास्तु-सनवग्रहमख पूर्वकं हनुमत् प्रतिष्ठां करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके पूजनवहवनादि करके जलाधिवास, महास्नानादि, प्राण प्रतिष्ठा को करे। प्राण प्रतिष्ठा में पहले विनियोग करके प्राण प्रतिष्ठा करे। प्राण प्रतिष्ठा पहले आ चुकी है वैसे ही करे। लाल वस्त्र सिन्दूर का चौला विशेष।

हनुमते नमः अंजनीसूनवे नमः। वायुपुत्राय नमः। महाबलाय नमः। रामेष्टाय नमः। फाल्गुनसखाय नमः। पिंगाक्षाय नमः। अमितविक्रमाय नमः। उदधि क्रमणाय नमः। सीता शोक विनाशाय नमः। लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः दशग्रीव दर्प हन्त्रे नमः।

इन द्वादश नामों से षोडशोपचार पूजा करके प्रणाम करके आगे के मन्त्रों से क्षमा प्रार्थना करे--

हनुमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रौ महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगाक्षोऽमित विक्रमः ।।१।।
उदधिक्रमणश्चैव सीता शोक विनाशकः।
लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहाः ।।
स्वागत देवदेवेश मद्भग्यात् त्वमिहा तः।
सान्निध्यं सर्वदा देव दनुमन् परिकल्पयः ।।

बौधायनोक्त राधाकृष्णप्रतिष्ठा

सबसे प्रथम संकल्प-मम दीर्घायुर्विपुल पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्न सन्तति वृद्धि-कीर्तिलाभ-शत्रुपराजय-सर्वपाप निरसन सकल सुख-धर्मार्थ मोक्ष-कामप्राप्ति द्वारा श्री राधाकृष्ण प्रीत्यर्थ सनवग्रहमख-सप्रासाद राधाकृष्णयो: स्थिर प्रतिष्ठां (चलप्रतिष्ठां) वा करिष्ये।

फिर प्रतिष्ठा पद्धति से संपूर्ण पूजन जलाधिवास, देव स्नपनादि सब काम करके भगवत्प्राणप्रतिष्ठा करे। उसमे "राधाकृष्णयो: प्राण प्रतिष्ठापने विनियोग:। बोलकर पूर्व मुद्रित प्रतिष्ठा करे।"

श्री कृष्ण के मस्तक पर हाथ रखकर गायत्री जपे। वह गायत्री ये है--

ॐ देवकीनन्दाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो: कृष्ण: प्रचोदयात्। पश्चात्-

अत्तसीपुष्पसंकाशं शंख चक्र गदाधरम।
संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम्॥

पश्चात् पुरुष सूक्त से देव को अभिमन्त्रित करके बोले--

राधाजी के मस्तक पर हाथ धर के राधा गायत्री बोले--

ॐ समुद्धृतायै विद्महे, विष्णुनैकेन धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्॥

पश्चात् आवाहन आसन, पाद्य, अर्घ्य, मधुंपर्क आचमन,

पंचामृतस्नान, शुद्धस्नान, वस्त्र, उपवीत, उत्तरीय, अलकार, गंध, पुष्पमालाओं से:-

नाममन्त्र से पूजा करके अंगपूजा करे। यथा--

ॐ कृष्णाय नमः पादो पूजयामि। ॐ राधावल्लभाय नमः गुल्फौ पू०। ॐ केशवाय० जानुनी०। ॐ पद्मनाभाय० नाभिं०। ॐ परमात्मने० हृदयम्॥ ॐ कण्ठाय० कण्ठम्०। ॐ सर्वास्त्रधारिणेसे बाहू०। ॐ यद्भवाय० मुखम्०। ॐ वाचस्पतये० उरू०। ॐ विश्वरूपाय० जंघे०। ॐ माधवाय कटिम्०। ॐ विश्वमूर्तये० मेढ्रम्। ॐ विश्वेशाय० जिह्वाम०। ॐ दामोदराय० दन्तान्०। ॐ गोपीनाथाय० ललाटम्। ॐज्ञानगम्याय० शिरः०। ॐ सर्वात्मने सर्वागं पूजयामि।

पश्चात् धूप, दीप नैवेद्य (मक्खन मिश्री) तांबूल, दक्षिणा

प्रार्थना

स्वागतं देव देवेश मद्भाग्यात् त्वमिहागतः।
प्राकृत्तं त्वं तु मां दृष्ट्वा बालावत् परिपालय॥१॥
धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थ सर्वेषां च शुभासिनः।
सान्निध्यं तु सदा कृष्ण स्वार्चायां परिकल्पय॥२॥
यावच्चन्द्रावनीसूर्यास्तिष्ठन्त्य प्रति घातिनः।
तावद्दयस्व देवेश स्वयं भक्त्याऽनुकम्पया॥३॥
भगवन् सर्व देवेश त्वं पिता सर्व देहिनाम्।

येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम्।।४।।
तेन रूपेण देवेश स्यार्चायां सन्निधौ भव।

फिर तर्पण

ॐ केशवं तर्पयामि। ॐ माधव तर्प०। ॐ गोविन्दं तर्प०। ॐ नारायणं तर्प०। ॐ विष्णुं तर्प०। ॐ मधुसूदनं तर्प०। ॐ त्रिविक्रम तर्प०। ॐ वामनं तर्प०। विष्णु तर्प०। ॐ श्रीधरं तर्प०। ॐ हृषीकेशं तर्प०। ॐ पद्मनाभं तर्प०। ॐ दामोदरं तर्प। ॐ संकर्षणं तर्पयामि।

पीछे पूर्णाहुति आरती आदि तथा प्रसाद वितरण

ईश्वरार्पणस्तु

प्रासादे महाध्वजारोपणम्

ध्वजदण्ड १४ वा ९ हाथ का होवे।

उसका अधिवास भी देवों के साथ-साथ करले। फिर गन्धादि से पूजकर प्रासाद के समीप लाकर मन्त्रों से उस पर न्यास करे।

सूर्य-कोटि-सहस्त्राभं प्रलयाम्बुदनिस्वनम्।
प्रदीप्तदशनप्राणं प्रकाशं मुखकन्दरम्।।
त्र्यक्षं तडिल्लता जिह्वं प्रदीप्त श्मश्रुमूर्धजम्।
सर्वोंपवीपं-शुलासि-शक्तिमुद्गर धारिणम्।।
चतुर्हस्तं चतुर्वक्त्रं सूर्य चन्द्रार्ध शेखरम्।
देवदानव दैत्यानां दर्पितानाँ विनाशनम्।।

अब वाहन का ध्यान करके "शांतिरस्तु" आदि पढ़े--

विशेष

विष्णु की ध्वजा मे गरुड़। शिव ध्वजा मे वृषभ। ब्रह्मध्वजा में हंस।सूर्य के अश्वरथ। दुर्गा के सिंह। गौरी के गोधा। गणेश के मूषक। भैरव के कुक्कुर। सरस्वती की ध्वजा में हंस हो।

अब उस ध्वज को प्रासाद के उपर नैर्ऋत्य वाव्यय वा ईशान कोण में लगाकर प्रार्थना करे यथा--

शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु स्थानस्यास्य शुभं भव्रेत्।
प्राणिनः सुखिनः सन्तु राजा च विजयी भवेत्॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च ता वदत्र स्थिरो भव।
दुरित यत् समस्तानां सत्क्रियायै धुनोतु सः॥
प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं माभूज्जगति सर्वदा।
त्वत्प्रसादाच्च तत्सर्व शुभं भवतु, वो नमः॥

इति ध्वजारोपणम्

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥

अथ विष्णुयाग विधानम्

(१)विष्णुयाग में १६००० (सोलह हजार) आहुति होती हैं।

(२)महाविष्णुयाग में १६०००० (एक लाख साठ हजार) आहुति होती है।

(३)अतिविष्णुयाग में ३२००००(तीन लाख बीस हजार) आहुति होती है। यह मत अनन्तदेव कृत विष्णुयाग पद्धति का है। मिलने का पता श्री सरस्वती प्रकाशन, सैन्ट्रल बैक के पीछे, चूडी बाजार अजमेर

प्रधान हवन

(१)शुक्ल यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के प्रारम्भ के १६ मन्त्रों से (पुरुषसूक्त) होता है। यह ४, ७, ९ दिन में किया जा सकता है।

(२)प्रथम दिन याने आहुति प्रारम्भ दिन स्थापित देवताओं के वेदोक्त मन्त्र अथवा नाम मन्त्र से आहुति देनी चाहिये।

(३)पीछे अगन्यासादि करके पुरुषसुक्त से आहुति देनी चाहिये।

(४)प्रतिदिन प्रधानाहवनारंभ के पूर्व प्रत्येक मण्डलों के (स्थापित देवताओं की) एक एक मुख्य मन्त्र से आहुति देकर प्रधान हवनारंभ करे।

(५)ध्यान रहे कि प्रधान हवनारंभ के पूर्व तथा पश्चात् अंगन्याषादि करना चाहिये।

(६)प्रधान हवन की संख्या पूर्ण होने पर विष्णु सहस्रनाम की आहुतिये देकर स्थापित देवताओं की समयानुसार मन्त्रों से अथवा नाममन्त्रों से आहुति देनी चाहिये।

शेष विधि प्रतिष्ठापद्धत्यनुसार प्रतिष्ठा कर्म को छोड़कर सम्पूर्ण करना चाहिए।

१. प्रथम दिन स्थापित देवताओं की आहुति देनी होगी।

२. मध्य के दिनों में भी स्थापित देवों का साधारण होम आवश्यक है।

३. अन्तिम दिन तो सारा होम करना ही चाहिये। कई आचार्य केवल अन्तिम दिन ही सब देवों का होम कराते हैं हमारी सम्मति से निमन्त्रित देवताओं को हवन द्वारा केवल एक दिन का भोजन कराना अनुचित है। यज्ञ में बैठे हुए सभी ब्राह्मण जब प्रतिदिन भोजन करते है तो देवताओं का प्रतिदिन भेजन (हवनादि) आवश्यक है। यह मेरी क्षुद्र बुद्धि की कल्पना है। कर्मठ शिरोमणि इस से बुरा न मानें।

अङ्गन्यास। (पूरे मंत्र आगे पूजन में लिखे हैं।)

ॐ सहस्त्रशीर्षा०-वामकरे। ॐ पुरुष एवेद्ꣳ सर्व दक्षिणकरे। ॐ एतावानस्य महिमा० वामपादे। ॐ त्रिपादूर्ध्व० दक्षिणपादे। ॐ ततो विराड०-वामजानुनि। ॐ तमाद्यात्सर्वहुत० दक्षिणानुनि। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऋच:० वामकट्याम। ॐ तस्मादश्वा० दक्षिणकटयाम्। ॐ तं यज्ञम्०-नाभौ। ॐ यत्पुरुषं व्यदधु० हृदि:०। ॐ ब्राह्मणोस्य०-कण्ठ। ॐ चन्द्रमा मनसो०-वामबाहौ। ॐ नाभ्यां आसी० दक्षिणबाहौ। ॐ यत्पुरुषेण० मुखे। ॐ सप्तास्या०-अक्ष्णा:। ॐ यज्ञेन यज्ञमय जन्न० मूर्ध्नि।

पञ्चांङ्गन्यास

ॐ अद्भ्य० सम्भृत: हृदये। ॐ वेदाहमेतम० शिरसि। ॐ प्रजापतिश्च०-शिखायाम्। ॐ यो देवेभ्य आतपति०-कवचायहुम। ॐ रुचं ब्राह्मम्०-अस्त्राय फट्।

करन्यास

ॐ ब्राह्मणोऽस्य०-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रमा मनसो० तर्जनीभ्यां नमः। ॐ नाभ्या० मध्यमाभ्याँ नमः। ॐ यत्पुरुषेण० अनामिकाभ्यां। ॐ सप्तास्यासन्० कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ यज्ञेन० करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

सर्वतोभद्रमंडल पर प्रधान विष्णु पूजन

शालीग्राम और प्रतिष्ठा की हुई मूर्तियों में आवाहन नहीं करे। केवल पुष्प छोड़ा करें। पर नई मूर्ति पर तो होगा।

आवाहन-ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशांगुलम्।

आसन-ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्व। यद्भूतं यच्च भाव्यम् उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ आः सः॥

पाद्य-ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादास्यामृतं दिवि॥ पा. स.॥

अर्घ्य-ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि॥ अ. स.॥

आचमन-ॐ ततोविराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ आ. स.॥

स्नान ॐ तस्माद्यज्ञात सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वाय्वयानारण्या ग्राम्याश्च ये।। स्ना० स०।।

दुग्ध-ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। दुग्ध स्ना० स० पु० शु० स्नानम्।।

दधि-ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳ षि तारिषत।। दधि स्नान स० पु० शु० स्नान।।

घृत स्नान-ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसा वसापावान. पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। घृत स्नान स०। पु शुद्धोदक स्नानम्।

मधु स्नान-ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तवौषधि।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां २ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधु० स्नान स०। पु० शुद्धोदक स्नानम्।।

शर्करा-ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ

समाहितम्। अपा७ रसस्यं यो रसस्तं वो गुह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। श० स्ना० स०। पु० शु० स्नानम॥

पञ्चामृत स्नान- पञ्चनद्यः सस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ पंचा० स्ना० स०। पुनः शु० स्नानम्॥

शुद्धोदक स्नान-कावेरी नर्मदा वेणी तुंगभद्रा सरस्वती गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम। गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम॥ शु० स्ना० स०॥

वस्त्र-तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे; छन्दा७ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत। वस्त्रमुपवस्त्रं स०। आ०॥

यज्ञोपवीत-ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ य० स० आ० स०॥

मधुपर्क-दधि -मध्वाज्य संयुक्तं पात्रयुग्म - समन्वितम्। मधुपर्क गृहाण त्वं वरदो भव शोभन॥ म०स०आ०स०॥

गन्धं-ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जानमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥गं० स०॥

(अक्षत श्वेत तिल चढ़ावे किन्तु चावल नहीं चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमिमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानव्रो विप्रा नविष्ठया मती योंजान्विन्द्र ते हरिः। अ०स०॥

पुष्प-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्॥ समूढमस्य पा७ सूरे स्वाहा॥ पु०स०॥

पुष्पमाला-ॐ औषधी प्रतिमोदध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ पुष्पमाला० स०॥

तुलसीपत्र-ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखंङ्किमस्या सीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते॥१॥ तु० स०॥

तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम्। भवमोक्षप्रदः तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥२। तु० स०॥

ॐ विष्णोः कर्मांणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥३॥ तु०स०॥

बिल्वपत्र-तुलसी बिल्व निम्वैश्च जंबीरैरामलैः शुभैः। पञ्चबिल्वमिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वर॥ वि० स०॥

दूर्वा-विष्णवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा।

क्षीरसागर संभूते वंशवृद्धिकारी भव। दू० स० तथा दूर्वांकुरान् स०॥

शमीपत्र-शमी शमयते पापं शमी शत्रु विनाशिनी धारिण्यर्जुन बाणांना रामस्य प्रियवादिनी॥ श० स०।

आभूषण-ॐ रत्नकड़कणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च सुप्रसन्ने न मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भो:॥ आ० स०॥

अबीर-गुलाल-नानापरिमलैर्दव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम् अबीर नामकं चूर्ण गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥ अ० स०॥

सुगन्ध तैल-ॐ तैलानि च सुगन्धीनी द्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर॥ सु० तैल९ स०॥

धूप-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्य: कृत:। ऊरु तदस्ययद्वैश्य: पद्भया७ शूद्रो ऽ अजायत॥१॥

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम:। देवानामसि वह्नितम्७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥२॥ धूपमाघ्रापयामि॥

दीप-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो ऽ अजायत। श्रोत्र द्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निरजायत॥ दीपंदर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्य। (तुलसी छोड़कर मुद्रा दिखावे)

'प्राणाय स्वाहा'-कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठा मिलावे।१।
'अपानाय स्वाहा'-अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलावे।२।
'व्यानाय स्वाहा'-मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलावे।३।
'उदानाय स्वाहा'-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलावे।४।
'समानाय स्वाहा'-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका कनिष्ठा तथा अंगूठा मिलावे।।५।।

ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकांरऽअकल्पयन्।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः। सप्तास्यासन परिधयस्त्रिसप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नं पुरुषम्पशुम्।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्व कर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्र। वेदाहमेतं पुरुष महान्तमादित्वर्ण तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनि परिपश्चन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।। यो देवेभ्य ऽआतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय

ब्राह्मये। रूचं बाह्मं जनयन्तो देवा ऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यातम्। इष्णन्निषाणा मुंमइषाण सर्वलोकम्म इषाण॥

नैवेद्यं निवेदयामि॥

मध्येपानीय-एलोशीर लवङ्गादि कर्पूर परिवासितम्। प्राशनार्थ कृषं तोयं गृहाण परमेश्वर। म० पानीयं स०॥

ऋतुफल बीजपूराम्र पनस खजूरी कदली फलम्। नारिंकेलं दिव्यं गृहाणा परमेश्वर॥ ऋ०स०॥

आचमन-कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृत्तम्॥ आचम्यातां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः॥ आ०स०॥

अखण्ड ऋतुफल-फलेन फलितं सर्व त्रैलोक्यं सचरा चरम्। तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तुः मनोरथा॥ अ० ऋ० स०॥

ताम्बूल पूगीफल-ॐ यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञम तन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्म शरद्धविः॥ ता० स०॥

दक्षिणा पूजा फल समृद्धयर्थ दक्षिणा च तवाग्रतः। स्थापिता तेन मे प्रीभः पूर्णान् कुरू मनोरथान्॥ द० द्रव्य० स०॥

(आवरण पूजा करे तो)

पूजा में शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, आचमन यज्ञोपवती, आचमन अलंकार, माला, गन्ध कुमकुम, कज्जल, अक्षत, पुष्पमाला, तुलसी के बाद--

अंगपूजा, फिर आवरण पूजा करके

श्वेतचूर्ण, रक्तचूर्ण, सिन्दूर, धूप दीप नैवेद्य आचमनीय, दूर्वा जल, उत्तरापोशन, करोद्वर्तन, ताम्बूल, दक्षिणा, छत्र चामर, व्यंजन, दर्पण, पादुका, अर्पण करनी चाहिये। नाममात्र से "अमुकवस्तु समर्पयामि" बोलना चाहिये।

अथ अंग पूजा

हस्ते गंधपात्रं गृहीत्वा दक्षिणेन अर्चयेत्

सत्य परमब्रह्मणे नमः पादौ पूजयामि। संकर्षणाय नमः गुल्फौ पूज०। कालात्मने० जानुनो पूज०। विश्वरूपाय० जंघे। विश्वस्मै कटिं०। विष्णुरूपधृते० मेढ्रं०। पद्मनाभाय० नाभिं०। परमात्मने० हृदयं०। वैकुण्ठाय० कंठं०। सर्वास्त्रधारिणे० बाहू०। वाचस्पतये. मुखं०। हरये० जिह्वाम्०। दामोदराय० दन्तान्०। सहस्राक्षाय् नेत्रे। केशवाय० ललाटं। सर्वात्मने० शिरः पूजयामि। श्रीलक्ष्मीसहित नारायणाय नमः सर्वांगं पूजयामि।

इसे नहीं भी करते हैं तब पूर्वोक्त षोडषशोपचार पूजा ही पर्याप्त है।

अथावरण पूजा जो करना चाहें

प्रथमावरणम् (मध्ये) श्रीनारायणाय० (देवस्य पार्श्वे) सुवर्णवर्णायै दूकुलवसनायै विचित्राभरणभूषितायै पद्महस्ताये तन्मुखन्यस्त लोचनायै लक्षम्ये० (देवस्य दक्षिणपार्श्वे) दूर्वादलश्यामलायै विचित्राभरण भूषितायै तन्मुखन्यस्त लौचनायै धरायै० ।। इति ।।

अथ द्वितीयावरणम् (पूर्वादि चतुर्दिक्षु) कृद्धोल्काय० महोल्काय० विरोल्काय० द्युल्ककाय० (आग्नेयादिकोणेषु) सहस्त्रोल्काय० ।। इति ।।

अथ तृतीयावरणम् (पूर्वादिचतुर्दिक्षु) वासुदेवाय० संकर्षणाय० प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय (आग्नेयादिकोणेषु) मायायै० जयायै० कृत्यै० शान्त्यै० ।। इति ।।

अथ चतुर्थावरणम् (पूर्वादिचतुर्दिक्षु) द्वो द्वो कोणेषु चैकैकम्) केशवाय। नारायणाय। माधवाय। गोविन्दाय। विष्णवे मधुसूदनाय। त्रिविक्रमाय। वामनाय। श्रीधराय। हृषिकेशाय। पद्मनाभाय। दामोदराय ।। इति ।।

अथ पंचमावरणम् (पूर्वादिचतुर्दिक्षु) द्वौ द्वौ कोणेषु चैकैकम्) मत्स्याय। कूर्माय। वराहाय। नारसिंहाय। वामनाय। भार्गवाय। राघवाय। कृष्णाय। बुद्धाय। कल्किने। अनंताय। विश्वरूपा ।। इति ।।

अथ षष्ठावरणम् (पूर्वादिचतुर्दिक्षु) अनन्ताय। ब्रह्मणे।

वायवे। ईशानाय। (आग्नेयादिकोणेषु) वारूण्ये। गायत्र्यै। भारत्यै। गिरिजायै। (अग्रे) गरुड़ायै। (तत्पार्श्वे) सौपर्ण्ये इति॥

अथ सप्तमावरणम् (पूर्वाद्यष्टदिक्षु) यथा (पूर्वे) इंद्राय स्वर्गाधीशाय, सुराधिपतये, शचीसहिताय, वज्रहस्ताय, ऐरावतवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय सपरिग्रहाय, श्रीविष्णुपार्षदाय नमः (आग्नेय्याम) अग्नये तेजोधिपतये स्वाहा-सहिताय शक्तितोमर-हस्ताय, मेघवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय (दक्षिणे) यमाय धर्माधिपतये, श्यामलास हिताय, दंडहस्ताय, महिषवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाय (नैऋत्याम्) निर्ऋतये, रक्षोधिपतये, तामसीसहिताय, असिहस्ताय, पुष्पकवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय, (पश्चिमे) वरुणाय, जलाधिपतये, भागीरथीसहिताय पाशहस्ताय, मंकरवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय। (वायव्यां) वायवे, ज्ञानाधिपतये, भारतीसहिताय, गदाहस्ताय, मेघावाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय, (उत्तरे), सोमाय, नक्षत्रमण्डलाधिपतये, रोहिणीसहिताय, कुमुदहस्ताय, रथवाहनाय, सपुत्राय सपरि०॥ (ऐशान्यां ईशानाय विद्याधिपतये, पार्वतीसहिताय, त्रिशूलहस्ताय, वृषभवाहनाय, सपुत्राय, सपरि०। (नैर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये) शेषाय नागाधिपतये, वारुणी सहिताय, मूसलायुधाय, सवाहनाय, सपुत्राय सपरि०

(ईशेन्द्रयोर्मध्ये) ब्रह्मणे सत्यलोकाधिपतये सरस्वती सहिताय, अक्षमाला हस्ताय, हंसवाहनाय, सपुत्राय, सपरिवाराय, सपरिग्रहाय, श्रीविष्णूपार्षदाय नमो नमः। इति।।

अष्टमावरणम्-स्वस्थानेष्वभिमुखान पूजयेत् (प्रोक्षणादभिरितिवचनात्) मध्ये आवाहित देवाताभिमुखान् संपूज्य।। द्वारपालपूजां कुर्यात्। तद्यथा-

(पूर्वादिचतुर्दिक्षु) (द्वौ द्वौ, कोणेषु चैकैकम्) वज्र नाभाय। हरिश्वराय। गंगातनयाय। शंखनिधीश्वराय। जयाय। विजयाय। भद्राय। सुभद्राय। धात्रे। विधात्रे। अमृतेश्वराय। विरुपाक्षाय। इति द्वादशद्वारपालान् संपूज्य ततः आवरण देवताभ्योऽर्घ्यादि दशोपचारान् दद्यात् उपचारा यथा-

अर्घ्य पाद्यं त्वाचमनं साचामं मधुपर्ककम्।
स्नापनं वसनं चैव गन्धपुष्प विभूषणम्।।

इन दशोपचारों को सबों को पृथक-पृथक् देते यथा -

अंगाद्यावरण देवेभ्यः स्वाहान्तैः स्वास्वनामकैः।।
धूपदीपादिकं सर्व सर्वेभ्यो ब्रह्मणा सह।

इति आवरणपूजा

अष्टोत्तरशतनामपूजा

श्रीकृष्णाय नमः। (कमलानाथाय (सर्वत्र नमः बोलना चाहिये) वायसुदेवाय। सनातनाय। वायुदेवात्मजाय।

पुण्याय। लीलामानुष विग्रहाय। श्रीवत्सकौस्तुभधराय। यशोदावत्सशाय। हरये। चतुर्भुजाक्त शंख चक्रासिगदाय। शंखांबुजधराय ॥१०॥

देवकीनन्दाय। श्रीशाय। नंदगोपप्रियात्मजाय। यमुनावेगसंहारिणे। बलभद्रप्रियानुजाय। पूतनाजी-वितहाराय। शकटासुरभजनाय। नन्दब्रजजनानदिने। सच्चिदानन्दविग्रहाय। नवनीत नवाहारिणी ॥२०॥

मुचुकुन्दप्रसादकाय। षोडशस्त्रीसहस्त्रेशाय। त्रिभंगाय। मधुराकृतये। शुकवागमृताब्धीन्दवे। धेनुकाराय। गोवर्दिंपतये। वत्सपालन संचारिणे। धेनुका सुरभंजनाय। तृणीकृततृणावर्ताय ॥३०॥

यमलार्जुन भंजनाय। उत्तालतालभेत्रे। तमालश्यामलाकृतये। गोपगोपीश्वराय। योगिने सूर्य कोटिसमप्रभाय। रामाय। इलापतये। पराय। ज्योतिषे ॥४०॥

याद्ववेन्द्राय। यदूद्वयाय। वनमालिने। पीतवाससे। पारिजातापहारकाय। गोवर्द्धनधर्त्रे। गोपालकाय। सर्वपालकाय। जयाय। धुरजनाय ॥५०॥

कामजनकाय। कंजलोचनाय। मधुहंर्त्रे।

मथुरानाथाय। द्वारकानाथाय। बलिने वृन्दावनान्त संचारिणे। तुलसीदाम षणाय स्यमंतकमणेर्हर्त्रे। नरनारायणात्काय ॥६०॥

कुब्जाकृष्णाम्बधराय। मायिने। परमपुरुषाय। मुष्टिकासूर चाणूर महायुद्ध विशारदाय। संसारवैरिणे। कंसारये। मुरारये। नरकान्तकाय। अनादये। ब्रह्मचारिणे॥७०॥

कृष्णाव्यसनकर्षेकाय। शिशुपालशिरश्छेत्रे दुर्योधनकुलान्तकृते। विदुराक्रूरवरदाय। विश्वरूपप्रदर्शकाय। सत्यवाचे। सत्यसंकल्पाय। सत्यभामारताय। नयिने। सुभद्रापूर्वजाय॥८०॥

विष्णवे। भीष्ममुक्तिप्रदाय। जगद्गुरवे॥ जगन्नाथाय। वेणुवाद्यविशा दाय। वृषभासुर विध्वंसिने। बाणासुरबलान्तकृते। युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे। बर्हिबर्हावतंसकाय। पार्थसारथये॥९०॥

अव्यवत्ताय। गीतामृतमहोदधये। कालियफणि-माणिक्य रंजितश्रीदांबुजाय। दामोदराय। यज्ञभोकत्रे दानवेन्द्रविनाशनाय। नारायणाय। दराय ब्रह्मणे। पन्नगाशनवाहनाय॥१००॥

जलक्रीड़ासमासक्त गोपीवस्त्रा पहारकाय। पुण्यश्लोकाय तीर्थकराय। वेदविद्यादयानिधये। सर्वतीर्थात्मप्रकाशाय। सर्वग्रहरूपिणे। परात्पराय। श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः ॥१०८॥ इति अष्टोत्तरशतनामपूजा॥

अथ होमकल्पः

सर्व गणपत्यादि पूजनाननतर योगिनी क्षेत्रपाल वास्तु पूजन करे।

फिर मण्डप के बाहर पूर्व विधि से सांगोपांग मण्डप पूजा करके सर्वतोभद्रपर मण्डल देवता तथा प्रधान पूजा, ब्रह्मणार्चन करे

पीछ कुशकांडिका अग्न्याधान करे। कुशकांडिका के अनन्तर ब्रह्मणा अन्वारब्ध करके मृगीमुद्रा से स्थापित स्रुवे से आज्य लेकर

प्रजापये स्वाहा (प्रजापति का मन में ध्यान करके)। आहुति दे और ''इदं प्रजापतये न मम' से त्याग करे।

द्विजेतरों के लिये ''ॐ'' की जगह ''ह्रीं'' बोले

ॐ (ह्रीं) इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।

ॐ (ह्रीं) अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ (ह्रीं) सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

इस प्रकार आधार और आज्य भागों का पूर्वोक्त रीति से होम करके अग्नि पूजा करे। यथा--

"ॐ (ह्रीं) नमो भगवते वासुदेवाय" इस मूल मंत्र से गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जनि, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, व्रतबंध, गोदान, विवाह (इन दस संस्कारों के लिये १२८ आहुतियें उपर्युक्त मूलमंत्र से देवे।

पश्चात यजमान द्रव्य त्याग करें। वह इस प्रकार कि संकल्प में कुशयव जल लेकर यों बोलकर त्याग करें।

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्टांऽमुकतिथौः अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाहं यथा कालं प्रत्याहुतित्यागस्य कर्तुमुशक्यत्वात् सर्वमेव हविजर्मिं देवताश्च मनसा ध्यात्वाइदं सम्पादितं समिच्चरुतिलाज्यादि हविर्द्रव्य या वक्ष्य-माण देवताः, तस्यै तस्यै देवतायै नमः।

पश्चात् सर्वदेव प्रतिष्ठा पद्धति के अनुसार--

नवग्रह होम तथा अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, गणपत्यादि पञ्चलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल तथा दशदिकपाल देवताओं के निर्मित्त होम करें।

पश्चात् २४ वास्तुमण्डल देवताओं के लिये होम करें। यह पहले आ गया हैं।

वास्तुदेवताहोम (सिद्धोदन अर्थात् मधु व आज्य, यव कृष्णतिल तथा दूध वाले वृक्षों की समिधाओं से पृथक्-पृथक वा १०८ आहुतियें निम्नोक्त मूल मंत्र से देवें--

नमस्ते वास्तु पुरुष भूशय्याभिरत प्रभो।

मद्गृहे धनधान्यादि-समृद्धिं कुरु सर्वदा॥

वास्तोष्पतये नमः स्वाहा) इस मंत्र से चार बार बिल्वफल होमे। पश्चात् "ध्रुवाय स्वाहा" इस मंत्र से एक आहुति बिल्वफल की देवे। फिर 'ध्रुवाय स्वाहा" मंत्र से चरू तिलज्यादि की घृत सहित १०८ आहुतियें देवें।

पश्चात् ब्रह्मादिदेवता

सर्वतोभद्रमंडलस्य देवो के लिये

हवन

ॐ (ह्रीं) ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम। (एवं सर्वत्र सोमाय० ईशानाय० इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय० वायये० अष्टवसुभ्यः० एकादश रुद्रेभ्यः० द्वादशादित्येभ्यः० अश्विभ्या० विश्वेभ्यो देवेभ्यः० सप्तयक्षेभ्यः नवनागकुलेभ्यः गन्धर्वाप्सरोभ्याम्०। स्कंदाय०। नन्दीश्वराय० शूलमहाकालाभ्याम्। दक्षादिसप्तगणेभ्यः० दुर्गायै० विष्णवे० स्वधायै० मृत्युरोगाभ्याम्०। गणपतये० अद्भ्यः० मरुद्भ्यः० पृथिव्यै० गंगादिनदीभ्यः० सप्तसागरेभ्यः० मेरवे० गदायै० त्रिशूलाय० वज्राय० शक्तये० दण्डाय खड्गाय० पाशाय० अंकुशाय० गोतमाय० भारद्वाजाय० विश्वामित्राय० कश्यपाय० जमदग्नये० वशिष्ठाय० अत्रये० अरुन्धत्यै० ऐन्द्रयै० कौमार्यै० ब्राह्मयै वाराह्यै० चामुण्डायै० वैष्णव्य० माहेश्वर्यै० वैनायिक्यै० स्वाहा।५६।

अथ पीठदेवता होमः

ॐ (ह्रीं) परदेवतायै नमः स्वाहा इदं परदेवतायै न मम (एवं सर्वत्र) गुरुभ्यः० सर्वदेवताभ्यः० सर्वगुरुभ्य० गरुड़ाय। वेदव्यासाय। दुर्गायै। सरस्वत्यै। यमाय। वायवे। शिवाय। इन्द्राय। निर्ऋतये: अज्ञानाधिपतये। दुर्गायै। कामाय। रुद्राय। पुरुषाय। शक्तये। वायुकूर्माय। अनन्ताय। पृथिव्यै। क्षीरसागराय। स्वेतद्वीपाय। दिव्यरत्नात्मक महामंडपाय। पद्माय। नारायणाय। विष्वणे। नारसिंहाय। श्रियै। भूम्यै। तमाभिमानिन्यै। दुर्गायै। आत्मने। परमात्मने। ज्ञानात्मने। विमलायै। उत्कषिण्यै। ज्ञानायै क्रियायै। योगायै। प्रह्व्यै। सत्यायै। ईशानयै। अमुग्रहाये स्वाहा॥ (४५ आहुतियां)

अथ प्रधान होमः

जप का दशाश होम शमित्तिलाज्य चरु या पायस से करे।

पश्चात् "सहस्त्रशीर्षा पुरुषः" इत्यादि पुरुष सूक्त के १६ मंत्रों से होम करें। यदि जबानी बोलने में अटके तो २४-२५ पृष्ठ में देखें।

अथवा

उपर्युक्त संख्यानुसार इस मन्त्र से होम करे।

ॐ ("ह्रीं) नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा"

इसके पश्चात् आथर्वणदेवता होम--

ॐ (ह्रीं) श्रीनारायणाय नमः (स्वाहा) इदं नारायणाय न मम। (एवं सर्वत्र) लक्ष्म्यै। कृष्णोल्काय। महोल्काय। वीरोल्काय। द्युल्काय। सहस्रोल्काय। वासुदेवाय। संकर्षणाय। प्रद्युम्नाय। अनिरुद्धाय। मायाये। जयायै। कृत्यै। शान्तयै। केशवाय। नारायणाय। माध्वाय। गोविंदाय। विष्णवे। मधुसूदनाय। त्रिविक्रमाय। वामानाय। श्रीधराय। हृषिकेशाय। पद्मनाभाय। दामोदराय। मत्स्याय। कूर्माय। वराहाय। नारसिंहाय। वामनाय। भार्गवाय। राघवाय। कृष्णाय। बुद्धाय। कल्किने। अनन्ताय। विश्वरूपाय। ब्रह्मणे। वायवे। इशानाय। वारुण्यै। गायत्र्यै। भारत्यै। गिरजायै। गरुड़ायै। सौपर्ण्यै। इन्द्राय। अग्नये। यमाय। निर्ऋतये। वरुणाय। वायवे। सोमाय। ईशानाय। ब्रह्मणे। अनन्ताय। वज्रनाभाय। हरीश्वराय। गंगातनयाय। शंखनिधीश्वराय। जयाय। विजयाय। भद्राय। सुभद्राय। धात्रे। विधात्रे। अमृतेश्वराय। विरूपाक्षाय स्वाहा।। ७० (आहुतियां)

अधिक दिन का यज्ञ हो तो कभी विष्णु सहस्त्रनाम से होम करें हम वह भी परिशिष्ट में छपा रहे हैं। अलग से मंगवाने का पता:- श्री सरस्वती प्रकाशन सैन्ट्रल बैंक पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

अथ व्याहृतिहोम:

संकल्प--अद्येत्यादि समवग्रहमख श्रीविष्णुयागाख्ये कर्मणि न्यूनातिरिक्त-- दोष --परिहारार्थं अष्टोत्तरशत

संख्याया तिलद्रव्येण व्याहृतिहोमं करष्ये। ऐसा संकल्प करके--

"अग्निवायुसूर्येभ्यः स्वाहा" इति मंत्रेण होमं कुर्यात्।

विशेषहोमः

यवं---ब्रह्मणे नमः (स्वाहा)

द्राक्षा--सूर्याय स्वाहा। इक्षुं चन्द्रमसे। पूगीफलं भौमाये। नागिं बुधाय। जंबीरं बृहस्पतये। बीजपूरकं---शुक्राय। उत्तितिं (खारक) शनैश्चराय। नारिकेलं (कोपरू) राहवे। दाडिमं केतवे। गुग्गुलं रूद्राय। सर्षपं (सरसों या काली मिरच) सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोकक्य स्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्- वैरिविनाशानं स्वाहा। पश्चात् वामपादेन भूमौ त्रिताडः नम्। उदकः स्पर्शः।

लक्ष्मीहवन

पश्चात् खीर या मावे से लक्ष्मीहवन सर्वदेव प्रतिष्ठा से करें। इसी प्रकार आगे भी उसी आधार से करें।

उत्तरपूजन, स्विस्टकृत् आहुति, नवाहुतिये किये बाद--

इन्द्रादि दिक्पाल, गणपति गौर्यादि के सदीप बलिदान करें।

पीछे नैर्ऋत्यकोण में वास्तुदेवताओं का सदीप पायसादि बलिदान, फिर नवग्रहों का योगिनियों का वायव्य में क्षेत्रपाल बलि कार्य करावें

पश्चात् मध्यपीठ के पास प्रधानदेवता की बलि देवें।

ब्रह्मादिषट्पंचाशद्देवान् सांगान् गंधाद्युपचारैः पूजयामि बोलकर "ब्रह्मादिमण्डलदेवेभ्यः सागेभ्यः सपरिवारेभ्य इमं

सदीपं पायसान्नदि-बलिं समर्पयामि। भो भो ब्रह्मादि मण्डल देवता दिशं रक्षतं बलिं भक्षतं मम (यजमानस्य) आयुः कर्तार क्षेमकर्तारः पुष्टि तुष्टि कर्तारो वरदा भवन्तु भवतः।

प्रधानपुरुषबलि

श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्ति जगद्बीज लक्ष्मीनारायणौ सांगों० गंधाद्युपचारै जयामि। श्रीसूर्य मण्डलान्तर्गत लक्ष्मीनारायणौ इमं सदीपं पायसादि समर्पयामि। भोः श्री सूर्यमण्डलान्तर्गतौ भवन्तौ लक्ष्मीनारायण दिशं रक्षतं बलिं भक्षतं मम (यजमानस्य) गृहे सर्वेषामायुः कर्त्तारौ तुष्टि पुष्टि कर्त्तारौ वरदो भवेतम्॥

अनेन बलिंदानेन श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिनौ श्रीलक्ष्मीनारायणों प्रीयेताम्॥

पीछे (भैरव) क्षेत्रपालबलि सर्वदेव प्रतिष्ठा देवेवत्।

पूर्णाहुति

पूर्वोक्त सर्वदेव प्रतिष्ठा के आधार पर करे।

पीछे रुद्र कलशे स्याग, यज्ञ विभूति ग्रहण, तथा अग्नि उप स्थान करे।

भववान की आरती

जय जगदीश हरे वा जो भी सबको याद हो, बोले।

पहले चरणों की ४, पीछे नाभि की २, मुख की १ या ३ बार पीछे समस्त अंगों की ७ बार आरती उतारे।

पश्चात् पुष्पान्जलि भी सर्वदेव प्रतिष्ठावत् करे।

विष्णुस्तुति--

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥ लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥१॥ आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्। वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्। बाली निग्रहणं समुद्र तरणं लङ्कापुरी दाहनम्। पश्चाद्रावण कुम्भकर्ण हननमेतद्धि रामायणम्॥२॥ आदौ देवकी देवगर्भ जननं गोपीगृहे वर्द्धनम्। मायापूतनजीवितापरहणं गोवर्द्धनोद्धारणम्। कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुन्तीसुता पालनम्। एतद्भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्॥३॥ कस्तुरी तिलकं ललाटपटले वक्षः स्थले कोस्तुभम् नासाग्रेवरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम्॥ सर्वाङ्गेहरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलीं। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणि॥४॥ फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतं सप्रियम। श्री वत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्॥ गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनु गो गोप संघावृतम्। गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥५॥ यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुवन्ति दिव्यैःस्त वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति

यं सामगा:।। ध्यानावस्थित तद्गतेम मनसा गायन्ति यं यागिनो। यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा: देवाय तस्मै नम:।।६।। आदौपाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनम्। द्यूतस्त्रोहरणं वने विचरणं मत्स्यालया वेधनम्।। लीलागोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्धनम्। पश्चाद्भिष्मसुयोधनादिहननं मेतन्महाभारतम्।।७।। श्रिय: पतिर्यज्ञ पति:, प्रजापतिर्धियां पतिर्लोकपतिर्धरापति:।। पतिर्गतिश्चान्धकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतां में भगवान् सतां पति:।।८।। मत्स्याश्वककछप नृसिंहवराह हंस-राजन्यवि प्रतिबुधेषु कृतावतार:।। त्वं पाहि नस्त्रिभुवनञ्च यथाधुनेश। भारं भुवो हरयदूत्तम वन्दनं ते।।९।। सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्ये।। सत्यस्य सत्यमृत सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरण प्रपन्ना:।।१०।। नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे।। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नम:।।११।। नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्वितीय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम:।।१२।। आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् सर्वदेव नमस्कार: केशवं प्रति मच्छतिं।।१३।। मूकं करोति वाचाल पंगुलंघयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दें परमानन्द माधवम्।।१४।। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्व मम देव देव।।१५।। पापोऽहं

पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भव।। पाहिं मा पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव।।१६।। कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।। नन्दगोपकुमाराय गोविन्दा नमो नमः ।।१७।। ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टहोहं। तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम्।। भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतम्। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।१८।। त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरे प्सितराज्यलक्ष्मीं। धर्मिष्ठ-तातवचसा यदगादरन्यम्।। मायामृगंदयितये प्सितमन्धावत्। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।१९।। अपराध सहस्त्र भाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे।। अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्करु।।२०।। एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेघाव भृथेन तुल्यः।। दशाश्वमेघो पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय।।२१।।

पीछे चार प्रदक्षिणा।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निर्षाङ्गणः।
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।
यानि कानि च पापानि जन्मजन्म कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

क्षमा-प्रार्थना।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया

देव परिपूर्ण तदस्तु में॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ (सर्वेभ्यो देवभ्यो नमः)॥

यहां पर सर्वदेवप्रतिष्ठा का शेष कार्य पूर्णपात्रदान संस्त्रवप्राशन, बर्हिहोम, ब्रह्मग्रंथिविमोक, संकल्प, यजमानाभिषेकादि सर्व कर्म करें।

चरणामृत-ग्रहण-विधि

बांये हाथ पर दोहरा वस्त्र रखकर दाहिना हाथ रखे पश्चात् चरणामृत लेकर पान करे। जमीन पर नहीं गिरने दे।

तुलसी-ग्रहण-विधि

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थ चान्द्रायण शताधिकम्॥

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाबाहो भक्तानामार्ति नाशनम्॥
सर्वपापहरं पादोदकं मेऽपि प्रदीयताम्॥
अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनम्॥
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

पश्चात् प्रसाद बांटे।

पश्चात् यज्ञान्तस्नान भी सर्वदेवप्रतिष्ठावत् करें और आचार्यादि को दक्षिणा दे एवं ब्राह्मण भोजन भी। पुस्तके वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता

:- श्री सरस्वती प्रकाशन. सैन्ट्रल बैक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर

शुभम्

शुभम्

विष्णुयागपरिशिष्टे

विष्णु सहस्त्रनामावलिः

ॐ कारः सर्वत्रादौ स्वाहा शब्दान्ते च ॥ ॐ विश्वस्मै स्वाहा० विष्णवे० वषट्काराय० भूतभव्दभवत्प्रभवे० भूतकृते० भूतभृते० भावाय० भूतात्मने० भूतभावनाय० पूत्तात्मने० परमात्मने० मुक्तानांपरमागतये० अव्याय० पुरुषाय० साक्षिणे० क्षेत्रज्ञाय० अक्षराय० योगाय० योगविदांनेत्रे० प्रधानपुरुषेश्वराय० नारसिंहवपुषे० श्रीमते० केशवाय० पुरुषोत्तमाय० सर्वस्मै० ।२५। शर्वाय० शिवाय० स्थाणवे० भूतादये० निधयेऽव्ययाय० संभवाय० भावनाय० भर्त्रे० प्रभवाय० प्रभवे० ईश्वराय० स्वयंभुवे० शंभवे० आदित्याय० पुष्कराक्षाय० महास्वनाय० अनादिनिधनाय० धात्रे० विधात्रे० धातुरूत्तमाय० अप्रमेयाय० हृषीकेशाय० पद्मनाभाय० अमरप्रभवे० विश्वकर्मणे ॥५०॥ मनवे० त्वष्ट्रे० स्थविष्ठाय० स्थविरायध्रुवाय० अग्राह्याय० शाश्वताय० कृष्णाय० लोहिताक्षाय० प्रदर्तनाय० प्रभूताय० त्रिककुब्धाम्ने० पवित्राय० मंगलायपरम्स्मै० ईशानाया० प्राणदाय० प्राणाय० ज्येष्ठाय० श्रेष्ठाय० प्रजापते० हिरण्यगर्भाय० भूगर्भाग० माधवाय० मधु सूदनाय० ईश्वराय० विक्रमिणे० ।७५। धन्विने० मेधाविने० विक्रमाय० क्रमाय० अनुत्तमाय० दुराधर्षाय० कृतज्ञाय० कृतये० आत्मवते०

सुरेशाय० शरणाय० शर्मण० विश्वतरेतसे० प्रजाभवाय० अह्ने० संवत्सराय० व्यालाय० प्रत्ययाय० सर्वदर्शनाय० अचाय० सर्वेश्वराय० सिद्धाय० सिद्धये० सर्वादये० अच्युताय।१००। वृषाकपये० अमेयात्मने० सर्वयोनिविनिः सृताय० विसवे० वसुमनसे० सत्याय० समात्मने० असंमिताय० समाय० अमोघाय० पुंडरीकाक्षाय० वृषकर्मणे० वृषाकृतये० रुद्राय० बहुशिरसे० बभ्रवे० विश्वयोनये० शुचिश्रवसे० अमृताय० शाश्वतस्थाणवे० वरारोहाय० महातपसे० सर्वगाय० सर्वविद्धानवे० विष्वक्सेनाय०।१२५। जनार्दनाय० वेदाय० वेदविदे० अव्यंगाय० वेदांगाय० वेदविदे० कवये० लोकाध्यक्षाय० सुराध्यक्षाय० धर्माध्यक्षाय० कृताऽकृत्याय० चतुरात्मने० चतुर्व्यूहाय० चतुर्दंष्ट्राय० चतुर्भुजाय० भ्राजिष्णवे० भोजनाय० भोक्त्रे० सहिष्णवे० जगदादिजाय० अनघाय० विनयाय० जेत्रे० विश्वयोनये० पुनर्वसवे।१५०। उपेंद्राय० वामनाय० प्रांशवे० अमोघाय० शुचये० ऊर्जिताय० अतीन्द्राय० संग्रहाय० सर्गाय० धृतात्मने० नियमाय० यमाय० वेद्याय० वैद्याय० सदायोगिने० वीरघ्ने० माधवाय० मधवे अतींन्द्रियाय० महामायाय० महोत्सायाय० महाबलाय० महाबुद्धये० महावीर्याय० महाशक्तये०।१७५। महाद्युतये० अनिर्देश्यवपुषे० श्रीमते० अमेयात्मने० महद्रिधृषे महेष्वासाय० महीभर्त्रे० श्रीनिवासाय० सतांगतये० अनिरुद्धाय० सुरानंदाय० गोविन्दाय० गोविन्दाम्पतये० मरीचये० दमनाय० हंसाय०

सुपर्णाय० भुजगोत्तमाय० हिरण्यनाभाय० सुतपसे० पद्मनाभाय० प्रजापतये० अमृत्यवे० सर्वदृशे० सिंहाय० ।२००। सघात्रे० संधिमते० स्थिराय० अजाय० दुर्मर्षणाय० शास्त्रे० विश्रुतात्मने० सुरारिघ्ने० गुरवे गुरुत्माय० धाम्ने० सत्या० सत्यपराक्रमाय० निमिषाय० अनिमिषाय० स्त्रग्विणे० वाचस्पतये० उदारधिये० अग्रण्ये० ग्रामण्ये० श्रीमते० न्यायाय० नेत्रे० समीरणाय० सहस्त्रमूर्ध्ने० विश्वात्मने० ।२२५। सहस्त्राक्षाय सहस्त्रपदे० आवर्तनाय० निवृत्तात्मने० संवृताय० सप्रमर्दनाय० अहः संवर्तकाय० वह्नये० अनिलाय० धरणीधराय० सुप्रसादाय० प्रसन्नात्मने० विश्वधृष, विश्वभुज० विभवे० सत्कर्त्रे० सत्कृताय० साधवे० जह्नवे० नारायणाय० नराय० असंख्येयाय० अप्रेमेयात्मने० विशिष्टाय० शिष्टकृते० ।२५०। शुचये० सिद्धार्थाय० सिद्धिसंकल्पाय० सिद्धिदाय० सिद्धिसरधनाय० वृषाहिणे० वृषभाय० विष्णवे० वृषपर्वणे० वृषोदराय० वर्धनाय० वर्धमानाय० विविक्ताय० श्रुतिसागराय० सुभुजाय० दूर्धराय० वाग्गिमने० महेन्द्राय० वसुदाय० वसवे० नैकरूपाय० वृहद्रूपाय० शिपिविष्टाय० प्रकाशनाय० ओजस्तेजोद्युतिधराय० ।२७५। प्रकाशात्मने० प्रतापनाय० ऋद्धाय० स्पष्टाक्षराय० मंत्राय० चंद्रांशवे० भास्करद्युतये० अमृतांशद्भवाय० भानवे० शशिबिंदवे० सुरेश्वराय० औषधाय० जगतः सेतवे० सतधर्मपराक्रमाय०

भूतभव्यन्नाथाय० पावनाय० पावनाय० अनलाय० कामघ्ने० कामकृते० कान्ताय० कामाय० कामप्रदाय० प्रभवे युगादिकृते०।३००। युगावर्ताय० नैकमायाय० महाशनाय० अदृश्याय० अव्यक्तरूपाय० सहस्त्रजिते० अनंतजिते० इष्टाय० विशिष्टाय० शिष्टेष्टाय० शिखंडिने० नहुषाय० वृषाय० क्रोधघ्ने० क्रोधकृत्कर्त्रे० विश्ववाहवे० महीधराय० अच्युताय० प्रथिताय० प्राणाय० प्राणदाय० वासवानुजाय० अपाँनिधये० अधिष्ठानाय० अप्रमत्ताय०।३२५। प्रतिष्ठिताय० स्कंदाय० स्कंदधराय० धुर्याय० वरदाय० वायुवाहनाय० वासुदेवाय० वृहद्भानवे० आदिदेवाय० पुरंदराय० अशेकाय० तारणाय० तराय० शूराय० शौरये० जनेश्वराय० अनूकूलाय० शतावर्ताय० पद्मिने० पद्मनिभेक्षणाय० पद्मनाभाय० अरविंदाक्षाय० पद्मगर्भाय० शरीरभृते० महर्धये०।३५०। ऋद्धाय० वृद्धात्मने० महाक्षाय० गरुडध्वजाय० अतुलाय० शरभाय० भीमाय० समयज्ञाय० हविर्हरये० सर्वलक्षणलक्षण्याय० लक्ष्मीवते० समितिंजयाय० विक्षराय० राहिताय० मार्गाय० हेतवे० दामोदराय० सहाय महीधराय० महाभागाय० वेगवते० अमिताशनाय० उद्भवाय० क्षौभणाय० देवाय०।३७५। श्रीगर्भाय० परमेश्वराय० करणाय० कारणाय० कर्त्रे० विकर्त्रे० गहनाय० गुहाय० व्यवसायाय० वय्वस्थानाय० संस्थानाय० स्थानदाय० ध्रुवाय० परर्द्धये० परम स्पष्टाय० तुष्टाय० पुष्टाय० शुभेक्षणाय० रामाय० विरामाय० विरजाय० मार्गाय० नेयाय०

नयाय० अनयाय० ।४००। वीराय० शक्तिमतांश्रेष्ठाय० धर्माय० धर्मविदुत्तमाय० वैकुंठाय० पुरुषाय० प्राणाय० प्राणदाय० प्रणवाय० पृथवे० हिरण्यगर्भाय० शत्रुघ्नाय० व्याप्ताय० वायवे० अधोक्षजाय० ऋतवे० सुदर्शनाय० कालाय० परमेष्ठिने० परिग्रहाय० उग्राय० संवत्सराय० दक्षाय० विश्रामाय० विश्वदक्षिणाय० ।४२५। विस्ताराय० स्थावरस्थाणवे० प्रमाणाय० वीजायाव्यहाय० अर्थाय० अनर्थाय० महाकोशाय० महाभौगाय० महाधनाय० अनिर्विण्णाय० स्थविष्ठाय० अभुवे० धर्मयूपाय महामखाय० नक्षत्रनेमये० नक्षत्रिणे० क्षमाय० क्षामाय० समीहनाय० यज्ञाय० ईज्याय० महेज्याय० क्रतवे० सत्राय० सतांगतये ।४५०। सर्वदर्शिने० विमुक्तात्मने० सर्वज्ञाय० ज्ञानायोत्तमाय० सुब्रताय० सुमुखाय० सूक्ष्माय० सुधोषाय० सुखदाय० सुहृदे० मनोहराय० जितक्रोधाय० बीरवाहवे. विदारणाय० स्वापनाय० स्ववशाय० व्यापिने० नैकात्मने. नैककर्मकृते० वत्सराय० वत्सलाय० वत्सिने. रत्नगर्भाय० धमेश्वराय० धर्मगुपे ।४७५। धर्मकृते० धार्मिणे० सते० असते० क्षराय० अक्षराय० अविज्ञात्रे० सहस्त्रांशवे० विधात्रे कृतलक्षणाय० गभस्तिनेमये० सत्वस्थाय० सिंहाय० भूतमहेश्वराय० आदिदेवा० महादेवाय० देवेशाय० देपभृद्मुरवे० उत्तराय० गोपतये० गोप्त्रे० ज्ञानगम्याय० पुरातनाय० शरीरभूतभृते० भोक्त्रे ।५००। कपीन्द्राय०

भूरिदक्षिणाय० सो० मपाय० अमृतपाय० सोमाय० पुरुजिते० पुरुषोत्तमाय० विनयाय० जयाय० सत्यसंधाय० दाशार्हाय० सात्वतांपतये० जीवाय० विनयितासाक्षिणे० मुकुंदाय० अमित० विक्रमाय अम्भोनिधये० अनन्तात्मने० महोदधिशयाय० अतकाय० अजाय० महार्हाय० स्वाभाव्याय० जितामित्राय० प्रमोदनाय० ।५२५। आनंदाय. नंदनाय० नन्दाय० सत्यधर्मणे० त्रिविक्रमाय० महर्षिकपिलाचार्याय० कृतज्ञाय० मेदिनीपतये० त्रिपदाय० त्रिदशाध्याक्षाय० महाशृंगाय० कृतांतकृते० महावराहाय० गोविंदाय० सुषेणाय० कनकांगदिनेगुह्याय० गभीराय० गहनाय० गुप्ताय० चक्रगदाधराय० वेदसे० स्वागांय० अजितायकृष्णाय० ।५५०। दृढ़ाय० संकर्षणाय० अच्युताय० वरुणाय० वारुणाय० वृक्षाय० पुष्पराक्षाय० महामनसे० भगवते० भगघ्ने आनंदिने० वनमालिने० हलायुधाय० आदित्याय० ज्योतिरादित्याय० सहिष्णवे० गतिसतत्तमाय० सुधन्वने० खंडपरशवे० दारुणाय० द्रविणप्रदाय० दिवस्पृशे० सर्वदृग्व्यासाय० वाचस्पतये० अयोनिजाय० ।५७५। त्रिसाम्नै० सामगाय० सामाय० निर्वाणाय० भेषजाय० भिषजे० संन्यासकृते० शमाय० शाँताय० निष्ठाशान्तिपरायणाय० शुभांगाय० शांतिदाय० स्त्रष्ट्रे० कुमुदाय० कुमलेशाय० गोहिताय० गोपतये० गौप्त्रे० वृषभाक्षाय० वृष० प्रियाय० अनिवर्तिने० निवृत्तात्मने०

संक्षेप्त्रे० क्षेमकृते० शिवाय०।६००। श्री वत्सवक्षसे० श्रावासाय० श्रीपतये० श्रीमतांवराय० श्रीदाय० श्रीशाय० श्रीनिवासाय० श्रीनिधये० श्रीविभावनाय० श्रीधराह० श्रीकराय० श्रेयसे० श्रीमते लोकत्रयायश्रयाय० स्वक्षाय० स्वगाय० शतानंदाय० नंदिने० ज्यातिर्गणेश्वराय० विजितात्मने० विधेयात्मने० सत्कीर्तये० छिन्नसंशयाय० उदीर्णाय० सर्वतश्चक्षुषे०।६२५। अनशिय० शाश्वतस्थिराय० भूशयाय० भूषणाय० भूतये० विशोकाय० शोकनाशनाय० अर्चिंष्मते० अर्चिताय० कुभाय० विशुद्धात्मने० विशोधनाय० अनिरुद्धा० अप्रतिरथाय० प्रद्युम्नाय० अमितविक्रमाय० कालनेमिघ्ने० वीराय० शोरये० शूरजनेश्वराय त्रिलोकात्मने० त्रिलोकेशाय० केशवाय० केशिघ्ने० हरये०।६५०। कामदेवाय० कामपालाय० कामिने० कांताय० कृतागमाय० अनिर्देश्यवपुषे० विष्णवे० वीरीय० अनंताय० धनंजयाय० ब्रह्मण्याय० ब्रह्मकृते० ब्राह्मणे० ब्रह्मणे० ब्रह्मविविर्धनाय ब्रह्मविदे० ब्राह्मणाय० ब्रह्मिणे० ब्रह्मज्ञाय० ब्राह्मणप्रियाय० महाक्रमाय० महाकर्णाणे० महातेजसे० महोरगाय० महाक्रतवे।६७५। महायज्वने० महायज्ञाय० महाहविषे० स्तव्याय० स्तवत्रियाय० स्त्रोत्राय० स्तुतये० स्तोत्रे० रणप्रियाय० पूर्णाय० पूरयित्रे० पुण्याय० पुण्यकीर्तये० अनामयाय० मनोजवाय० तीर्थकराय० वसुरेतसे० वसुप्रदाय० वासुप्रदाय० वासुदेवाय० वसवे० वसुमनसे० हविषे०

सद्गतये० सत्कृतये० ।७००। सत्तायै० सद्भूतये० सत्परायणाय० शूरसेनाय० यदुश्रेष्ठाय० सन्निवासाय० सुयामुसाय० भूतावासाय० वासुदेवाय० सर्वासुनिलाय० अनलाय० दर्पघ्ने० दर्पदाय० हत्ताय० दुर्धराय० अपराजिताय० विश्वमूर्तये० महामूर्तये० दीप्तमूर्तये० अमूर्तिमते० अनेकमूर्तये० अव्यक्ताय० शतमूर्तये० शताननाय० एकाय० ।७२५। नैकाय० सवाय० काय० कस्मै० यस्मै० तस्मै० पदमनुत्तमाय० लोकबंधवे० लोकनाथाय० माधवाय० भक्तवत्सलाय० सुवर्णवर्णाय० हेमांगाय० वरांगाय० चंदनांगदिने० वीरघ्ने० विषमाय० शून्याय० धृताशिषे० अचलाय० चलाय० अमानिने० मानदाय० मान्याय० लोकस्वामिने० ।७५०। त्रिलोकधृषे० सुमेधसे० मेधजाय० धन्याय० सत्यमेधसे० धराधराय० तेजावृषाय० द्युतिधराय० सर्वशस्त्रभृताँवराय० प्रग्रहाय० निग्रहाय० व्यग्राय० नैकश्रृंगाय० गदाग्रजाय० चतुर्मूतये० चतुर्वाहवे० चतुर्युहाय० चतुर्गतये० चतुरात्मने० चतुर्भावाय० चतुर्वैदविदे० एकपदे० समावर्ताय० निवृत्तात्मने० दुर्जयाय० ।७७५। दुरतिक्रमाय० दुर्लभाय० दुर्गमाय० दुर्गाय० दुरावासाय० दुरारिघ्ने० शुभांगाय लोकसारंगाय० सुतांवे० तंतुवर्धनाय० इन्द्रकर्मणे० महाकर्मणे० कृतकर्मणे० कृतागमाय० उद्भवाय० सुंदराय० सुंदाय० रत्नाभाय: सुलोचनाय० अर्काय० वाजसनाय० श्रृंगिणे० जयंताय० सर्वविज्जियिने० सुवर्णबिंदवे ।८००। अक्षोभ्याय०

सर्ववागीश्वरेश्वराय० महाहृदाय० महागर्ताय० महाभूताय० महानिधये० कुमुदाय० कुंदराय० कुंदाय० पर्जन्याय० पावनाय० अनिलाय० अमुतांशाय० अमृतवपुषे० सर्वज्ञान० सर्वतोमुखाय० सुलभाय० सुव्रताय० सिद्धाय० शत्रुजिते० शत्रुतापनाय० न्यग्रोधाय० उदुंबराय० अश्वत्थाय० चाणूरांध्रनिशूदनाय० ।८२५। सहस्त्रार्चिषे० सप्तजिव्हाय० सप्तैधसे० सप्तवाहनाय० अमूर्तये० अनघाय० अर्चित्याय० भयकृते० भयनाशनाय० अणवे० वृहते० कुशाय० स्थूलाय० गुणभृते० निर्गुणाय० महते० अधृताय० स्वधृताय० स्वास्याय० प्राग्वंशाय० वंशवर्धनाय० भारभृते० कथिताय० योगिने० योगिशाय० ।८५०। सर्वकामदाय० आश्रमाय० श्रमणाय० क्षामाय० सुपर्णाय० वायुवाहनाय० धनुर्धराय० धनुर्वेदाय० दंडाय० दमयित्रे० दमाय० अपराजिताय० सर्वसहाय० नियंत्रे नियमाय० यमाय० सत्वते० सात्विकाय० सत्याय० सत्यधर्मपरायणाय० अभिप्रायाय० प्रियार्हाय० अर्हाय० प्रियकृत० प्रीतीवर्धनाय० ।८७५। विहायसगतये० ज्योतिषे० सुरुचये० हुतभुये० विभवे० रवये० विरोचनाय० सुर्याय० सवित्रे० रविलोचनाय० अनन्ताय० हुतभुजे० भोक्त्रे० सुखदाय० नैकजाय० अग्रजाय० अनिर्विण्णाय० सदमर्षिणे० लोकाधिष्ठानाय० अद्भुताय० सनान्नमः० सनातनतमाय० कपिलाय० कपये० अव्याय० ।९००। स्वस्तिदाय० स्वस्तिकृते० स्वस्तिने० स्वस्तिभुजे० स्वस्तिदक्षिणाय०

अरौद्राय० कुण्डलिने० चक्रिणे० विक्रमिणे० ऊर्जितशासनाय० शब्दातिगाय० शब्दासहाय० शिक्षिराय० शर्वरीकराय० अक्रूराय० पेशलाय० दक्षाय० दक्षिणाय० क्षमिणांवराय० विद्वत्तमाय० वीतभयाय० पुण्यश्रवणकीर्तनाय० उत्तारणाय० दुष्कृतिघ्ने० पुण्याय।९२५। दुःस्वप्ननाशनाय० वीरघ्ने० रक्षणाय० संताय० जीवनाय० पर्यवस्थिताय० अनंतरूपाय० अनंतश्रिये० जितमन्यवे० भयापहाय० चतुरस्त्राय० गभीरात्मने० विदिशाया० व्या-दिशाय० दिशाय० अनादये० भुवे भुवोक्ष्म्यै० सुवीराय० रुचिरांगदाय० जननाय० जनजन्मादये० भीमाय० भीमपराक्रमाय० आधारनिलयाय०।९५०। धात्रे० पुष्पहासाय० प्रजागराय० ऊर्ध्वगाय० सत्पथाचाराय० प्राणदाय० प्रणवाय० प्रणाय० प्रमाणाय० प्राणनिलयाय० प्राणभृते० प्राणजीवनाय० तत्वाय० तत्वविदे० एकात्मने० जन्ममृत्युजरातिगाय. भूभुवस्वस्तरवे० ताराय० सवित्रे० प्रपितामहाय० यज्ञाय० यज्ञपतये० यज्वने० यज्ञांगाय०। यज्ञवाहनाय०।९७५। यज्ञभृते० यज्ञकृते० यज्ञिने० यज्ञभुजे यज्ञसाधनाय० यज्ञांतकृते० यज्ञगुह्याय० अन्नाय० अन्नादाय० आत्वयोनये० स्वयञ्जाताय० वैखानसरय० सापगायनाय० देवकीनंदनाय० स्त्रष्ट्रे० क्षितीशाय० पापनाशनाय० शंखभृते नंदकिने० चक्रिणे० शार्ङ्गधन्वने० गदाधराय० रथागपाणये० अक्षोभयाय० सर्वप्रहरणायुधाय० स्वाहा।१०००।। इति

श्रीविष्णुसहस्त्रनामहोम: ।।

ग्रन्थकर्तु परिचय

खर्वाराजगुरुविशुद्धधिषणों गीताप्रियो ज्यौतिषा-
ऽऽलंकार: शिंवलालनामविबुधो जात: परं धार्मिक:।
तप्सूनुर्धरणीधरो रचितवान् देवप्रतिष्ठामिमां-
विष्णोर्याग समन्वितां सुसरलां भव्येऽजमेरे नवाम ।।
यत्सुनु: सब पोस्टमास्टर पदस्थो देवकीनन्दन।
पौत्रो दत्तकरूपतोस्ति नियतो नाम्नाऽऽशुतोषस्तथा।
श्री मज्जैपुरवासिभि निजसुत: श्रीसूर्यनारायणै-
दत्तोऽतिकृपया, वयं नहि गुणान् विस्मर्तुमेषां क्षमा:।।
प्रश्नज्योतिषकर्मकाण्डविष्यग्रन्थानृजूनूसंव्यधान्।
भूयश्चैवमुपासना दिविसिदां स्तोत्राण्यकार्षीच्च य:।
सोयं धीरधुरन्धरादिपदभाक् साहित्यशास्त्री कवि
रासोपाधरणीधरो रचितवान् देवप्रतिष्ठामिमाम् ।।

भावार्थ

अजमेर प्रान्त में खरवा ठिकाणे के राजगुरु विशुद्धमति प्रतिदिन गीता-स्वाध्यायी, ज्योतिषालंकार श्री शिवलालजी नामक धार्मिक विद्वान हुये। उनके पुत्र धरणीधर शर्मा ने सुन्दर अजमेर नगर में विष्णुयाग समंवित इस सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा की रचना की है।।१।।

जिसका पुत्र देवकीनन्दन शर्मा सब पोस्ट मास्टर पदस्थित है। उसके लिये दत्तक रूप में आशुतोष बालक को रखा है याने गोद लिया है। जयपुर नगर के सूर्यनारायणजी आसोपा ने अपने पुत्रों में से यह एक पुत्र

कृपा करके हमें दिया है। अतः हम उनके उपकारों को भूल नहीं सकेंगे ॥२॥

जिसने प्रश्न ज्योतिष और कर्मकाण्ड सरल ग्रन्थों का निर्माण किया। इसी प्रकार देवताओं की सरल उपसना पुस्तकें तथा स्तोत्र भी बनाये० उस धीर धुरन्धर पदधारी साहित्य शास्त्री धरणीधर शर्मा ने इस सरल सर्वदेव प्रतिष्ठा की रचना की है।

--प्रकाशक

गच्छतः स्खलनं वापि भवत्येव प्रमादत।
हसन्तु दुर्जनास्तत्र समादधतु सज्जना॥

शुभं भवतु

ज्योतिष
व
कर्मकाण्ड
की पुस्तकें

ताम्बे के
यंत्र व
पूजा-पाठ
की पुस्तके

ISBN 819042103-4
9 788190 421034

सर्व देव प्रतिष्ठा